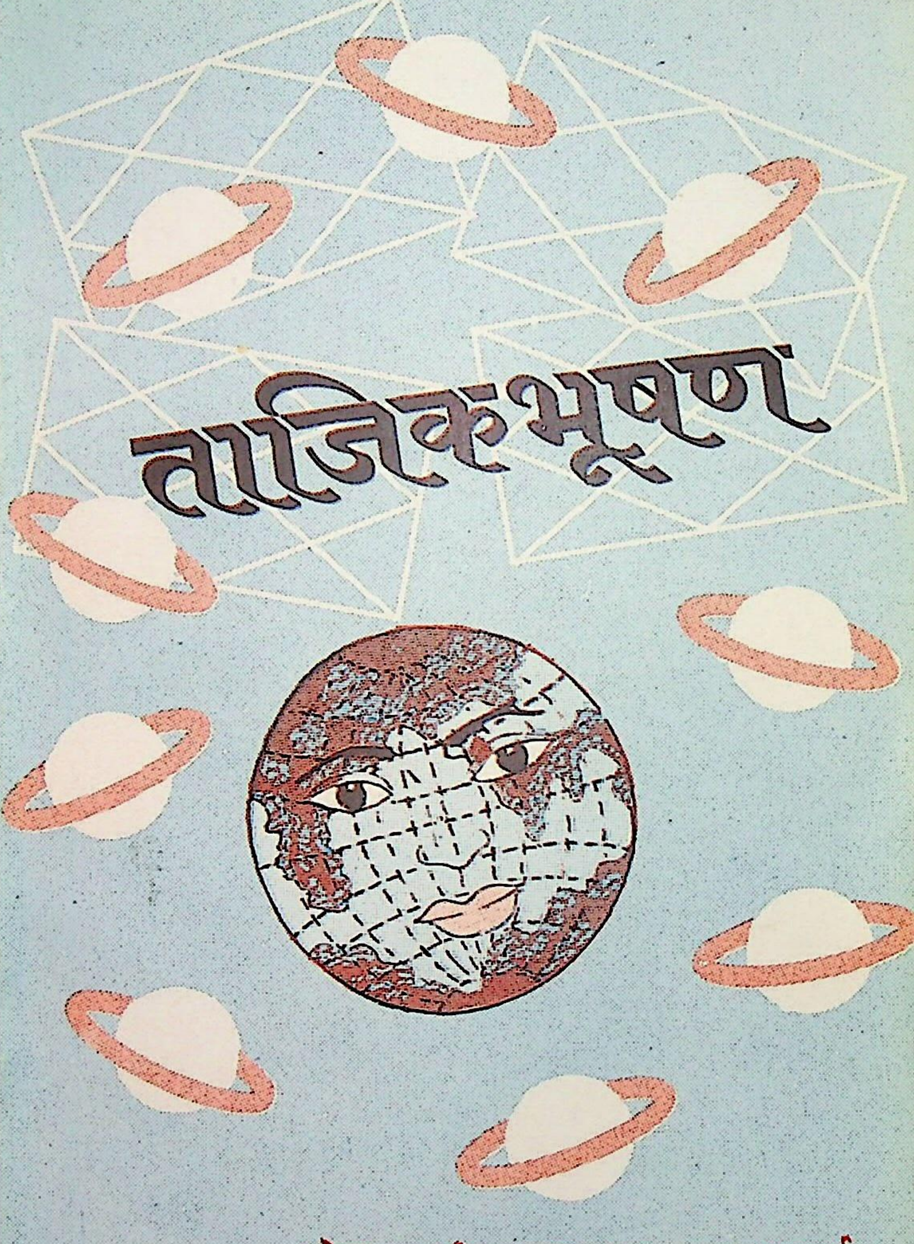
ताजिकभूषण



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

॥ श्री: ॥

अथ

ताजिकभूषण

विद्वद्वरश्रीगणेशदैवज्ञविरचित

....

अवधप्रदेशान्तर्गतबहरामघाटनिवासी सुकुलोपाह्व

पं. सीतारामशास्त्रिकृत

हिन्दीटीकासहितम्

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,

बंबई

संस्करण : अप्रेल २०१८, संवत् २०७५

मूल्य : ८० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

॥ श्रीः ॥

अथ ताजिकभूषणविषयानुक्रमणिका

ताजिकभूषणविषयानुक्रमणिका

इति ताजिकभूषणविषयानुक्रमणिका समाप्ती ॥

॥ श्रीः ॥

अथ

ताजिकभूषणम्

हिन्दी टीका सहितम्

भक्तिर्भक्तजनस्ययस्यभवतिप्रीतिप्रतीतिप्रदा
स्नेहोवंशपरम्परापरिगतस्सर्वाभिलाषप्रदः।
सोयंसर्वसुरासुरेन्द्रनिकराराध्योस्तुलम्बोदरो
धीरोद्गर्जनविघ्नतर्जनपटुःश्रेयस्करोनस्सदा॥१॥

श्रीरामचरणौनत्वा सीतारामस्तदात्मजः॥
करोतिभाषयाटीकां श्रीमत्ताजिकभूषणे॥१॥

"वह गणेशजी हमारा कल्याण करें" जिनकी भक्ति भक्तजनोंके हृदयमें प्रीतिप्रतीति दिलानेवाली होती है, जिनका वंशपरम्परानुगत स्नेह सम्पूर्ण अभिलाषाओंको देनेवाला होता है, जिनकी सब सुरासुर आराधना करते हैं और जो अपने धीर गर्जनसे विघ्नोंका नाश करनेमें तत्पर रहते हैं॥१॥

तूर्णंयत्करुणाकटाक्षकणिकासम्पूर्णसिद्ध्यै भवे-
त्तांवाणींप्रणिपत्यसत्यनिरतं श्रीढुण्ढिराजंगुरुम्।

सारन्ताजिकवारिधेर्निरवधेः प्रोद्धृत्यपीयूषवत्-
कुर्वेताजिकभूषणं गणपतेर्भक्तोगणेशस्सुधीः ॥२॥

जिसके कृपालेशसे भी सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होते हैं उस देवी सरस्वतीको और सत्यरत श्रीगुरु ढुण्ढिराजको प्रणाम करके और अपार ताजिकरूपसमुद्रसे अमृतके तुल्य सारको निकालकर मैं गणेश नामक विद्वान् इस ताजिकभूषण नामक ग्रन्थको बनाता हूं॥२॥

गर्गाद्यैर्यवनैश्चरोमकमुखैस्सत्यादिभिः कीर्त्तितं
शास्त्रं ताजिकसंज्ञकंनिरवधिंतद्वारिधिंदुस्तरम्।
एतत्ताजिकभूषणंनवतरातर्त्तुंसमर्था तरि-
र्व्यक्तार्थंविमलोक्तिवाक्यविलसत्कर्णानुकीर्णाभृशम् ॥३॥

गर्गादिमुनि और रोमकप्रभृति यवनों तथा सत्याचार्य आदिकोंने जो अनन्त और दुस्तर ताजिक संज्ञक शास्त्ररूप समुद्र निर्माण किये हैं उनको तरनेके निमित्त निर्मल उक्तिवाले वाक्यरूप शोभित कर्ण (दण्ड) हैं जिसमें और प्रकट है अर्थ जिसका ऐसी 'ताजिकभूषण' रूप अत्यन्त नवीन नौका मैं बनाता हूँ॥३॥

ब्रह्मद्वेषितुरुष्कसम्भवमिदं तार्तीयकं विद्यते
शास्त्रंयद्यपिसद्द्विजैरपितथाप्यध्येतुमर्हं भवेत्।

यस्माद्यत्सदसत्फलंनिगदितंसत्यंहिकिंपङ्कजे
शंकापङ्कभवाथवा फणिफणोत्पन्नेमणौदूषणम् ।।४।।

यद्यपि यह शास्त्र ब्रह्मद्वेषी यवनोंसे उत्पन्न हुया है तथापि इसमें जिसलिये सदसत्फलनिरूपण किया गया है, इस कारण द्विजोंकोभी पढना चाहिये क्योंकि, कमलमें पङ्कोद्भव होनेकी शंका और सर्पमणिमें सहवासका दोष कहीं देखा गया है? ।।४।।

धात्रा शास्त्रमकारियत्कृतयुगे तत्सर्वथानान्यथा
त्रेतायामपिबादरायणकृतं तच्चानृतं नाभवत्।
यद्गर्गोंविनिर्मितंकृतचमत्काराय तद्द्वापरे
कालेऽपिप्रबलेकलेरविकलंताज्त्तीयकोक्तं फलम् ।।५।।

सत्ययुगमें ब्रह्मकृत शास्त्रका प्रमाण, त्रेतामें बादरायणका शास्त्र, द्वापरमें गर्गका शास्त्र और कलियुगमें यह जो तार्तीयक यवननिर्मित शास्त्र प्रमाण है।।५।।

शाकेजन्मशकोनितेभवतियच्छेषङ्गताब्दव्रजो-
ऽधोधस्संगुणितश्शरैश्च युगलेनांगैर्युगैर्भाजितः।
लब्धंतज्जननोत्थवारघटिकाद्येनान्वितंसप्तभिः
पूर्वांके विहृतेत्रशेषकमितौवर्षप्रवेशो ध्रुवम् ।।६।।

वर्षप्रवेशोत्थघटीपलाढ्येकालेकिलस्पष्टतरस्सनूनम् ।।
भानुर्जनुर्भानुसमानएव सिद्धान्तरीत्यापरिसाधनीयः ।।७।।

जिस इष्टपर वर्षप्रवेश होवे उसी इष्टके अनुकूल जन्मइष्टके सूर्य सिद्धान्तरीतिसे स्पष्ट करना चाहिये ।।६।।७।।

जन्मकालनलिनीविलासिनानैवया तितुलनांकलासु चेत् ।।
वर्षकालनलिनीपतिस्तयोरन्तरङ्गविहृतंयुतोनितम् ।।८।।
कार्यंवर्षध्रुवेतस्मादसौस्पष्टः प्रजायते ।।
तत्कालसम्भवैः खेटैर्भावैश्चफलनिर्णयः ।।९।।

यदि वर्षकालके सूर्य और जन्मकालके सूर्य में कुछ परस्पर कलाओंमें भेद हो तो जिसमें बाकी निकलसके निकालना फिर उनके अन्तरको सूर्यकी गतिसे हतकरो फिर यदि सूर्य न्यून हो तो जोडो और यदि अधिक हो तो बाकी निकालो। ऐसा करनेसे जन्मतुल्य यह स्पष्ट हो जायेगा, क्योंकि तात्कालिक ग्रहोंसे फलनिर्णय होता है। ध्यान रहे कि सूर्यमें केवल कलाओंमें भेद रहेगा न कि अंशोंमें ।।८।।९।।

सम्प्राप्तवर्षप्रमितिं पतङ्गैर्भजेच्चसूर्यांकसमानभावे
सम्भूतिलग्नान्मुथहास्थितिः स्यात्तद्राशिगाऽब्देजननोदयांशैः ।।१०।।

प्राप्त वर्ष समूहको जन्मलग्नमें जोडकर १२ से भक्त करे जो शेष रहे जन्मलग्नसे उसी भावमें मुन्था होगा। यथा वर्तमान वर्ष २२ जन्मलग्न मीन और बाइसमें बाहरका भाग लेनेसे बाकी १० बचे, मीनसे गिना तो धनका मुन्था हुआ, अब वर्षलग्नसे ग्रह जिस भावमें पडे उसका फल कहना॥१०॥

वर्षेणभुंक्तेमुथहैकराशिं मासेनभागद्वितयं दलाढ्यम्॥
कलाश्चपंचैवदिनेनूनंतद्राशिनाथो मुथहाधिपःस्यात्॥११॥

एक वर्षमें मुन्था एक राशि भोगता है, एक मासमें ढाई २।३० अंश और १ दिनमें ५ कला मुन्थाका भोग होता है, जिस राशिमें मुन्था होवे उसी राशिका स्वामी मुन्थेश होता है॥११॥

तिग्मांशुशुक्रशनिशुक्रसुरेज्यचन्द्र-
शशांकिभौमशनिभौमसुरेज्यचन्द्राः॥
देवेज्यशीतकिरणेन्दुजभूमिपुत्र-
सूर्य्योशनश्शनिसितार्किकुजेज्यचन्द्राः॥१२॥
वर्षस्वामिविचारार्थं मेषात्रैराशिकेश्वराः।
दिवारात्रौ क्रमेणैते कल्पनीयाःप्रयत्नतः॥१३॥

सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र गुरु, चन्द्र, बुध, भौम, शनि, भौम, गुरु, चन्द्र यह १२ क्रमशः मेषादिलग्नोंसे दिवा वर्षप्रवेशमें त्रैराशिकेश्वर हैं और गुरु, चन्द्र, बुध, भौम, रवि, शुक्र, शनि, भौम, गुरु, चन्द्र यह १२ रात्रि, वर्षप्रवेशमें मेषादिक्रमसे त्रैराशिकेश्वर हैं॥ इनका प्रयोजन वर्षस्वामीके निर्णयमें पडता है॥१२॥१३॥

त्रैराशिकेश्वरचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मीन	लग्न
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	भौ.	शनि	भौ.	गुरु	चन्द्र	दिवा
गु.	चं.	बु.	भौ.	रवि	शु.	श.	श.	शनि	भौ.	गुरु	चन्द्र	रात्रौ.

लाभतृतीयं चरणेन पश्येद्ग्रहश्चतुर्थन्दशमन्दलेन॥
तथा त्रितुल्यैश्चरणैस्त्रिकोणं सम्पूर्णदृष्ट्यानिजसप्तमेच॥१४॥

प्रत्येक ग्रह लाभ ११ और तृतीय ३ स्थानको एक चरण दृष्टिसे अवलोकन करता है, चतुर्थ ४ दशमको अर्ध दृष्टिसे त्रिकोण ९।५ को त्रिचरण दृष्टिसे और निज १ सप्तम ७ को पूर्ण दृष्टिसे अवलोकन करता है॥१४॥

या पाददृष्टिस्सुखलाभदात्रीस्नेहप्रदाबुद्धिविवृद्धिकर्त्री।
नन्वर्द्धदृष्टिःस्वजनैर्विरोधंगुप्तारिभेदङ्कुरुतेविवादम्॥१५॥

जो पाददृष्टि है वह मुख और लाभ देनेवाली है, स्नेह देनेवाली है और बुद्धिवर्धक है, अर्द्धदृष्टि इष्ट मित्रोंसे विरोध उत्पन्न कराती है और गुप्त रूपसे शत्रुओंका भेद तथा विवाद करती है॥१५॥

त्रिकोणदृष्टिर्धनलाभसौख्यम्मित्रोन्नतिञ्चापिकरोति नित्यम्॥
सम्पूर्णदृष्टिस्सुतरामरिष्टंयुद्धंविवादञ्चरिपूद्गमञ्च॥१६॥

त्रिकोण ९।५ दृष्टि धनलाभ सौख्य मित्रवृद्धि करती है, और सम्पूर्ण दृष्टि युद्ध विवाद और शत्रुबृद्धि करती है॥१६॥

खलग्रहाश्चेत्खलदृष्टिसंस्थाश्शुभाश्चखेटाश्शुभदृष्टिसंस्थाः।
फलंयथोक्तं ददते तदानीं विलोमसंस्थाश्चतदर्द्धमेव॥१७॥

यदि खल ग्रह खलोंकी दृष्टिमें हों और शुभ ग्रह शुभोंकी दृष्टिमें हों तो यथोक्त फल होता है अन्यथा उसका आधा॥१७॥

द्रष्टाहीनतनुः खगो यदिभवेद्योमाधिको द्विर्हतः
षष्टिभ्यः परिशोधितः खचरदृग्रूपाधिकःकूनितः॥

तद्भागादलिताश्चवेदरहितो वेदाधीकोर्द्धान्वितो
हीनम्पञ्चयुगाच्छरर्क्षरहितं पञ्चाधिकोद्विर्हत ॥१८॥
षड्भोनो रसभाधिक: करहत: षष्टिच्युतश्चाऽधिक
स्सप्तोनस्वबलान्वितोगजगुरुर्व्यंष्टोर्द्धितश्चोनित: ॥
बाणाब्धेर्भवतोधिकोभवति युग्द्विघ्न:कलाद्यादश:
स्पष्टा: स्यु: खलुवर्षवेशसमये विद्याद्द्वगुत्थम्फलम् ॥१९॥

अथ हद्देशा:

वर्षाधीशादेशपूर्वं सगर्भं सर्ववक्तुन्नोविनावीर्यमत्र ॥
शक्यन्तस्मात्पुष्करागारसारंज्ञातुम्मार्गम्पञ्चवर्ग्या: प्रवच्मि ॥२०॥

वर्षमें वर्षाधीशका निर्णय और ग्रहोंके यथोचित बल विना फल नही कहे जासकते इससे बलज्ञानार्थ अब पञ्चवर्गीबल कहता हूं॥१८-२०॥

पञ्चाधिकारास्सदनोच्चहद्दास्त्रैराशिकञ्चापिमुशल्लहश्च ॥
गताधिकारस्सतुहीनसार: प्राप्ताधिकार: खचरस्ससार: ॥२१॥

आत्मस्थान, उच्च, हद्दा, त्रैराशिक और मुशल्लह (नवांश) ये पांच अधिकारी हैं जो अपने अधिकारमें ग्रह होता है वह बली कहाता है नहीं तो निर्बल॥२१॥

सिंह: कर्कोलिमेषौचयुग्मकन्येधनुस्तिमी ॥
तुलावृषौनक्रघटावागाराणिदिवाकरात् ॥२२॥

सिंह, कर्क, वृश्चिक, मेष, कन्या मिथुन, धन मीन, तुला वृष, मकर कुम्भ, सूर्यसे शनिपर्यन्त क्रमशः इन राशियोंके स्वामी हैं॥२२॥

राशिचक्रम्

सूर्य	चन्द्रमा	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
सिंह	कर्क	मेष	कन्या	मीन	वृष	मकर
०	०	वृश्चिक	मिथुन	धन	तुला	कुंभ

मेषोवृषोमृगःकन्याकर्कोमीनतुलेक्रमात्॥
ज्ञेयान्युच्चानितिग्मांशोस्ततोनीचन्तुसप्तमम्॥२३॥

सूर्यसे लेकर क्रमसे मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन और तुला ये उच्चस्थान हैं इनसे सप्तम स्थान नीच जानना॥२३॥

उच्च-नीचचक्रम्

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	ग्रह
मेष	वृष	म.	कन्या	कर्क	मीन	तुला	उच्च
तुला	वृश्चि.	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	नीच
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अंश

मेषे रसाङ्गाष्टशरेन्द्रियांशास्सुरेज्यशुक्रज्ञकुजार्कजानाम् ॥

वृषेऽष्टतर्काष्टशरत्रिसङ्ख्याश्शुक्रज्ञजीवार्कजभूमिजानाम् ॥२४॥

युग्मेरसाङ्गेन्द्रियसप्ततर्काज्ञशुक्रजीवावनिजार्कजानाम् ॥

कर्केऽद्रितर्काङ्गनगाब्धिभागाः कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥२५॥

सिंहेङ्गबाणाद्रिरसाङ्गभागाजीवासुरेज्यार्कजवित्कुजानाम् ॥

स्त्रियान्नगाङ्गाब्धिनगारिसंख्याज्ञकाव्यजीवावनिभूशनीनाम् ॥२६॥

धटेषडष्टाद्रिमुनिद्विसंख्याश्शानिज्ञवागीशसितासृजाञ्च ॥

अलौनगाब्धिद्विरदेषुतर्काभौमास्फुजिज्ज्ञेज्यपतङ्गजानाम् ॥२७॥

चापेऽर्कबाणाब्धिशराब्धितुल्याजीवास्फुजिज्ज्ञावनिजार्कजानाम् ॥

नक्रेऽद्रिसप्ताष्टयुगाब्धयःस्युर्बुधेज्यशुक्रार्कजमंगलानाम् ॥२८॥

कुम्भेऽद्रितर्काद्रिशरेन्द्रियांशाज्ञशुक्रदेवेज्यकुजार्कजानाम् ॥

मीनेर्कवेदाग्निनवद्विसंख्याश्शुक्रेज्यसौम्यारखरांशुजानाम् ॥२९॥

इन श्लोकोंका अर्थ चक्रसे अत्यन्त स्पष्ट है इसलिये टीका न लिख कर उसके स्थानमें चक्रही दिया जाता है॥२४-२९॥

हद्दाचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
वृ. ६	शु. ८	बु. ६	मं. ७	बृ. ६	बु. ७	श. ६	मं. ७	वृ. १२	बु. ७	बु. ७	शु. १२
शु. ६	बु. ६	शु. ८	शु. ६	शु. ५	शु. ६	बु. ८	शु. ४	शु. ५	बृ. ७	शु. ६	बृ. ४
बु. ८	बृ. ८	बृ. ५	बु. ६	श. ७	बृ. ४	बृ. ७	बु. ८	बु. ४	शु. ८	बृ. ७	बु. ३
भौ. ५	श. ५	भौ. ७	बृ. ७	बु. ६	मं. ७	शु. ७	बृ. ७	भौ. ५	श. ४	भौ. ५	भौ. ६
श. ५	मं. ३	श. ६	श. ८	म. ६	भौ. २	भौ. २	श. ६	श. ४	श. ५	श. २	श. २

मेषतोमीनपर्यन्तन्द्रेष्काणानामधीश्वराः ॥
भौमतोरवितश्शुक्राद्गणनीयायथाक्रमम् ॥३०॥

मेषसे मीन पर्यंत द्रेष्काणस्वामी क्रमशः मंगल, रवि और शुक्रसे गिननेपर होते हैं अर्थात् मेषसे मीनतक प्रथम द्रेष्काणके स्वामी मंगलसे ग्रहोंके बारम्बार गिनता जावे, द्वितीयके चन्द्रसे और तृतीयके शुक्रसे, राशिका दशमांश द्रेष्काण होता है जैसा चक्रमें स्पष्ट होगा ॥३०॥

द्रेष्काणचक्रम्

अं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	बृ.	ध.	म.	कु.	मी.
१०	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
२०	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.
३०	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.

रविज्यमन्दाः सितचन्द्रभौमाः शनिज्ञजीवाःकविभौमचन्द्राः ॥
मुशल्लहेशा अजतोमृगेन्द्राद्धनुर्द्धरादह्निनिशिद्वयोर्वा ॥३१॥

सूर्य, गुरु, शनि, शुक्र, चन्द्र, मंगल, शनि, बुध, गुरु और शुक्र, मंगल, चन्द्र ये मेषसे कर्कपर्यन्त मुशल्लहेश (नवमांशस्वामी) हैं फिर सिंहसे वृश्चिकपर्यन्त और धनुष्यसे मीनपर्यन्त जानना ॥३१॥

मुशल्लहचक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	बृ.	ध.	म.	कु.	मी.
वृ.	शु.	श.	शु.	र.	शु.	श.	शु.	र.	शु.	श.	शु.
शु.	चं.	बु.	मं.	बृ.	चं.	बु.	मं.	बृ.	चं.	बु.	म.
श.	मं.	बृ.	चं.	श.	मं.	बृ.	चं.	श.	मं.	बृ.	चं

गृहोच्चहद्दात्रिलवास्स्वकीयामुशल्लहश्चापिभवेत्स्वकीयः॥
त्रिंशच्चविंशत्तिथयोदिशश्चपञ्चक्रमाद्वीर्यमिदं ग्रहाणाम्॥३२॥

आत्मगृह उच्च आत्महद्दा द्रेष्काण और नवमांशमें ग्रहोंका बल क्रमसे ३०, २०, १५, १० और ५ अंशोंसे होता है॥३२॥

तदर्द्धकम्पञ्चकमत्रमैत्रञ्चेच्छात्रवञ्चास्यदलम्बलंस्यात्॥
औदासिकं शत्रुसुहृद्धलैक्येदलम्बलम्मौलमतानुसारम्॥३३॥

जिस स्थानमें जिस ग्रहका जितना बल होता है उसका अर्ध और पञ्चमांश मित्र और उसका अर्ध शत्रु और शत्रु मित्रके योगका अर्ध मौलमतके अनुसारसे सम बल कहाता है॥३३॥

आत्मगृह	हद्दा	द्रेष्काण	मुशल्लह	०
३०	१५	१०	५	स्व.
२२।३०	११।१५	७।३०	३।४५	मित्राणि
१५	७।३०	५	२।३०	समाः
७।३०	३।४५	२।३०	१।१५	शत्रवः

जन्मोदयाब्दोदयमुन्थहेशावर्षप्रवेशाः ॥
निशीन्दुभेशास्त्रिगृहेशएते वर्षाधिपत्येह्यधिकारिणः स्युः ॥३४॥

जन्मलग्नपति वर्षलग्नपति मुन्थेश दिवावर्षप्रवेशमें सूर्य लग्नपति और रात्रिमें चंद्रलग्नपति और त्रिराशिपति ये वर्षमें पञ्चाधिकारी कहलाते हैं॥३४॥

प्राप्ताधिकारग्रहपञ्चकेयोविलोकयेल्लग्नमनल्पदृष्ट्या ॥
बलोपपन्नःखचरस्सएव वर्षाधिनाथःपरिकल्पनीयः ॥३५॥

वर्षलग्नके समय इन उक्त पञ्चाधिकारियोंमेंसे जो ग्रह पूर्ण बलोपेत हो और लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखता हो तो वही वर्षपति होता है॥३५॥

समानदृक्कैस्समुदारसारो दृष्ट्याधिको वीर्यसमानतायाम् ॥
वर्षाधिपः स्यादधिकाधिकारोदृग्वीर्यसाम्येमुथहाधिनाथः ॥३६॥

यदि सबकी दृष्टि लग्नपर सम हो तो अधिक बली और यदि सम बल हो तो अधिक दृष्टिवाला इन दोनोंकी साम्यमें अधिकाधिकारवाला और सबकी समतामें मुन्थेश वर्षपति होता है॥३६॥

पश्येन्नकश्चिद्यदिवर्षलग्नन्तल्लग्नराशिर्जननेऽपियेन ॥
दृष्टोधिपस्स्यान्नचतत्रदृष्टस्तादेन्थिहेशोपिविचिन्तनीयः ॥३७॥

यदि किसीभी ग्रहकी दृष्टि न हो तो वह राशि जन्म लग्नमें यदि किसी एक पञ्चाधिकारीकी दृष्टिमें हो तो वह वर्षपति होगा नहीं तो फिरभी मुन्थेशही वर्षपति जानना॥३७॥

इति श्रीमत्ताजिकभूषणे वर्षेशानयनाऽध्याय: प्रथम:॥१॥

आयुष्येवास्वेद्विषिद्वादशेस्याद्वर्षाविशेमुंथहेशो नशस्त:॥
रंध्रस्थानस्वामिनायुक्तदृष्ट: पापिष्ठैश्चाप्यस्तगोव्यस्तगोवा॥१॥

यदि वर्षप्रवेशकालमें मुन्थेश एकादश, द्वितीय, षष्ठ और द्वादश इन स्थानोंमेंसे किसी एकमें स्थित हो तो शुभ नहीं होता और चाहे किसी स्थानमें वर्तमान होकर यदि सप्तम स्थानके स्वामीके साथ हो अथवा सप्तमेशकी दृष्टिमें हो अथवा पापग्रहयुक्त हो या उनकी दृष्टिमें हो अथवा अपनी राशिसे अस्त ७ स्थानमें हो अथवा वक्री हो तो भी शुभ नहीं॥१॥

भाग्येचलाभेसहजेचकेन्द्रेचेद्वर्षकालेमुथहाधिनाथ:॥
करोतिपुंसांविपुलंप्रतापं मैत्रन्नृपै: सम्मतिवर्द्धनंच॥२॥

यदि वर्षप्रवेशकालमें मुंथेश भाग्य ९ लाभ ११ सहज ३ केन्द्र १।४।७।१०। स्थानोंमें कहीं हो तो पुरुषके प्रतापको बढावे उत्तम बुद्धी दे और राजसंगम हो॥२॥

स्वस्वामिनातत्सुहृदाशुभेनबलोपपन्नेनयुतेक्षितावा।।
स्यान्मुंथहासर्वमनोरथाप्त्यै नराधिपालादपिगौरवार्थम्।।३।।

यदि मुंथेश अथवा उसका मित्र शुभ ग्रह और बली होकर मुंथाके साथ हो अथवा मुंथाको देखता हो तो वह मुंथा सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करनेवाली होती है और राजासे भी नाम प्राप्त कराती है।।३।।

सिंहीसूनोराननंभोग्यभागाः प्रोक्तम्पुच्छं केतुभुक्तांशकास्ते।।
वक्त्रेश्रेष्ठासम्प्रदिष्टेंथिहाब्देलांगूले सामानसासौख्यकर्त्री।।४।।

जिस नक्षत्रपर राहु हो उससे वक्रगत्या जो भोग्य नक्षत्र उनकी राहुमुख संज्ञा है और भुक्त नक्षत्रोंकी पुच्छ संज्ञा है, यदि वर्ष कालमें मुंथा राहु मुखमें पडे तो मान और सौभाग्य होवे, यदि पुच्छमें हो तो दुःख देती है।।४।।

अथ ग्रहयुक्तमुन्थाफलम्

नृविभुतोविभुतोत्थसुखान्वितः सुकृतमाकृतमानसमुन्नतिः।।
नियमनायमनामुथहायदा रवियुतावियुतारिगणोनरः।।५।।

यदि वर्षकालमें मुंथा सूर्ययुक्त हो तो मनुष्यको राजद्वारा ऐश्वर्य और सुखप्राप्ति हो लक्ष्मी और मानकी वृद्धि हो, शत्रुका नाश हो।।५।।

अविकृतोविकृतोज्झितसंगती रुचिरधीश्चिरधीस्तयान्वितः॥
विभवतोभवतोषयितेंथिहा भविभुनाविभुनाकृतगौरवः॥६॥

यदि मुन्था चन्द्रयुक्त हो तो शरीरसुख, सज्जनसमागम सुबुद्धि, ऐश्वर्य, संतोष, राजासे सन्मान यह सब पदार्थ प्राप्त होवे॥६॥

कुमतिनामतिनाशसृग्भुजं विनतयानमसापचयन्दिशेत्॥
सदनतोदनतोमुखमिन्थिहा कुसुमयुक्स्वजनास्वजनारुचिः॥७॥

यदि मुन्था मंगलयुक्त हो तो सुमतिनाश और कुमतिकी वृद्धि हो रक्तके विकारसे शरीरमें रोग हो द्रव्यनाश हो गृह और भोजनविषयक कष्ट हो अपने बन्धुजनमें अरुचि हो॥७॥

सुजनतोजनतोवदसत्कथारसमुदारमुदारमतिर्नरः
स्वसहितस्सहितश्चयदींथिहा ज्ञमिलितामिलितात्मजनोभवेत्॥८॥

यदि मुन्था बुधयुक्त हो तो सुजनलाभ कथाश्रवण, चित्तमें उत्साह, बन्धुवर्गमें प्रेम और द्रव्यप्राप्तिभी सन्मार्गसे हो॥८॥

सुरमणीरमणीयविलासभाक्तनयवान्नयमानसुखैर्युतः॥
सुकृतिभिः कृतिभिर्मुथहा यदा सधिषणाधिषणाभ्युदयान्वितः॥९॥

यदि मुन्था बृहस्पतियुक्त हो तो स्त्रीविलाससुख पुत्रसुख सद्बुद्धिकी वृद्धि, मान- सुख- सज्जनसमागम और सब प्रकारसे ऐश्वर्यवृद्धि हो॥९॥ यही फल शुक्रकाभी है॥

स्वकलित: कलितप्रभवोभवेदविभवोविभवोद्धतपूरुषात्॥
स्वसनतस्सनतश्च यदेन्थिहा शनियुतानियुतार्थदुराशय:॥१०॥
वरसभारसभागवनीपते रतिकलातिकलायसमन्वित:॥
सुजनताजनतापहरोनरस्तनुगतानुगता यदिमुन्थहा॥११॥

यदि मुन्था वर्षलग्नमें हो तो उत्तम सभाविलास, राजाके सकाशसे अर्थलाभ, कला चातुरी, मनुष्य समूहमें प्रतिष्ठा इत्यादि पदार्थ सब प्राप्त होवें और बन्धुवर्गमें सन्ताप शान्त करनेवाली हो॥११॥

मदबलादबलादिसुखोनर: सुकृतग: कृतगर्हितवारण:॥
अधिकताधिकतापकरोद्विषां सुसधनस्सधनास्थितयातया॥१२॥

यदि मुन्था धनभावमें हो तो मनुष्यको स्त्री सुख यश अनिष्टका नाश प्राप्त होवे शत्रुओंको अधिक ताप हो और धनसंचय हो॥१२॥

निजयशोजयशोभितनुर्नरः सुकृतकृत्कृतकृत्यतयोन्नतः॥
नययुतोऽययुतो मुथहा यदानुजगताजगताकृतवर्णनः॥१३॥

यदि मुन्था अनुज ३ भावमें हो तो यशकी वृद्धि हो, मनोरथ पूर्ण हो, हृदयमें नीतिका आवेश हो और मनुष्य समाजमें प्रतिष्ठा प्राप्त होवे॥१३॥

स्वधनसाधनसाहसदुःखितोभयमितोयमितोऽपगतरितः॥
नृपनयापनयादपिनोकथा रससुखस्सुखसंस्थितमुन्थहे॥१४॥

यदि सुख ४ स्थानमें मुन्था हो तो धन कमानेके साहससे दुःख पावे कुटुंबमें अप्रीति हो राजासे भय हो नीतिहानि हो और प्रतिष्ठाहानि हो॥१४॥

सुजनपूजनपूततनुर्निराकरणधीरणधीरतयाद्विषाम्॥
अधिनिराधिनिरामुथहा यदा तनयगानयगामितयान्वितः॥१५॥

यदि मुन्था तनय ५ भावमें हो तो सत्कर्म और शरीरकी पवित्रताको बढावै, शत्रुगणका अनादर हो, चित्तकी व्यथा दूर हो और राजसमूहमें मनुष्य आदर पावे॥१५॥

स्वसहितस्सहितस्थितवैरतोनुगतरोगतरोरिभयान्वितः॥
निजपतेर्जपतेपि महद्भयं परिगतारिगतामुथहायदा॥१६॥

यदि मुथहा शत्रु ६ भावमें हो तो सम्पूर्ण बन्धुवर्गमें

वैर उपजावे, रोग उत्पन्न करै, शत्रुका भय हो, सेवाकरनेपर भी राजासे भयही प्राप्त होवे॥१६॥

निपुरुष:पुरुषश्चवियोगितां प्रमदयामदयातरिमुन्थहे॥
धनयशोनयशोकरुजोलभेन्निजसमाजसमाक्रमनाशनम्॥१७॥

यदि मद ७ भवनमें मुन्था होवे तो पुरुष कुटुम्बसे अलग होकर स्त्रीसे भी वियोगको प्राप्त हो और धन, यश, नीतिका नाश और शोक रोगको भी प्राप्त होवे॥१७॥

व्यसनतस्सनत: कलहाकुल: स्वधनरोधनरोगयुतोनर:॥
अहिततोहिततोषविवर्जित: त्वशुभगोशुभगोयदिमुन्थहा॥१८॥

यदि मुन्था अशुभ ८ स्थानमें पडे तो पुरुषको नाना प्रकारके व्यसन प्राप्त होवें, युद्ध होवे, धनका नाश हो, रोगकी वृद्धि हो, कभी चित्त स्थिर न रहे और वह वर्ष अत्यन्त अशुभ हो॥१८॥

नृपकृतोपकृतोत्सवगर्वित: प्रचलताचलतातियशोन्वित:॥ स्वहित-
कृद्धितकृन्मनुजोभवेत्ससुकृतस्सुकृतस्थितयातया॥१९॥

यदि मुन्था सुकृत ९ स्थानमें हो तो राजासे सन्मान मिले, यशकी वृद्धि हो अपने बन्धुवर्ग हित

करैं और पुण्यकी वृद्धि हो॥१९॥

निजमनोजमनोरथगौरवन्ननुभवेनुभवेद्विभवैर्युत:।
कमलयामलयापियर्दीथिहा दशमगासुभगाद्भुतबुद्धिभाक्॥२०॥

यदि दशमस्थानमें मुन्था हो तो उस वर्षमें मनुष्यको अपने मनोरथकी पूर्तिका अनुभव हो ऐश्वर्य प्राप्त हो लक्ष्मीकी वृद्धि हो और बुद्धि शुभकर्मोंकी ओर लगे॥२०॥

सुधिषणोधिषणोपमताम्व्रजेत्तनुजतोनुजतो सुखंनर:॥
नृपसुखोपसुखोमुथहायदाहरिमतारमतात्मजनव्रज:॥२१॥

यदि मुन्था एकादश भावमें पडे तो बृहस्पतिके तुल्य बुद्धिकी वृद्धिहो पुत्र और अपने कुटुम्बके लोग सब प्रेम करें॥२१॥

धनविधानविधापरिवर्जितो हतनयस्तनयस्वजनासुख:।
मनुजपेनुजपेविरतिर्भवेव्द्ययमितीयमितायदिमुन्थहा॥२२॥

यदि मुन्था द्वादशस्थानमें पडे तो धन प्राप्त होनेका द्वार नष्ट होवे चित्तमें दुर्बुद्धि उत्पन्न हो पुत्र और कुटुम्बसे कष्ट प्राप्त होवै देवपूजादिकसे चित्त हटजावे॥२२॥

चेद्वर्षलग्नाच्छुभगोंथिहासाजनुस्तनोर्दुष्टफलप्रदात्री।

मिश्रम्फलंकालविदोवदन्ति न्यूनाधिकत्वन्तुबलानुमानात्॥२३॥

यदि वर्ष लग्नसे मुन्था शुभस्थानमें हो और जन्मलग्नसे अशुभ स्थानमें हो तो ज्योतिर्विद शुभाशुभ मिलितफल कहते हैं; परन्तु उसमें न्यूनाधिक्य मुन्थाके बलसे कहना॥२३॥

यन्मुन्थहायाः फलमुक्तमत्रशुभंविमिश्रन्त्वशुभंविशेषात्।
तत्कल्पनीयम्मुथहेशपाकेबलानुमानान्ननुबुद्धिमद्भिः॥२४॥

जो इस प्रकरणमें मुन्थाका फल शुभ, शुभाशुभ और अशुभ कहा गया उसकी न्यूनाधिक्य मुन्थेशके बलाबल विचारनेसे होती है, यथा-यदि मुन्था शुभस्थानमें है और उसका स्वामीभी बली है तो अत्यन्त शुभफल होगा ऐसेही न्यूनबलमें न्यून और सम बलमें सम यही रीति अशुभ और मिश्रित फलकी भी है॥२४॥

इती श्रीगणेशदैवज्ञरचिते ताजिकभूषणे मुन्थाफलाध्यायो द्वितीयः॥२॥

वर्षाधीशविनिर्णयस्समुदितः पूर्वंहिसम्यङ्मया
यद्यप्यत्रतथापिवर्षमखिलंकिं साधुवासाधुवा॥
इत्याख्यातुमशक्यमेवसुधियातस्मात्फलंयत्नतो
वक्ष्येहंशुभमध्यमाधमतमैर्वेदैर्मुनींद्रोदितैः॥१॥

यद्यपि इस ग्रंथमें वर्षाधीशका निर्णय भली भांति कहा गया है तो भी यह कहना पंडितको दुस्तर है कि वर्ष शुभ वा अशुभ है इस हेतु मैं यत्नपूर्वक प्राचीन मुनियोंके मतोंको विचार कर शुभ मध्यम और अशुभ फलोंका वर्णन करता हूं॥१॥

वर्षलग्नेशवर्षेशमुन्थेशवीर्यत:॥
सकलं सफलं वर्षन्तत्फलन्तद्दशागमे॥२॥

वर्षलग्नस्वामी और वर्षपति मुन्था और मुन्थेशके बलसे सम्पूर्ण वर्ष फलयुक्त होता है और व अपना फल अपनी दशामें पृथक् २ करते हैं॥२॥

वर्षाधीशोनिधनसदनारातिरिष्फप्रयात
श्चास्तंयातोनभवतिशुभ: पापयुक्तेक्षितश्च॥
चञ्चत्कान्तिस्सतुयदिपुनस्साधुबन्धुग्रहाणां
वर्गेसंस्थोजनयतिमहत्सम्पदंस्वीयपाके॥३॥

यदि वर्षाधीश निधन ८ स्थान अराति ६ स्थान अथवा रिष्फ १२ स्थानोंमेंसे किसी एकमें वर्त्तमान हो अथवा अस्त हो अर्थात् सूर्यके साथ हो पापग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो शुभ नहीं होता यदि पुन: वर्षाधीश बली हो शुभग्रह अथवा स्वकीय स्थानमें स्थित हो तो वह

अपनी दशामें शुभ सम्पत्तिका देनेवाला होता है॥३॥

प्राप्तिम्भूयादाप्तवंशानुमानान्नानासौख्यं मुख्यताञ्चारुकीर्तिम्॥
अन्यस्थानात्प्राप्तिमेवारिनाशंकुर्यात्सूर्यस्सर्व्ववीर्योब्दपश्चेत्॥४॥

यदि सूर्य पूर्ण बली होकर वर्षेश हो तो वंशानुमानसे अपने राजद्वारा प्राप्ति हो, अनेक प्रकारका शरीरको सुख हो और प्रकारसे भी धनप्राप्ति हो, और शत्रुनाश हो॥४॥

भूमीपालात्पुत्रतोमित्रतश्चस्वल्पंसौख्यंवाग्विवादंविरोधम्॥
बाधाम्भीतिन्नीतितोवैपरीत्यं कुर्यात्सूर्योमध्यवीर्योब्दपश्चेत्॥५॥

यदि सूर्य मध्यवीर्य होकर वर्षाधिपति हो तो राजासे, पुत्रसे, और मित्रसे कुछ थोडा सुख मिले. मौखिक युद्धहो, बाधा प्राप्तहो, भयहो और परस्पर विरोध विख्यात होवे॥५॥

यानन्दूरेवैरिवर्गाभिवृद्धिं दुर्बुद्धित्वंसर्वदार्थव्ययश्च॥
मन्दैर्वादञ्चापवादंगदंवाकुर्योत्सूर्योहीनवीर्योब्दपश्चेत्॥६॥

यदि सूर्य हीनबल होकर वर्षस्वामी हो तो परदेशगमन हो, शत्रुगणकी वृद्धिहो बुद्धिनाश हो वारम्वार द्रव्यका नाश हो दुष्ट लोगोंसे लडाई हो अपवाद मिले और शरीरमें रोग उत्पन्न हो॥६॥

पृथ्वीपालात्स्यादवाप्तिर्विशालानानासौख्यंस्त्रीषुलीलाविलासः॥
मुक्तायुक्तश्वेतवस्तूपलब्धिर्वर्षाधीशे यामिनीशोधिसत्त्वे॥७॥

यदि पूर्णबलोपयुक्त चन्द्रमा वर्षाधीश हो तो राजद्वारा उत्तम प्राप्ति हो और अनेक प्रकारका सुख मिले स्त्रीविलासका सुख हो और मोतीयुक्त श्वेत पदार्थका लाभ हो॥७॥

कान्तासौख्यंस्वल्पमेवप्रकल्प्यंवैकल्यंस्यात्स्वीयवर्गेथदैन्यम्॥
कार्श्यम्भूपस्यातिकोपान्निशेशेवर्षाधीशेमध्यसत्त्वोपपन्ने॥८॥

यदि चन्द्रमा मध्यबल होकर वर्षाधीश होवे तो स्त्रीकी तरफसे सुख कुछ कम हो शरीरमें विकलता हो बन्धुवर्गमें द्रव्यकी हानि हो और राजकोपकी चिंतासे शरीरमें दौर्बल्य हो॥८॥

विकलतानिलतश्चकलिः कुलेप्रचलनंहिनिजस्थलतो भवेत्॥
नरपतेः कफतोपिमहद्भयंशशिनिहायनपेऽल्पबलान्विते॥९॥

यदि चन्द्रमा क्षीणवीर्य होकर वर्षपति हो तो शरीरमें वायुकृतपीडा होवे कुटुम्बमें कलह, विदेशकी यात्रा करनी पडे, राजाका भय हो और शरीरमें कफकी बाधा हो॥

रिपुगणद्विजयोपिरणाङ्गणेभ्रमणतश्चमहद्द्रविणागमः।
नरपतेरपिवापि चमूपतेः क्षितिसुतेब्दपतौबलवत्यलम्॥१०॥

यदि पूर्णबल मंगल वर्षाधिप हो तो शत्रुसे जय प्राप्त हो और भ्रमण करते हुये मनुष्यको राजद्वारा अथवा किसी सेनापतिके द्वारा उत्तम द्रव्य प्राप्ति होवै॥१०॥

गदंविवादंविविधंविरोधंधनव्ययंचौरभयंकरोति॥
अरातिभीतिंक्षितिपादिभीतीं वर्षाधिपोमध्यबलोमहीजः॥११॥

यदि मध्यमवीर्य मंगल वर्षाधिपति हो तो शरीरमें रोग परस्पर विवाद और वैर धननाश, चोरभय और राजादिसे भय प्राप्त होवे॥११॥

दुष्टादभीष्टाच्चकरोतिकष्टंगदंचपादाननलोचनेषु॥
खलान्नृपालाज्ज्वलनादनर्थंवर्षाधिराजोवनिजोऽल्पसत्त्वः॥१२॥

यदि मङ्गल अल्पवीर्य होकर वर्षाधिपति होवे तो मित्रसे और शत्रु इन दोनोंसे कष्ट होवे, पैर मुख और नेत्रोंमे रोग होवे, दुष्ट मनुष्य, राजा और अग्निसे अनर्थ उत्पन्न होवै॥१२॥

वित्तलाभललनातिविलासैस्साहसैश्च निखिलैःखलु युक्तः॥
ज्योतिषोद्यमचिकित्सितवित्स्यादब्दपोत्यतिबलोहिबुधश्चेत्॥१३॥

यदि पूर्ण बलोपयुक्त बुध वर्षस्वामी हो तो वित्तलाभ, स्त्रीविलास और अनेक प्रकारके उद्यमोंसे युक्त हो और ज्योतिष विद्या तथा वैद्यकको जाननेवाला हो॥१३॥

स्ववाक्यदोषादशुभञ्चयोषारोषाधिकत्वन्द्विषतोविषादः॥
कृपानृपालादधिकाकिलस्यादब्दाधिपोमध्यबलोबुधश्चेत्॥१४॥

यदि मध्यवीर्य बुध वर्षपति हो तो अपनेही वाक्यके दोषसे अशुभ होवे, स्त्रीपुरुषमें क्रोध बढे, शत्रुसे दुःख हो और राजा अधिक कृपा करे॥१४॥

अनृतसाक्षिकताक्षितिपाद्भयं क्षतिरतीवविपक्षकदस्युतः॥
नयनहृद्गलरुक्प्रबलाभवेद्गतबलेऽब्दपतौ शशिनस्सुते॥१५॥

यदि बुध क्षीणबल वर्षेश हो तो झूठी गवाही देना पडे, राजासे भय उत्पन्न हो, शत्रु और चोरसे धननाश हो तथा नेत्र, हृदय और गलेमें रोग होवे॥१५॥

ज्ञानंकीर्तिर्न्निधिसहचराह्लादनन्देवताना
मर्चाचर्चाविविधधनचयैर्लोकविश्वासितैव॥
धर्म्मेप्रीतिर्नृपतिकुलतोत्पन्नवित्तोन्नतिस्स्या-
च्चञ्चत्कीर्तिश्शरदधिपतौवाक्पतौ सर्व्ववीर्ये॥१६॥

यदि पूर्णबलयुक्त बृहस्पति वर्षस्वामी हो तो ज्ञानवृद्धि हो, कीर्ति बढे, निधि प्राप्त होवे, बन्धुवर्गसे आदर प्राप्त हो, देवपूजनादिमें बुद्धि हो, धनका अच्छा सङ्ग्रह होनेसे संसारमें उसका विश्वास मानाजाय, धर्ममें प्रीति बढे, राजकुलसे धनकी वृद्धि हो और संसारमें यश हो॥१६॥

लोकैस्साद्धंवैमनस्यंविवादंमान्द्यंबुद्धेश्शत्रुसंवर्द्धनञ्च॥
भूपाशंकातंकतः कार्श्यमङ्गेदेवाचार्येमध्यवीर्येब्दपे स्यात्॥१७॥

यदि बृहस्पति मध्यबल वर्षेश हो तो लोकमें विरोध, वाग्वाद, बुद्धिकी मन्दता, शत्रुओंकी वृद्धि, राजाका भय और शरीरमें दुर्बलता हो॥१७॥

जघनलोचनगुल्फपदोदरेहरहरातितरांपरिपीडनम्॥
विकलतानिलतः खलतोभयंसुरगुरौविकलेब्दपतौभवेत्॥१८॥

यदि बृहस्पति बलरहित वर्षपति हो तो जंघा, नेत्र, गुल्फ, पाँव और पेटमें वायुसे पीड़ा उत्पन्न हो और खलोंसे भय हो, इस श्लोकमें हरहर खेदसूचक अव्यय है॥१८॥

दध्यादलंविलसितानिविलासिनीभि
र्हास्योत्सवादिविविधाम्बरवस्त्रलाभम्॥
आरोग्यभाग्यविजयस्वजनाभिवृद्धिं
यद्यब्दपोभृगुसुतस्समुदारसारः॥१९॥

यदि शुक्र बली होकर वर्षाधिपति हो तो स्त्रीविलास सुखको देवें, हास्यसुख, उत्सवसुख देवें और अनेक प्रकारके वस्त्रलाभ हो, शरीरमें आरोग्य हो भाग्यवृद्धि हो विजयवृद्धि हो और अपने बंधुवर्गकी वृद्धि हो॥१९॥

निजजनादरितोपिभयान्वितस्सुतसुतावनिताधनचिन्तया॥
कफचयात्कृशपीततनुर्नृपोभवतिमध्यबलेब्दपतौसिते॥२०॥

यदि मध्यमबल शुक्र वर्षाधिपति हो तो अपने बन्धुवर्गसे भय, शत्रुसे भय, पुत्र, कन्या, स्त्री और धनकी चिन्तासे तथा कफकी वृद्धिसे शरीरमें दुर्बलता प्राप्त होवे और शरीर पीत हो जावे॥२०॥

खलजनेनकलिर्बहुलोभवेद्विकलतानृपकोपवशाद्भयम्॥
धनविहीनतयाभ्रमतामतेर्ननुविहीनबलेब्दपतौसिते॥२१॥

यदि अधम बल शुक्र वर्षपति हो तो दुष्ट लोगोंसे कलह बहुत हो, राजाके कोपसे विकलता हो और भय उत्पन्न हो तथा धन नष्ट होनेसे बुद्धिभ्रम होवे॥२१॥

शैलकाननवणिक्कृषिक्रियाम्लेच्छतोहिनिजमानसेप्सितम् ॥
स्यान्मतिर्द्रुमलताभिरोपणेपूर्णसत्त्वसहितेब्दपेशनौ ॥२२॥

यदि पूर्णबल शनैश्चर वर्षपति हो तो पहाड, जङ्गल, वैश्यक्रिया, खेती और म्लेच्छ स्वामी द्वारा अपना मनोभीष्ट प्राप्त होवे और बाग फुलवारी लगानेमें चित्तकी अभिरुचि अधिक होवे ॥२२॥

क्रोडपृष्ठगलकेक्षणपीडा जायतेहिनिबिडायवनार्त्तिः ॥
मूर्तिरप्यतिकृशाबहुशेषावर्षपेरविसुतेऽर्द्धबलाढ्ये ॥२३॥

यदि शनि मध्यबल वर्षपति हो तो छाती, पीठ, कण्ठ और नेत्रमें पीडा हो, म्लेच्छोंसे बडा भय हो और शरीरमें दुर्बलता हो ॥२३॥

अनिलतोबलकान्तिविहीनता विफलतापिनिजेप्सितसाधने।
निजजनात्मजकष्टचयोभवेद्रविसुतेविबलेशरदीश्वरे ॥२४॥

यदि शनि बलरहित वर्षस्वामी हो तो वायुके कोपसे शरीरमें बल और कान्तिका नाश हो अपना मनोरथ नष्ट हो और अपने बंधुवर्गको कष्टवृद्धि हो ॥२॥

इति श्रीताजिकभूषणे वर्षेशफलाध्यायस्तृतीयः ॥३॥

अथ चत्वारिहर्षस्थानानि निरूप्यन्ते

पुण्यन्तृतीयं रिपुभञ्चलग्नंलाभालयम्पञ्चमकंव्ययाख्यम्।
दिवामणेर्हर्षपदन्निरुक्तमेकन्द्वितीयंस्वगृहेसदैव॥१॥

पुण्य ९ तृतीय ३ रिपु ६ लग्न १ लाभ ११ पञ्च ५ और व्यय १२ ये स्थान सूर्यसे लेकर क्रमशः ग्रहोंके हर्षके स्थान हैं अर्थात् यदि लग्नसे नवम स्थानमें सूर्य हों तो अपने हर्ष स्थानमें जानना ऐसेही वर्षलग्नसे ३ चन्द्रमा और छटे मङ्गल इत्यादि क्रमसे जानना, यह पहिला हर्षस्थान है और स्वगृह अर्थात् अपनी राशि और उच्चभी हर्षस्थान है यह दूसरा हर्षस्थान है, यहाँ ध्यान देना चाहिये कि, जितना बल अपने स्थानमें होता है उतना ही उच्चमें भी, द्विगुण नहीं॥१॥

तथातृतीयन्दिवसे नराणांयोषिद्ग्रहाणामुदितंरजन्याम्॥
हर्षालयंलग्नगृहात्क्रमेणत्रिकंत्रिकंस्त्रीपुरुषग्रहाणाम्॥२॥

अब तृतीय हर्षस्थान कहते हैं-नरग्रह अर्थात् रवि, मंगल, बृहस्पतिका दिनमें हर्षस्थान होता है और स्त्रीग्रह अर्थात् चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि ये रात्रिमें हृष्ट होते हैं ध्यान रहे कि ताजिकमें नपुंसक ग्रह नहीं होते। अब चतुर्थ हर्षस्थान कहते हैं कि, लग्नसे तीन २ स्थान स्त्री और

पुरुषग्रहोंके हर्षस्थान होते हैं अर्थात् यदि लग्नसे १-२ और ३ स्थानमें स्त्रीग्रह हों तो हर्ष स्थानमें जानना और वैसेही ४, ५, ६ में पुरुष ग्रह, पुनः ७, ८, ९ में स्त्री ग्रह और १०, ११, १२ में पुरुष ग्रह हर्ष स्थानमें जानना ॥२॥

इति चत्वारि हर्षस्थानानि॥

अथ दीप्तिभागाः

दीप्तांशकाख्यैस्तिथिभिःपतङ्गैर्मतङ्गजैस्सप्तभिरङ्कसंख्यैः॥
शैलैर्नभोमण्डलगैर्नभोगाविलोकयन्तिद्युमणेः क्रमेण॥३॥

क्रमसे सूर्यसे लेकर ये ग्रहोंके दीप्तांश हैं अर्थात् सूर्यके तिथि १५ अंश दीप्तांश हैं ऐसे चन्द्रमाके १२ मंगलके ८ बुधके ७ बृहस्पतिके ९ शुक्रके ७ और शनिके ९ अंश दीप्तांश भाग हैं॥३॥

अथ षोडशयोगाः

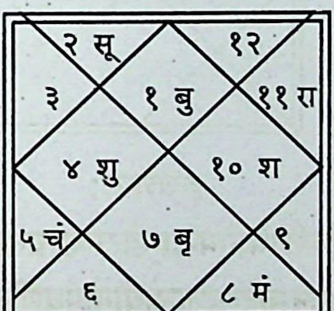
इक्कवालेन्दुवाराख्यावित्थशालस्ततःपरम्॥
ईशराफश्चनक्तञ्चयमथामणऊतथा॥४॥
कम्बूलगैरिकम्बूलखल्लासरकरद्दके॥
ततोदुष्फलिनीकुत्थोदुत्थकुत्थीरतम्बिरौ॥५॥
कुत्थश्चदुरुफश्चैतेयोगाःषोडशकीर्तिताः॥
ताजिकाचार्यवर्य्यैश्चफलविज्ञानहेतवे॥६॥

ताजिकके आचार्यने १६ योग फल ज्ञानके निमित्त कहे हैं वे ये हैं- इक्कवाल १, इन्दुवार २, इत्थशाल ३, ईशराफ ४, नक्त ५, यमया ६, मणऊ ७, कम्बूल ८, गैरिकम्बूल ९, खल्लासर १०, रद्दक ११, दुष्फलिनीकुत्थ १२, दुत्थकुत्थीर १३, तम्बीर १४, कुत्थ १५ और दुरुफ १६ ये क्रमशः इनके नाम जानना ॥४॥५॥६॥

अथक्रमशो लक्षणानि। इक्कवालः पणफरयुतकेन्द्रेखेचराश्चेद्भवेयु-
र्भवतिखलुतदानींमिक्कवालाख्ययोगः॥
शुभखगजनितोयंसौख्यदातानितान्तं
खलखचरकृतोस्मिन्कार्यसिद्धौविलम्बः॥७॥

यदि सब ग्रह पणफर २, ५, ८, ११ और केन्द्र १, ४, ७, १० में पडे तो इक्कवाल योग होता है यह शुभ ग्रहोंसे शुभ और खलसे मध्यम होता है॥७॥ उदाहरणम्।

इक्कवालयोगः

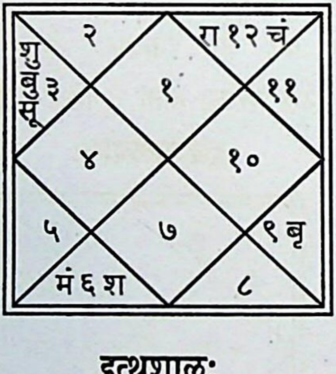


इंदुवारः

यद्यापोक्लिमगाः खेटाइन्दुवारस्समध्यमः।
सापोक्लिमेपणफरेग्रहाश्चैव नकिञ्चन॥८॥

यदिआपोक्लिम ३, ६, ९, १२ इन स्थानोंमें सब ग्रह हों तो इसको इन्दुवार योग कहते हैं और यह मध्यम होता है और यदि ग्रह आपोक्लिम और पणफर दोनों स्थानोंमें हो तो कोई योग नहीं होता है॥८॥ इसका उदाहरण अधो लिखित है.

इन्दुवारयोगः

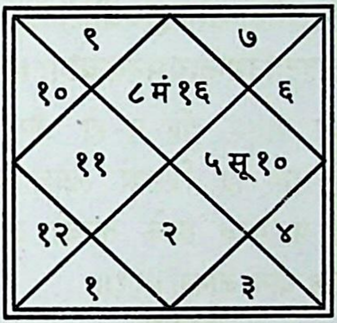


इत्थशालः

दृष्टौसत्यां प्रोक्तदीप्तांशभागैर्मन्दात्खेटाच्छीघ्रखेटोयदाल्पः॥
अंशैस्तुल्यःकिञ्चिदूनस्तदेत्थशालोयोगोमुंथशीलस्स एव॥९॥

कहेहुये अपने दीप्तांशभागसे परस्पर यदि ग्रहोंकी दृष्टि हो और मंदगतिवाले ग्रहसे शीघ्र गतिवाला अंशोंमें कम हो अथवा तुल्य हो तो इत्थशाल योग होता है, इसीको मुथशिल भी कहते हैं॥९॥ उदाहरणम्॥

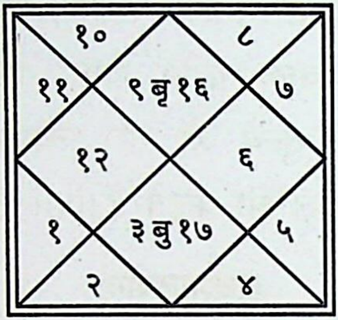
इत्थशालयोगः



शीघ्रग्रहोमन्दगतेर्ग्रहस्ययदैकभागंपुरतःप्रयाति॥
सईशराफस्सतुमूसरीफः पुरातनैर्दुष्टफलःप्रदिष्टः॥१०॥

यदि शीघ्रगति ग्रह मन्द ग्रहके १ भाग (१ अंश) आगे बढा हो तो ईशराफ योग जानना और उसीको मूसरीफ भी कहते हैं यह अशुभ है॥१०॥

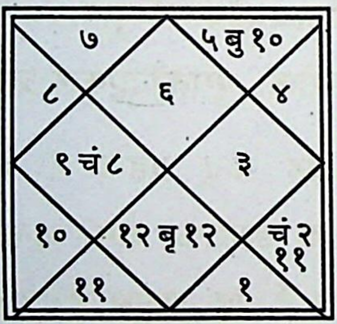
ईशराफयोगः



परस्परन्दृष्टिविहीनयोश्चशीघ्रोन्तरेतद्द्वयवीक्षितश्च ॥
प्रगृह्यतेजश्चरखेचरेन्द्राद्ददातिमन्दायसनक्तयोगः ॥११॥

यदि लग्नेश कार्येशकी परस्पर दृष्टि न हो और इन दोनोंके बीचमें कोई एक शीघ्रगामी ग्रह हो जिसपर लग्नेश कार्येशकी दृष्टि भी हो और वह अपने पृष्टस्थित ग्रहके तेजको खींचकर अगले मन्द ग्रहको देता हो तो नक्त योग जानना ॥११॥

नक्तयोगः



स्त्रीलाभप्रश्ने उदाहरणम्

कान्ताहस्तगतेति पृच्छतितदाकन्याविलग्नाधिप
स्सौम्यः सिंहगतःकलत्रभवनेमीनेगुरुःसंस्थितः ॥
दृष्टिर्नैवतयोश्शशीचलगतिर्द्वाभ्यांचदृष्टो बुधा-
दोजश्चार्पयदिन्द्रमंत्रिणि कलत्राप्तिः परस्माद्भवेत् ॥१२॥

स्त्री प्राप्ति होगी? इस प्रश्न कालमें कन्या लग्न है और उसका स्वामी बुध सिंहमें है तथा कार्येश (स्त्री लाभ प्रश्नमें स्त्रीस्थानगत मीन होनेसे उसका स्वामी) बृहस्पति है इन दोनोंको परस्परदृष्टि नहीं है अब इन दोनोंके बीच शीघ्रगति ग्रह चन्द्रमाको दोनों देखते हैं (अतएव चन्द्रमा धन और वृष दोनों स्थानोंमें दिया गया है इसे पृथक् २ लिखनेमें दो उदाहरण भी बन सकते हैं और अपने न्यूनांश बुधका तेज ग्रहण करके अपनेसे अधिक गुरुको देता है इससे परहस्तसे स्त्रीलाभ होना चाहिये ॥१२॥

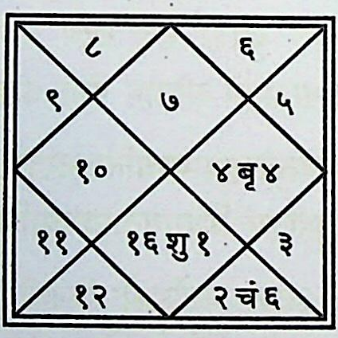
परस्परालोकनवर्जितंयत्खेटद्वयम्पश्यतिमन्दखेटः ॥
दीप्तांशकैर्धामचराद्गृहीत्वा स्थिरायदत्तेयमयाभिधानः ॥१३॥

यदि दो ग्रहोंके लग्नेश कार्येशको जिनकी परस्पर भेट न हो कोई एक मन्दग्रह अपने दीप्तांशमें लेकर देखता हो और किसी चर ग्रहसे लेकर स्थिर ग्रहको देता हो तो यम योग जानना ॥१३॥

राज्यप्राप्तितुलाविलग्नपभृगुर्मेषे वृषे चन्द्रमा
राज्येशस्त्वनयोर्नदृष्टिरमराचार्योन्तरस्थः स्थिर
पश्यन्दीप्तदृशाचरामृतकरास्तेजः प्रगृह्यार्पय-
च्छुक्रायोरुपदोपलब्धिरचिरात्सन्मन्त्रिणोऽङ्गीकृते ॥१४॥

यथा राज्यप्राप्तिप्रश्नमें लग्न तुला है उसका स्वामी शुक्र और राज्येश चन्द्रमा वृषमें है यहां लग्नेश कार्येशकी द्विर्द्वादश होनेसे परस्पर दृष्टि नहीं है और मन्दग्रह गुरु दोनोंके मध्यमें है दीप्ति भागसे दोनोंको देखता है और चरग्रह चन्द्रमासे तेज लेकर शुक्रको देता है तो अवश्य राज्यलाभ जानना ॥१४॥

यमयायोगः



शीघ्रादग्रेवनिजइनजः पृष्ठतोवैकराशौ
पश्यंस्तुर्यन्तनुदृशिगतश्चाधिकोनैर्निजांशैः ॥

तेज:पुञ्जंहरत्तिमणऊयोगएतन्निरुक्तो
यत्कार्यार्थम्मुथशिलमिहस्थो हरत्येव तेज: ॥१५॥

यदि मङ्गल वा शनैश्चर शीघ्र ग्रहसे आगे, वा पीछे होकर चतुर्थ स्थानको सप्तमैकराशिसे देखते हों और अधिक अथवा न्यून अपने दीप्तांशसे शीघ्र ग्रहका तेज ग्रहण करें और लग्नेश कार्येशका इत्थशाल हो तो 'मणऊ' योग कहाता है और यह कार्य नाशक होता है॥१५॥

जायाप्राप्तिप्रश्नकन्याविलग्नेदिग्भिर्भागैर्ज्ञ: कलत्रेगुरुश्च ॥
तिथ्यंशैरप्यत्रभौमोस्तिरुद्रैर्हृत्वातेजोज्ञस्यचन्द्रेणयुक्त: ॥१६॥
जायाप्राप्तिर्नैवपृष्ठेपिचास्मिन्नेवंकल्प्यन्त्वेकगौमन्दभौमौ ॥
शीघ्राच्छीघ्रम्प्रोक्तभागादिकोणैर्दृष्टिंहित्वाचाशुभार्थौ भवेताम् ॥१७॥
इंदुर्वृषेखेन्दुभिरावनेयोर्विंशद्भिरंशैरथकर्कराशौ ॥
तिथ्यंशकैर्दैत्यगुरु: कुजेनदृष्टिंहृतेन्दोरितिपूर्ववत्स्यात् ॥१८॥

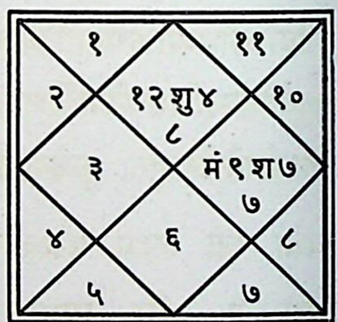
यथा स्त्री लाभ पश्नकी लग्न कन्या उसमें १० अंशसे बुध है और सप्तम स्थानमें १६ अंशसे बृहस्पति है और इनके अंतरमें ११ अंशसे मंगल चन्द्रमाके

साथ होकर बुधके तेजको नष्ट करता है इससे ऐसे योगमें जाया प्राप्ति नहीं होगी। इति प्रथमः प्रकारः॥ अथवा यथा मंगल पृष्ठस्थित है और शीघ्रसे आगे शीघ्र ग्रह हो तो भी यह योग कार्यनाशक जानना। इति द्वितीयः॥ अथवा चन्द्रमा वृषमें १० अंशसे हो और मङ्गल २० अंशसे हो और लग्न में शुक्र १५ अंशसे हो और मंगल चन्द्रमाकी दृष्टि हरण करता हो तो भी कार्यनाश हो॥१६-१८॥ इति तृतीयः॥३॥

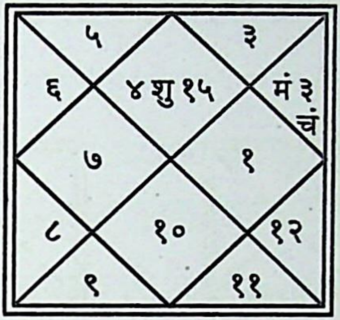
प्रथमः



द्वितीयः



तृतीयः



निशाकरः खेचरयुग्मकेनसाकंयदामूथशिलंकरोति॥
कम्बूलयोगः कथितस्तदानीम्पूर्णोहिमध्याधमकस्त्रिधासौ॥१९॥

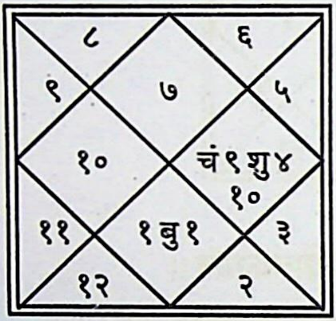
यदि चन्द्रमा दो ग्रहोंके साथ इत्थशाल करे तो कम्बूल योग कहना यह पूर्ण, मध्य और उत्तम इन भेदोंसे तीन प्रकारका है॥१९॥

निजोच्चगेहादिगतेननूनंस्वशत्रुगेहोपगतेनतद्वत्॥
नीचास्तसंस्थेनखगद्वयेन योगः क्रमादुत्तममध्यहीनः॥२०॥

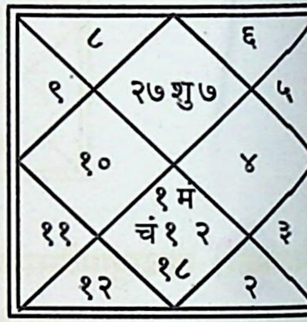
यदि चन्द्र उच्च स्थानमें वर्तमान होकर दो ग्रहोंसे इत्थशाल करें तो उत्तम कम्बूल, यदि शत्रु ग्रहवालोंसे तो अधम और यदि नीच अथवा अस्तस्थानवालोंसे

इत्थशाल करे तो अधम जानना इसके नवभेदतक होते हैं चक्रमें नीचे तीन भेदके उदाहरण देते हैं॥२०॥

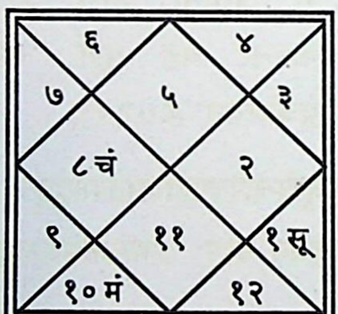
उत्तम



मध्यम



अधम



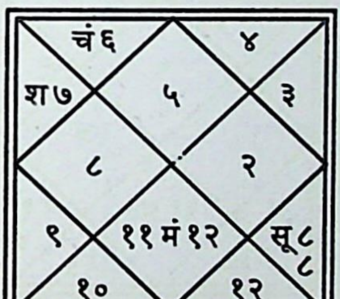
वर्षप्रवेशोद्भवलग्नकालेचेन्मुन्थशीलंशुभखेटयुक्तम्॥
कान्तिश्चलीलाकलधौतचैलं कम्बूलयोगोविपुलत्वमेति॥२१॥

यदि वर्ष प्रवेश अथवा जन्म लग्नमें शुभ इत्थशाल हो तो शुभकांति लीला विलास इत्यादिक अनेक प्रकारके सुख प्राप्त होवें ॥२१॥

चेच्छून्यमार्गे स्थितिमातनोति चन्द्रेणकेनापिचमूथशाली ॥
तत्खेटगेहोच्चगतः कबूलंकरोतितद्गैरकबूलमुक्तम् ॥२२॥

यदि कोई ग्रह शून्यमार्गमें वर्तमान हो और चन्द्रमाके साथ अथवा और एक ग्रहके साथ इत्थशाल करे और उस स्थानका स्वामी उच्च स्थानमें होकर कंबूलयोगको करता हो तो गैरकम्बूल योग जानना ॥२२॥

गैरकम्बूलयोगः



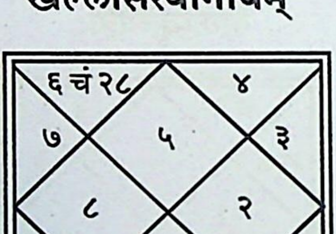
त्खेटगेहतुङ्गस्थोनस्याद्यदिचचन्द्रमाः ॥
रकम्बूलयोगस्यादभद्रः कथितो बुधैः ॥२३॥

यदि चन्द्र उन इत्थशाली ग्रहोंसे उच्च स्थानमें हो तो भी गैरकम्बूल योग होता है और अनिष्ट फलदायक होता है ॥२३॥

कलानिधिर्नैवबलाधिशाली केनापिसाकन्नचमूथशाली॥
केनापियोगन्नकरोतिपूर्वैः खल्लासरोसावशुभोनिरुक्तः ॥२४॥

यदि चन्द्रमा बली न हो और किसीके साथ इत्थशाल करे और न किसीसे मेल तो खल्लासर योग जानना यह अशुभ होता है॥२४॥ उदाहरणम्।

खल्लासरयोगोयम्



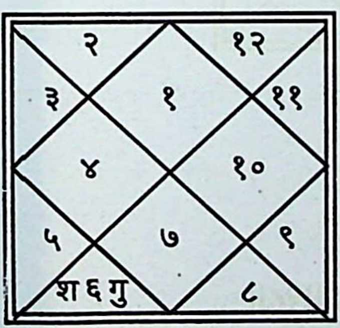
व्यस्तेनास्तमितेनसूर्य्यकिरणक्षीणेन खेचारिणा
योगोमूथशिलःकिलाशुभफलोरन्ध्रेथवान्यस्थले॥

सक्रूरेप्रवदन्तिरद्दमथचेत्केन्द्रस्थआपोक्लिमे
संस्थेनप्रकरोतिमूथशिलकंस्वक्षन्तुकार्यान्तदा ॥२५॥
आपोक्लिमस्थश्चरखेचरश्चेत्केन्द्रस्थमन्देनचमूथशीलम् ॥
करोतिकार्येप्रथमंविलम्बं पश्चादवश्यंसकलार्थसिद्धिम् ॥२६॥

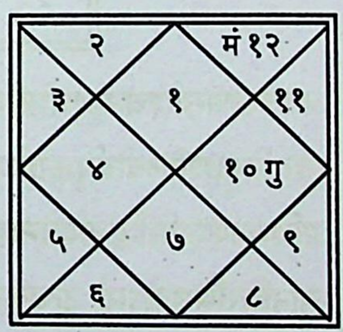
यदि कोई ग्रह वक्री हो अथवा सूर्यके कारण क्षीणदृष्टि हो अथवा अस्त हो अथवा १२, ६, ८ स्थानमें स्थित हो और क्रूरग्रहसे युक्त हो तो रद्द योग जानो यह कार्यविनाशक होता है॥२५॥ यदि आपोक्लिम ३।६।९।१२ में चर ग्रह हो और केन्द्र १, ४, ७, १० स्थ किसी एक मन्द ग्रहसे इत्थशाल करता हो तो प्रथम प्रथम तो कुछ कार्यमें विलम्ब हो और फिर अवश्य कार्यसिद्धि हो॥२६॥

उदाहरणम्

प्रथमोरद्दः



द्वितीयोरद्दः

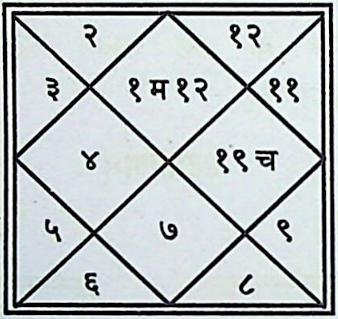


मन्दस्वगेहेयदिवानिजोच्चैस्त्रैराशिकेवापिनिजेप्रकुर्यात् ॥
योगंचरेणाप्यधिकारिणाचेद्दुष्फालिकुत्थश्शुभकृन्निरुक्तः ॥२७॥

यदि कोई मन्दग्रह अपनेसे ऊंचे अथवा अपने घर
वा त्रैराशिकमें किसी चर ग्रहसे योगकरे तो दुष्फालिकुत्
योग जानना यह शुभ है॥२७॥

उदाहरणम्

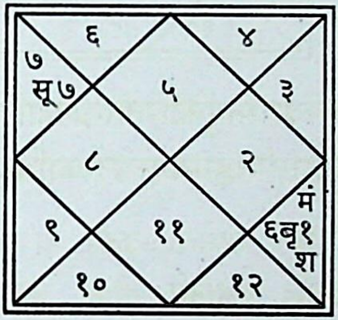
दुष्फालिकुत्थयोगः



अबलखचरयोश्चेन्मूथशीलोयदैको-
रचयतिमुथशीलंवीर्ययुक्तग्रहेण ॥
अभिमतफलसिद्धिर्जायतेन्यस्य हस्ता
न्मुनिभिरभिमतोऽसौ दुत्थकुत्थीरयोगः ॥२८॥

निर्बल ग्रहोंमें इत्थशाल करनेवाला यदि कोई एक ग्रह किसी बलवान् ग्रहसे इत्थशाल करता हो तो दुत्थकुत्थीर योग जानना यह सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला होता है॥२८॥ उदाहरणम्॥२॥

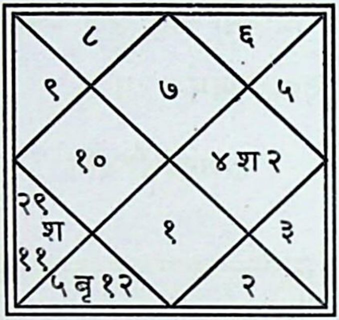
दुत्थकुत्थीरयोगः



अन्यालयस्थोबलवान्ग्रहेन्द्रश्चेन्मूथशील कुरुतेपरेण॥
तदासदाचारपरैस्तदानीन्तम्बीरयोगःकथितः शुभोयम्॥२९॥

कोई बल ग्रह दूसरेके ग्रहमें वर्तमान होकर और दूसरे ग्रहसे इत्थशाल करे तो तम्बीर योग होता है, यह शुभ होता है॥२९॥

उदाहरणम्
तम्बीरयोग:



अस्तङ्गतोव्यस्तगतस्त्वशस्तैर्युक्तेक्षितोरन्ध्रग्रहादिसंस्थ: ।।
नीचेनतत्स्थेनचमूथशालीराह्वास्यपुच्छेदुरफाभिधान: ।।३०।।

यदि कोई ग्रह अस्त अथवा वक्री हो और अशुभ ग्रहों वीक्षित या सप्तमादि स्थानमें होकर वहीं रहते हुये किस एक ग्रहसे इत्थशाल करे अथवा राहुके मुख पुच्छमें ह तो दुरुफ योग जानना यह अशुभ होता है।।३०।।

लुप्तोनीचगतोजितोनधिकृतोदुष्टारियुक्तेक्षितो
नष्टोयंखचरोव्यथाव्ययभयंदद्यात्स्वपाकेनृणाम्।।
कुर्याद्वैरिभयंत्वगक्षिपुरुजंरक्तक्षतादिव्यथां
वैकल्यंसुखसंक्षयंधनहृतिंरोगंविनष्टोरवे: ।।३१।।

यदि कोई ग्रह लुप्त नीचगत अथवा अपने अधिकारमें नहो या उसको कोई दुष्ट ग्रह अथवा शत्रु देखता हो तो उसे नष्ट समझना चाहिये और यह अपनी दशामें दुःखदाई होता है और सूर्यादि नष्ट ग्रहोंका क्रमसे वैरिभय, त्वक् और नेत्रमें पीडा, रक्त और घाव, आदिकसे दुःख विकलता, सुखका नाश, धनका नाश और रोग ये फल जानना॥३१॥

इति नष्टखचरफलम्।

अथ द्वादशभावस्थग्रहाणां बलानुसारेण फलानि।

तनुपतिर्बलमूर्तियुतः करोत्यतिसुखानिचकान्तिविवर्द्धनम्।
भवतिमध्यबलेकिलमध्यताधमबलेधममेव फलन्दिशेत्॥३२॥

यदि लग्नस्वामी बली होकर वर्षलग्नमें पडे तो वह सुख और कान्तिको बढावे यदि मध्यबल हो तो मध्यफल और यदि अधम हो तो अधम फल कहना॥३२॥

केन्द्रेत्रिकोणेतनुपः करोतिप्रकृष्टसौख्यंविजयाभिवृद्धिम्॥
कलानिधिः पूर्णबलः कबूलंकुर्वन्फलंवा विमलंप्रदत्ते॥३३॥

यदि लग्नस्वामी केन्द्र १, ४, ७, १० अथवा त्रिकोण ९, ५ में हो तो सुख और विजय हो औ यदि चन्द्रमा पूर्ण बलोपेत होकर लग्नपतिके साथ कंबूल योगको करे तो भी शुभ है॥३३॥

इति तनुः॥

धनाधिराजस्सुरराजमंत्रीजन्मन्यथाब्दे धनभावसंस्थः॥
लग्नाधिराजेनकृतेत्थशालोनूनंधनंस्याद्बहुलंतदानीम्॥३४॥

यदि धन २ भावका स्वामी बृहस्पती हो व चाहे जन्म वर्षके धन भावमें स्थित हो और लग्नस्वामी इत्थशाल करता हो तो धनकी वृद्धि करे॥३४॥

जन्मन्यब्देवित्तभावंप्रपश्येद्वित्ताधीशोवर्षपश्चाधिवीर्यः॥
द्रव्यप्राप्तिर्वीर्यहीनेतथास्मिन्क्रूराक्रान्तेनैकधावित्तनाशः॥३५॥

यदि धनस्वामी बली होकर चाहे जन्म वा वर्ष धन स्थानको हो तो द्रव्य प्राप्ति जानना और यह यदि क्रूर ग्रहसे आक्रान्त निर्बल हो तो अनेक प्रकारसे वित्तनाश हो॥३५॥

रंध्रेवित्तेदेवतानाममात्येपापैर्युक्तेराजदण्डःप्रचण्डः॥
वित्तेवास्मिन्साधुखेटैः प्रहष्टेसंयुक्तेवासेव्यमानोनरस्स्यात्॥३६॥

यदि बृहस्पति वित्त २ वा रंध्र ८ स्थानमें पापग्रहोंसे युक्त हो तो उग्र राजदण्डको प्राप्त करे और यदि वित्तस्थान किसी शुभ ग्रहकी दृष्टिसे वा शुभ ग्रहसे युक्त हो तो शुभफलदाता है॥३६॥

इति धनभावः

सूर्येवीर्ययुतेब्दपेत्रिभवगेसौख्यं सहोत्थाद्भवे
च्छुक्रेप्येवमसाधुवीक्षितयुतेप्यस्तंमते वाजिते॥
आदेश्यंशकटाच्च संकटतरंजीवेऽनुजस्थेऽनुजा-
त्सौख्यं वर्षपतौ कुजेबलवतिप्रीतिस्सहोत्थैर्भवेत्॥३७॥

यदि वीर्ययुक्त सूर्य वर्षपति होकर तृतीयस्थानमें पडे तो सगे भाईसे प्रेम पैदा हो और यही फल शुक्रका है परन्तु यदि यही अशुभ ग्रहकी दृष्टिमें हो अथवा अस्त या वक्री हो तो शकटसे संकट जानना और यदि बृहस्पति अनुज ३ स्थानमें हो तो भाईसे सुख हो और यदि वीर्ययुत मंगल वर्षपति हो तो भी भाईसे सुख जानना॥३७॥

सहोत्थभावे सहजाधिराजेवर्षाधिराजेनविराजमाने॥
विलग्नराजेनकृतेत्थशालंसुखंसहोत्थैरतुलम्प्रकल्प्यम्॥३८॥

यदि सहोत्थ ३ भावका स्वामी तृतीय स्थानमें

हो और वर्षपतिके साथ हो और वर्षलग्नपतिसे इत्थशा
करै तो भाइयोंसे अतुलसुख जानना चाहिये॥३८॥

हायनेजनुषिचेन्दुनन्दनेस्थानगामिनिसितेबलान्विते॥
स्यात्सुखंसहजतस्तदन्यथाकम्बुलेमुसरिफेचपापिभिः॥३९॥

यदि वर्ष अथवा जन्ममें बुध वा शुक्र स्वस्था
होकर और बली होकर सहज ३ स्थानमें पडे
भातृसुख हो और यदि पाप ग्रहोंके साथ यही कम्बू
वा मुसरिफ योगको करते हों तो इसके विपरी
फल कहना॥३९॥

स्वामिनाचसहजेश्वरेणवानेक्षितेचसहजेखलैर्युते॥
भ्रातृवर्गपरिदुःखितोनरः क्रूरयुक्तसहजेश्वरेऽपिवा॥४०॥

यदि सहज स्थानको न तो सहज ३ स्थान
स्वामी देखता हो और न वर्षपतिकी दृष्टि हो अ
खलग्रह उस स्थानोंमें वर्तमान हो तो भाइयोंसे दुः
होवे अथवा सहजका स्वामी क्रूरग्रहसे युक्त हो
भी यही फल जानना॥४०॥

इति सहजभावः

सचन्द्रसूर्येसतितुर्यभावेपापेक्षिते दुःखमुशन्तिपित्रा॥
तुर्यस्थितेतुर्यपतौसवीर्येसुखंभवेद्वासहमाधिनाथे॥४१॥

यदि चन्द्रमा अथवा सूर्य तुर्य ४ स्थानमें पापग्रहकी दृष्टिमें हो तो पितासे दुःख मिले और यदि चतुर्थ स्थानका स्वामी बली होकर चतुर्थ स्थानमें स्थित रहे अथवा सहमाधिकारी हो तो सुख होवे॥४१॥

भानोस्तथेन्दोर्भवनेर्कसूनुः पित्राचमात्राक्रमशोविवादम्॥
कुर्याद्विलुप्तोविजितारिभीतिंसुखेश्वरोवासहमेश्वरोवा॥४२॥

यदि चन्द्रमा अथवा सूर्यके गृहमें शनैश्चर हो तो पिता-मातासे विवाद हो अर्थात् यदि भानुगृहमें हो तो पितासे और यदि चन्द्रगृहमें हो तो मातासे और यदि विलुप्त अथवा विजित हो तो शत्रुसे भय हो यही फल सुखेश्वर और सुखसहमेश्वरका भी जानना चाहिये॥४२॥

यद्राशिगोजन्मनियामिनीशस्तत्स्थश्शनिश्चेद्भयदो जनन्याः॥
सुखेतुषारांशुसितौसपापौस्याताम्महाक्लेशकरौचपित्रोः॥४३॥

जिस राशिमें चन्द्रमा जन्ममें हो उसी राशिमें यदि वर्षमें पडे तो माताको कष्ट हो और यदि

सुख ४ स्थानमें शुक्र और चन्द्रमा पापयुक्त हो तो पिता-माता दोनोंको बडा क्लेश हो ॥४३॥

इति चतुर्थभावः ॥

बृहस्पतौवर्षपतौ सुतस्थे लाभेथवावीर्ययुतेसुतेभ्यः॥
सौख्यंकुजेवारविजेम्बुजेवाप्येवंविलोमात्फलमामनन्ति ॥४४॥

यदि बृहस्पति बली होकर वर्षपति हो और सु या लाभ स्थानमें वर्तमान हो तो पुत्रोंसे सुख जानना और यदि मंगल शनि अथवा चन्द्र हीनबल होकर इन्हीं स्थानोंमें हो तो इसके विपरीत फल जानना ॥४४॥

यस्मिन्नाशौगीष्पतिर्जन्मकालेवर्षेराशिस्सोपिचेत्पंचमस्थः ॥
धात्रीपुत्रेतत्रसंस्थेबुधेवावर्षाधीशेचापिपुत्रोद्भवःस्यात् ॥४५॥

जन्ममें जिस राशिमें बृहस्पति हो और यदि व राशि वर्षमें पंचम हो और उसमें वर्षाधीश होक मंगल या बुध पडे तो पुत्र प्राप्ति उस वर्षमें अवश् होवे ॥४५॥

यद्राशिगोजन्मनिभानुसूनुस्सएवराशिर्यदिवर्षलग्ने ॥
चिन्तासुतानांविषमेसुतस्थेमहीसुतेव्यस्तगतेसुतार्तिः ॥४६॥

जिस राशिका जन्ममें शनैश्चर हो यदि वही राशि वर्षमें सुत ५ स्थानमें हो और क्रूर ग्रहसे युक्त हो तो उस वर्षमें लडकोंकी चिन्ता जाननी चाहिये।।४६।।

सुतसहममभीष्टैर्दष्टमब्देतुतुष्टिः
खलुभवतिसुतेभ्यस्सम्भवेद्यत्रजीवः ।।
यदिभवतिसमासुस्थानकेतत्रपुत्र-
प्रभवसुखमनूनंचिन्तनीयंसुधीभिः ।।४७।।

यदि पुत्रसहमके स्वामीको उसके मित्र देखते हों तो उस वर्षमें अवश्य पुत्रोंकी ओरसे तुष्टि होवे और यदि पुत्रसहमेश बृहस्पति पुत्रभावमें पडे तो तोभी पुत्रलाभयोग जानना।।४७।।

पुत्रक्षेत्राधीश्वरेपुत्रसंस्थेवीर्योपेतेपुत्रसौख्यंबहुस्यात् ।।
क्रूराक्रांतेऽस्तंगतेवासुतानांपीडांगाढांप्रौढविद्यावदन्ति ।।४८।।

यदि पुत्र ५ स्थानका स्वामी पुत्रभावमें वर्तमानहो और बली हो तो उस वर्षमें पुत्रसुख जानना और यदि वही क्रूर ग्रहोंसे आक्रान्त हो अथवा अस्त होतो पुत्रोंको अत्यन्त पीडा हो।।४८।।

विलोमगामीयदिमंदगामीस्वामीसवर्षेकुरुतेत्रदोषम्॥
शत्रुस्थितेस्मिन्नुधिरज्वरार्तिश्शूलोद्भवश्चापिविचिन्तनीयः॥४९॥

यदि शनैश्चर वक्री होकर वर्षेश, हो और षष्ठस्थानमें पडे तो रुधिर जनित ज्वरकी पीडा और शूलकीभी बाधा होवे यह जानना चाहिये॥४९॥

एवंसुरेज्येचकुजेर्कजेर्केवातार्तिपित्ताक्षिगदैःप्रपीडा॥
शुक्रेव्ययेमृत्युसमानरोगः श्लेष्मातिबाधाबहुधारिपुस्थे॥५०॥

इसी प्रकारसे यदि बृहस्पति, मंगल, शनि, सूर्य वक्री होकर षष्ठस्थानमें पडें तो वातपित्तसे नेत्रमें पीडा हो और यदि शुक्र १२ वें हो तो मृत्युके समान दुःख जानना और छटा हो तो श्लेष्माकी बाधा अधिक होवे॥५०॥

वर्षाधिराजेशशिजेरिपुस्थेपापार्दितेवातगदप्रकोपः॥
तथैवचंद्रेरिपुरंध्रसंस्थे श्लेष्मप्रकोपोमरणेनतुल्यः॥५१॥

यदि बुध वर्षस्वामी होकर और पापग्रहोंसे युक्त षष्ठस्थानमें पडे अथवा चन्द्रमा ६ वां या ८ वां हो तो श्लेष्माकी व्यथा मरणके तुल्य होवे॥५१॥

भूनन्दनोजन्मनिभानुजोवाराशिस्थितौयत्रसएवराशिः ॥
वर्षेतनुस्थश्शशिनाप्रदृष्टः शितोष्णयक्ष्मान्वितपित्तबाधा ॥५२॥

जन्मकालमें जिसमें मंगल या शनैश्चर हो यदि वही राशि वर्षकालमें वर्षलग्नमें होवे और उसपर चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो सर्दी, गर्मी, पित्त और राज्ययक्ष्माकी बाधा होवे ॥५२॥

बृहस्पतौपापयुतेष्टमस्थेसाब्जेकुजेलग्नगतेसमूर्च्छा ॥
तन्द्राभवेद्वाथकलत्रसंस्थे सिंहीसुतेऽनन्तगदंवदन्ति ॥५३॥

यदि पापयुक्त बृहस्पति अष्टम स्थानमें वर्तमान हो और चन्द्र तथा मंगल लग्नमें हो तो मूर्छा और तन्द्रा होवे, परन्तु राहु यदि कलत्र ७ स्थानमें हो तो अनन्त दुःख होवे ॥५३॥

योदुष्टखेटोजनिकण्टकस्थोवर्षेविलग्ने सचनोशुभाय ॥
मुंथाकलत्रेचरसातलेचकरोतिशूलंशनिदृष्टदेहा ॥५४॥

यदि कोई पापग्रह जन्मकालमें कण्टक अर्थात् केन्द्र १, ४, ७, १० में हो और वर्षमें लग्नमें पडे तो अशुभ होता है और यदि मुंथा कलत्र या रसातल ४ भावमें शनिकी दृष्टिमें हो तो शूल जानना ॥५४॥

सुरासुरेज्यास्पदगेमहीजेचास्तंगते शीतलताक्षिरोगः।
बुधेन्दुयुक्तेसतिकंठगंडंस्फोटादिबाधाबहुधावबोध्या॥५५॥

यदि बृहस्पति या शुक्रके गृहमें मंगल हो औ अस्त हो तो नेत्ररोग होवे और यदि बुध चन्द्रयुत हो तो गलगण्ड और फोडेकी बाधा होवे॥५५॥

इति रिपुभावः।

वर्षाधिराजेभृगुजेमनोज्ञेजायाविलासादिसुखानिनूनम्॥
विशेषतोजीवदशाधिकारीक्ष्माजेक्षणात्प्रीतिरलम्मिथः स्यात्॥५६॥

यदि शुक्र बली होकर वर्षपति हो और सप्तमभाव पडे तो स्त्रीविलाससुख अधिक जानना और यदि कदाचित् शुक्र जीवके हद्दामें हो और मंगलकी दृष्टि हो तो अत्यन्त प्रीतिवृद्धि हो॥५६॥

बालविलासान्बुधदृग्युतिभ्यांजारंजरत्याशनियोगदृग्भ्याम्॥
वागीशयोगेनलसद्विभूषांनवीनयोषांलभतेमनुष्यः॥५७॥

यदि बुधकी दृष्टियोग हो तो बालविलाससुख हो और यदि शनिका योग वा दृष्टि हो तो बूढ़ी स्त्रीसे व्यभिचार होवे और यदि बृहस्पतिका योग होवे तो सुन्दर नवीन भूषणयुत स्त्री मिले॥५७॥

यदि प्रसूतिलग्नका स्वामी बली होकर वर्षमें कलत्र स्थान ७ में पडे तो स्त्रीसे सुख हो और यदि शुक्र बली होकर उसी लग्नमें हो अथवा कलत्र सहमेश्वर होकर वर्ष लग्नमें पडे तो विवाह होवे ॥५८॥

चेदिन्दुसूनुर्भृगुनन्दनस्यस्थानंगतस्त्रीसुखदोनिरुक्तः।
कलत्रनाथोबलवान्कलत्रे कलत्रकेलिंविपुलांकरोति ॥५९॥

यदि बुध-शुक्रके स्थानमें हो तो स्त्रीको सुख होवे और यदि कलत्रस्वामी बली होकर कलत्र ७ स्थानमें वर्तमान हो तो स्त्रीको अत्यन्त सुख होवे ॥५९॥

भूनन्दनश्चेद्भृगुनन्दनस्यस्थानंगतोस्तेमुथहाखलोवा ॥
खलस्यदृष्टौहिकलत्रचिंताभवेन्नितान्तंहिसुतादिकानाम् ॥६०॥

यदि मंगल शुक्रके घरमें पडा हो और अस्त ७ में मुंथा वा कोई खलग्रह हो और खलग्रहकी दृष्टि हो तो पुत्रादि संतति और स्त्रीकी चिन्ता होवे ॥६०॥

बलीयसोर्लग्नकलत्रपत्योश्चेन्मूथशीलंकिलयोषिदाप्तिः ॥
कान्तानिकेतंप्रविलोकयेद्वाकविर्नवीनप्रमदाप्तिकृत्स्यात् ॥६१॥

यदि लग्नपति और कलत्र ७ पति बली होकर परस्पर इत्थशाल करें तो स्त्रीप्राप्ति होवे और यदि

शुक्रकी दृष्टिही हो तो नवीन स्त्रीप्राप्ति जानना ॥६१॥

इति सप्तमभावः ॥

भौमेसमास्वामिनिहीनवीर्येकुर्याद्विघातंशशिभेग्निभीतिम् ॥
नृराशिगेचौरनरेन्द्रबाधाभौमेष्टमेचन्द्रयुतेऽप्यरिष्टम् ॥६२॥

यदि हीनवीर्य मंगल वर्षपति हो तो कष्ट होवे चन्द्रमाकी राशिमें पडे तो अग्नि भीती, मिथुनवे हों तो राजा या चोरकी बाधा और मंगल अष्ट हो तथा चन्द्रयुक्त हो तो भी अरिष्ट जानना ॥६२॥

विलग्नपालेनचमूथशीलंचेद्रन्ध्रपालःप्रकारोतिरिष्टम् ॥
वर्षाधिराजेष्टमभावसंस्थेभौमेनयुक्तेनिधनंगृणन्ति ॥६३॥

यदि रंध्रस्थानका स्वामी वर्षलग्नपतिके साथ इत्थशाल करै तो कुछ अरिष्ट होवे और यदि वर्षपति, अष्टमस्थान मंगलके साथ हो तो मृत्युके तुल्य योग कहना ॥६३॥

कुजहिमांशुजयुक्तदिवाकरोमृतिकरो यदिवाविषयान्तरे ॥
रविसुतेदशमोपगतेतथाज्वलनतोऽनिलतोऽपिभयं भवेत् ॥६४॥

यदि अष्टमस्थानमें मंगल, बुध और सूर्य ह तो परदेशमें मृत्यु जानना और यदि शनि दशमस्थान हो तो अग्नि और वायुका भय जानना ॥६४॥

रवियुतेकुसुतेदशमस्थिते भवतिवाहनतःपतनंविधौ ।।
कुजपदे नृपतोऽसुखमर्कजे बलयुतेम्बरगेभयमस्त्रतः ।।६५।।

यदि सूर्यके साथ मंगल दशमस्थानमें पडे तो उनकी दशामें वाहनसे गिरै और यदि चन्द्र मंगलके स्थानमें पडे तो राजासे दुःख मिले और यदि शनि बली होकर दशम होवे तो अस्त्रसे भय होवे ।।६५।।

निधनसहमतश्चेत्तत्पतीरंध्रयातो
भवतिनिधनकारीजन्मलग्नाष्टमेशौ ।।
व्ययगृहनिंधनारिस्थान
गौवर्षलग्नान्निधनविनाशावाप्तिदौतौभवेताम् ।।६६।।

यदि निधन सहमसे उसका स्वामी रंध्रस्थानमें हो तो नाश कहना और यदि जन्मलग्नेश और अष्टमेश वर्षलग्नसे द्वादश, अष्टम, षष्ठस्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें पडे हो तो मृत्यु धननाश और दुःख होवे।।६६।।

जननिधनभावेदेवदेवाधिदेव-
स्त्वधिकृतिपरिहीनोवादखेदप्रदःस्यात् ।।
यदिदनुजपुरोधावीक्षितश्चेत्तदानीं
जनयतिविजयाप्तिंकष्टतोदुष्टवर्गात् ।।६७।।

यदि जन्मसे अष्टमस्थानमें देवगुरु हो और अधिकारी न हो तो वादसे खेद हो परन्तु यदि शुक्रकी दृष्टिमें हो तो दुष्टवर्गोंसे कष्टसे विजयप्राप्ति होवे॥६७॥

वर्षपेकुजयुतेरणभीतिः प्रान्त्यसद्मनिचभूमितनूजे॥
वाग्विवादइननैधनमस्ते गोत्रशत्रुकलहःप्रबलस्यात्॥६८॥

यदि वर्षपति मंगलयुक्त हो तो रणका भय जानना और द्वादश भावमें हो तो यही फल है और अस्त ७ स्थानमें हो तो वाग्विवाद और गोत्रमें कलह होवे॥६८॥

इत्यष्टमभावः॥

विलग्नपालः किलमूथशीलंचेद्वर्षपालेनसमंकरोति॥
अचिन्तितं यानमथेत्थशाले व्यस्ते तदाचिन्तितमेवयानम्॥६९॥

यदि वर्षेश और लग्नेश इत्थशाल करें तो अचिन्तित यात्रा हो और यदि इसके विपरीत हों तो चिन्तित यात्रा जानना॥६९॥

वर्षस्वामीभूमिपश्चाथसौम्यो धर्मेसंस्थोवातृतीयेबलीयान्॥
भागीदेवाभीष्टसिद्धिश्चलंयत्कार्यंस्तब्धंबुद्धिमद्भिर्विचार्यम्॥ ७०॥

यदि वर्षस्वामी मंगल हो अथवा बुध हो और

धर्म ९ स्थानमें वर्तमान हो वा सबल होकर तृतीयस्थानमें हो तो प्रथमहीसे कार्यसिद्धि कहना और जो कार्य चल होवे उसे पुष्ट समझना।।७०।।

राज्येनुजेवावनिजेब्दराजेसत्खेचरैर्युक्तनिरीक्षमाणे।।
गुण:प्रयाणेब्दपतौकबूले धर्मत्रिगेर्के गमनोद्गमः स्यात्।।७१।।

यदि राज्य १० स्थान वा अनुज ३ स्थानमें मंगल वर्षपति होकर पडे और शुभग्रहकी दृष्टिमें हो तो यात्रामें गुण मिले और यदि धर्म ९ वा तृतीय स्थानमें रहकर वर्षेश केसाथ कबूल योगको करे तो अवश्य यात्रा हो।।७१।।

वीर्योपेतेपुण्यगेविक्रमेवा वर्षाधीशेभार्गवेमार्गसौख्यम्।।
सौम्येप्येवंतीर्थयानेभिमानोवीर्यन्यूनेदुष्टयानन्निरुक्तम्।।७२।।

यदि शुक्र वर्षाधीश होकर और बली होकर पुण्य ९ वा विक्रम ३ स्थानमें वर्तमान हो तो मार्ग सुख होवे और यदि कोई भी सौम्यग्रह ऐसा हो तो तीर्थयात्रा विषयक अभिमान हो यदि वीर्य हीन हो तो दुष्टयानप्राप्ति होवे।।७२।।

तनुपनवमयोगेस्यादकस्मात्प्रयाणं
सुकृतकृतनिवासेवाक्पतौदूरयात्रा।।

नभवतितनुजानांशोभनं भानुसूनौ
नवमभवनगामिन्यामनन्तीतिसंतः ।।७३।।

यदि नवमस्थानपति नवममें हो तो अकस्मात् यात्रा करना पडे और यदि सुकृत ९ स्थानमें बृहस्पति निवास करै तो दूर यात्रा हो और यदि नवम भवनमें शनि पडे तो सन्तानको सुख नहीं होता ।।७३।।

भौमेसमास्वामिनिकेन्द्रसंस्थे दूरेस्थितिः स्याद्भ्रमणेन नूनम् ।।
उदारसारेनवमेश्वरेवापुण्याधिसंस्थेगमनंसुखेन ।।७४।।

यदि मंगल वर्षस्वामी होकर केंद्रमें (१, ४, ७, १०) रहै तो दूरदेशमें भ्रमण करना पडे और यदि नवमेश्वर बली होकर पुण्य ९ स्थानमें वर्तमान रहै तो सुखसे यात्रा हो ।।७४।।

मार्गनामसहमेश्वरेचरे तत्रगेचनवमाश्रितेथवा ।।
मार्गसौख्यमुपयातिमानवोदुःखमेतिविमलेखलाकुले ।।७५।।

यदि मार्ग सहमका स्वामी स्वीय स्थानमें हो अथवा नवममें हो तो मार्गसुख हो और यदि खलयुक्त हो तो दुःख हो ।।७५।।

इति नवमभावः।

वर्षेशेदशमस्थितेबलयुतेराज्याप्तिहर्षोदयः
तस्माच्चापरकेन्द्रगेशुभयुते स्थानान्तराप्तिर्नृणाम् ॥
सूर्येतुर्यगतेतुवीर्यसहिते पूर्वाधिकारागमः
कामंलाभगतेथवाभवपतेस्सञ्जायतेगौरवम् ॥७६॥

यदि बली होकर वर्षेश दशम स्थानमें हो तो राज्यप्राप्ति हर्षवृद्धि होवे और यदि केन्द्र १, ४, ७, १० में ही और शुभयुक्त हो तो स्थानान्तरकी प्राप्ति होवे और यदि सूर्य बली होकर चतुर्थ स्थानमें पडे तो प्रथमका छुटा भया अधिकार मिलै और यदि लाभ ११ स्थानमें हो तो राजा मान करे और द्रव्य प्राप्ति होवे ॥७६॥

सिंहेप्रसूतौसमुदारसारो दिवाकरोराज्यकरोनराणाम् ॥
नीचस्थितःपापयुतः खयातः पृथ्वीपतेर्बंधनमातनोति ॥७७॥

यदि सिंहलग्न पंचम हो ओर उसमें सूर्य बली होकर पडे तो राज्यपदवीको प्राप्त करे और यदि नीच ७ के होकर दशम स्थित हो तो बंधनका भय होवे ॥७७॥

इलासुतस्थानगतः कलावा-
न्स्थलान्तरेसौसकलार्थदः स्यात् ॥

लाभस्थितोलाभपतिर्नितान्तं
विद्याप्रसङ्गेनकरोतिलाभम् ।।७८।।

यदि मंगलके स्थानमें चन्द्रमा पडे तो वह दूसरे स्थानपर संपूर्ण मनोरथ देता है और यदि लाभस्वामी लाभस्थानमें हो तो विद्याप्रसङ्गसे धनप्राप्ति जानना ।।७८।।

नृपतिसहमराजे राज्यभाजिप्रवीर्यं
शुभयुजिकुलतुल्योराज्यलाभोनराणाम् ।।
गगनतनुपयोश्चेत्स्यात्कबूलाख्ययोगः
प्रभवतिपरदेशेराज्यसौख्योपलब्धिः ।।७९।।

यदि राज्यसहमका स्वामी बली होकर और शुभयुक्त होकर राज्य १० स्थानमें पडे तो कुलानुसार राज्यलाभ कहना और यदि दशम स्वामी और लग्नपतिसे कंबूल योग होवे तो परदेशमें राज्यसुख कहना ।।७९।।

नृपतिसहमनाथोवाब्दपोभानुनाचेत्
रचयतिमुथशीलंराज्यलब्धिस्तदानीम् ।।
ननु तनुपतिनाचेद्राज्यपोवेत्थशालं,
कलयति फलमूह्यं पूर्ववत्सर्वमेव ।।८०।।

यदि राज्यसहमेश अथवा वर्षपति सूर्यसे इत्थशाल करे तो उस वर्षमें राज्यलाभ कहना और यदि राज्यस्वामी और लग्नस्वामीका इत्थशाल हो तोभी यही फल जानना ॥८०॥

इति दशमभावः।

वर्षस्वामीयामिनीशात्मजश्चेद्
द्रव्यस्थानेसद्वणिक्कर्मणस्स्वम् ॥
वित्तस्थानेलग्नगश्चेत्कबूलं
कुर्याद्वर्षस्वामिनार्थाधिपःस्यात् ॥८१॥

यदि वर्षस्वामी बुध हो और द्रव्यस्थानमें हो तो अच्छे वाणिज्यसे द्रव्यलाभ जानना और यदि मंगल वित्तस्थानमें अथवा लग्नमें होकर वर्षस्वामीसे कबूल करे तो भी यही फल है॥८१॥

खलैर्विहीनाबलिनश्शुभाख्या
लाभालयेलाभकराभवन्ति ॥
हानिस्सपापास्तगलाभनाथे,
दण्डस्तथाचित्रशिखण्डिसूनौ ॥८२॥

यदि खलरहित शुभग्रह बली होकर लाभस्थानमें पडें तो वे लाभकारक होते हैं और यदि लाभनाथ

पापग्रहसे युक्त या अस्त हो तो हानि और बृहस्पती हो तो दुःख जानना ॥८२॥

गगनभवनसंस्थामुन्थहावर्षकाले
लिखनपठनलाभंसत्त्वयुक्ताकरोति ॥
निजपतिसहितासारन्ध्रशत्रुव्ययस्था
वितरति बहुविघ्नं प्राप्तिकालेनराणाम् ॥८३॥

यदि वर्षकालमें मुन्था दशमस्थानमें बली होकर वर्तमान रहे तो लिखन-पठन विषयक लाभ होवे और यदि वही अपने स्वामीके साथ रहकर रंध्र ८, शत्रु ६, व्यय १२ स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें हो तो कार्य प्राप्तिके समय विघ्न होवे ॥८३॥

इत्येकादशः ।

मनुष्यराशौव्ययभावसंस्थे,
वर्षाधिराजे भृगुजेक्षितेस्यात् ॥
भृत्याश्रितानांचचतुष्पदस्थे
चतुष्पदानांविबलेविशेषात् ॥८४॥

यदि मिथुनराशि व्यय १२ स्थानमें हो और शुक्रकी दृष्टिमें हो तो भृत्योंको दुःख होवे और यदि चतुष्पद राशि इसी स्थानमें हो तो चतुष्पादोंको दुःख हो ॥८४॥

व्ययालयेवानिधनालयेवाबली समेशोजलजेशसूनुः।
जलाशयंसन्निलयंद्रुमाणामारोपणंसौम्ययुतः करोति॥८५॥

यदि सौम्ययुक्त शनि व्यय १२ अथवा निधन ८ स्थानमें हो तो जलाशय, मकान, वाटिकादि बनाने और आरोपण करनेमें उत्साह बढै॥८५॥

तडागकूपोत्तमवापिकानामुत्पादनंसुन्दरमन्दिराणाम्॥
आरोपणंचारुमहीरुहाणांवाचस्पतौवर्षपतौव्ययस्थे॥८६॥

यदि बृहस्पति वर्षपति होकर व्ययस्थानमें पडे तो तडाग उत्तम कूप वाटिका और सुन्दर मन्दिर आदिके बनवानेका उत्साह होवे॥८६॥

गगनवेश्मनिभानुसुतान्वितेऽवनिसुतेब्दपतौपशुनाशनम्॥
द्विषिचतुष्पदराशिगतेरवावनुचरैस्सहितो बहुदुःखदः॥८७॥

यदि गगन १० स्थानमें सूर्यपुत्र हो और मंगल वर्षपति हो तो पशुओंका नाश हो और यदि किसी चतुष्पद राशिपर सूर्य शत्रु स्थानमें हो तो अनुचरसहित सबको अत्यन्त कष्टहो॥८७॥

शुक्रकी दृष्टिही हो तो नवीन स्त्रीप्राप्ति जानना ॥६१॥

इति सप्तमभावः ॥

भौमेसमास्वामिनिहीनवीर्येकुर्याद्विघातंशशिभेग्निभीतिम् ॥
नृराशिगेचौरनरेन्द्रबाधाभौमेष्टमेचन्द्रयुतेऽप्यरिष्टम् ॥६२॥

यदि हीनवीर्य मंगल वर्षपति हो तो कष्ट होवे. चन्द्रमाकी राशिमें पडे तो अग्नि भीती, मिथुनके हों तो राजा या चोरकी बाधा और मंगल अष्टम हो तथा चन्द्रयुक्त हो तो भी अरिष्ट जानना ॥६२॥

विलग्नपालेनचमूथशीलंचेद्रन्ध्रपालःप्रकारोतिरिष्टम् ॥
वर्षाधिराजेष्टमभावसंस्थेभौमेनयुक्तेनिधनंगृणन्ति ॥६३॥

यदि रंध्रस्थानका स्वामी वर्षलग्नपतिके साथ इत्थशाल करै तो कुछ अरिष्ट होवे और यदि वर्षपति, अष्टमस्थानमें मंगलके साथ हो तो मृत्युके तुल्य योग कहना ॥६३॥

कुजहिमांशुजयुक्तदिवाकरोमृतिकरो यदिवाविषयान्तरे ॥
रविसुतेदशमोपगतेतथाज्वलनतोऽनिलतोऽपिभयं भवेत् ॥६४॥

यदि अष्टमस्थानमें मंगल, बुध और सूर्य हो तो परदेशमें मृत्यु जानना और यदि शनि दशमस्थानमें हो तो अग्नि और वायुका भय जानना ॥६४॥

रवियुतेकुसुतेदशमस्थिते भवतिवाहनतःपतनंविधौ ॥
कुजपदे नृपतोऽसुखमर्कजे बलयुतेम्बरगेभयमस्त्रतः ॥६५॥

यदि सूर्यके साथ मंगल दशमस्थानमें पडे तो उनकी दशामें वाहनसे गिरै और यदि चन्द्र मंगलके स्थानमें पडे तो राजासे दुःख मिले और यदि शनि बली होकर दशम होवे तो अस्त्रसे भय होवे ॥६५॥

निधनसहमतश्चेत्तत्पतीरंध्रयातो
भवतिनिधनकारीजन्मलग्नाष्टमेशौ ॥
व्ययगृहनिंधनारिस्थान
गौवर्षलग्नान्निधनविनाशावाप्तिदौतौभवेताम् ॥६६॥

यदि निधन सहमसे उसका स्वामी रंध्रस्थानमें हो तो नाश कहना और यदि जन्मलग्नेश और अष्टमेश वर्षलग्नसे द्वादश, अष्टम, षष्ठस्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें पडे हो तो मृत्यु धननाश और दुःख होवे ॥६६॥

जननिधनभावेदेवदेवाधिदेव-
स्त्वधिकृतिपरिहीनोवादखेदप्रदःस्यात् ॥
यदिदनुजपुरोधावीक्षितश्चेत्तदानीं
जनयतिविजयाप्तिंकष्टतोदुष्टवर्गात् ॥६७॥

यदि जन्मसे अष्टमस्थानमें देवगुरु हो और अधिकारी न हो तो वादसे खेद हो परन्तु यदि शुक्रकी दृष्टिमें हो तो दुष्टवर्गौंसे कष्टसे विजयप्राप्ति होवे॥६७॥

वर्षपेकुजयुतेरणभीतिः प्रान्त्यसद्मनिचभूमितनूजे॥
वाग्विवादइननैधनमस्ते गोत्रशत्रुकलहःप्रबलस्यात्॥६८॥

यदि वर्षपति मंगलयुक्त हो तो रणका भय जानना और द्वादश भावमें हो तो यही फल है और अस्त ७ स्थानमें हो तो वाग्विवाद और गोत्रमें कलह होवे॥६८॥

इत्यष्टमभावः॥

विलग्नपालः किलमूथशीलंचेद्वर्षपालेनसमंकरोति॥
अचिन्तितं यानमथेत्थशाले व्यस्ते तदाचिन्तितमेवयानम्॥६९॥

यदि वर्षेश और लग्नेश इत्थशाल करें तो अचिन्तित यात्रा हो और यदि इसके विपरीत हों तो चिन्तित यात्रा जानना॥६९॥

वर्षस्वामीभूमिपश्चाथसौम्यो धर्मेसंस्थोवातृतीयेबलीयान्॥
भागीदेवाभीष्टसिद्धिश्चलंयत्कार्यंस्तब्धंबुद्धिमद्भिर्विचार्यम्॥ ७०॥

यदि वर्षस्वामी मंगल हो अथवा बुध हो और

धर्म ९ स्थानमें वर्तमान हो वा सबल होकर तृतीयस्थानमें हो तो प्रथमहीसे कार्यसिद्धि कहना और जो कार्य चल होवे उसे पुष्ट समझना ॥७०॥

राज्येनुजेवावनिजेब्दराजेसत्खेचरैर्युक्तनिरीक्षमाणे ॥
गुण:प्रयाणेब्दपतौकबूले धर्मत्रिगेकें गमनोद्गमः स्यात् ॥७१॥

यदि राज्य १० स्थान वा अनुज ३ स्थानमें मंगल वर्षपति होकर पडे और शुभग्रहकी दृष्टिमें हो तो यात्रामें गुण मिले और यदि धर्म ९ वा तृतीय स्थानमें रहकर वर्षेश केसाथ कबूल योगको करे तो अवश्य यात्रा हो ॥७१॥

वीर्योपेतेपुण्यगेविक्रमेवा वर्षाधीशेभार्गवेमार्गसौख्यम् ॥
सौम्येप्येवंतीर्थयानेभिमानोवीर्यन्यूनेदुष्टयानन्निरुक्तम् ॥७२॥

यदि शुक्र वर्षाधीश होकर और बली होकर पुण्य ९ वा विक्रम ३ स्थानमें वर्तमान हो तो मार्ग सुख होवे और यदि कोई भी सौम्यग्रह ऐसा हो तो तीर्थयात्रा विषयक अभिमान हो यदि वीर्य हीन हो तो दुष्टयानप्राप्ति होवे ॥७२॥

तनुपनवमयोगेस्यादकस्मात्प्रयाणं
सुकृतकृतनिवासेवाक्पतौदूरयात्रा ॥

नभवतितनुजानांशोभनं भानुसूनौ
नवमभवनगामिन्यामनन्तीतिसंतः ॥७३॥

यदि नवमस्थानपति नवममें हो तो अकस्मात् यात्रा करना पडे और यदि सुकृत ९ स्थानमें बृहस्पति निवास करै तो दूर यात्रा हो और यदि नवम भवनमें शनि पडे तो सन्तानको सुख नहीं होता ॥७३॥

भौमेसमास्वामिनिकेन्द्रसंस्थे दूरेस्थितिः स्याद्भ्रमणेन नूनम् ॥
उदारसारेनवमेश्वरेवापुण्याधिसंस्थेगमनंसुखेन ॥७४॥

यदि मंगल वर्षस्वामी होकर केंद्रमें (१, ४, ७, १०) रहै तो दूरदेशमें भ्रमण करना पडे और यदि नवमेश्वर बली होकर पुण्य ९ स्थानमें वर्तमान रहै तो सुखसे यात्रा हो ॥७४॥

मार्गनामसहमेश्वरेचरे तत्रगेचनवमाश्रितेथवा ॥
मार्गसौख्यमुपयातिमानवोदुःखमेतिविमलेखलाकुले ॥७५॥

यदि मार्ग सहमका स्वामी स्वीय स्थानमें हो अथवा नवममें हो तो मार्गसुख हो और यदि खलयुक्त हो तो दुःख हो ॥७५॥

इति नवमभावः ।

वर्षेशेदशमस्थितेबलयुतेराज्याप्तिहर्षोदयः
तस्माच्चापरकेन्द्रगेशुभयुते स्थानान्तराप्तिर्नृणाम्।।
सूर्येतुर्यगतेतुवीर्यसहिते पूर्वाधिकारागमः
कामंलाभगतेथवाभवपतेस्सञ्जायतेगौरवम्।।७६।।

यदि बली होकर वर्षेश दशम स्थानमें हो तो राज्यप्राप्ति हर्षवृद्धि होवे और यदि केन्द्र १, ४, ७, १० में ही और शुभयुक्त हो तो स्थानान्तरकी प्राप्ति होवे और यदि सूर्य बली होकर चतुर्थ स्थानमें पडे तो प्रथमका छुटा भया अधिकार मिलै और यदि लाभ ११ स्थानमें हो तो राजा मान करे और द्रव्य प्राप्ति होवे।।७६।।

सिंहेप्रसूतौसमुदारसारो दिवाकरोराज्यकरोनराणाम्।।
नीचस्थितःपापयुतः खयातः पृथ्वीपतेर्बंधनमातनोति।।७७।।

यदि सिंहलग्न पंचम हो ओर उसमें सूर्य बली होकर पडे तो राज्यपदवीको प्राप्त करे और यदि नीच ७ के होकर दशम स्थित हो तो बंधनका भय होवे।।७७।।

इलासुतस्थानगतः कलावा-
न्स्थलान्तरेसौसकलार्थदः स्यात्।।

लाभस्थितोलाभपतिर्नितान्तं
विद्याप्रसङ्गेनकरोतिलाभम् ॥७८॥

यदि मंगलके स्थानमें चन्द्रमा पडे तो वह दूसरे स्थानपर संपूर्ण मनोरथ देता है और यदि लाभस्वामी लाभस्थानमें हो तो विद्याप्रसङ्गसे धनप्राप्ति जानना ॥७८॥

नृपतिसहमराजे राज्यभाजिप्रवीर्यं
शुभयुजिकुलतुल्योराज्यलाभोनराणाम् ॥
गगनतनुपयोश्चेत्स्यात्कबूलाख्ययोग:
प्रभवतिपरदेशेराज्यसौख्योपलब्धि: ॥७९॥

यदि राज्यसहमका स्वामी बली होकर और शुभयुक्त होकर राज्य १० स्थानमें पडे तो कुलानुसार राज्यलाभ कहना और यदि दशम स्वामी और लग्नपतिसे कंबूल योग होवे तो परदेशमें राज्यसुख कहना ॥७९॥

नृपतिसहमनाथोवाब्दपोभानुनाचेत्
रचयतिमुथशीलंराज्यलब्धिस्तदानीम् ॥
ननु तनुपतिनाचेद्राज्यपोवेत्थशालं,
कलयति फलमूह्यं पूर्ववत्सर्वमेव ॥८०॥

यदि राज्यसहमेश अथवा वर्षपति सूर्यसे इत्थशाल करे तो उस वर्षमें राज्यलाभ कहना और यदि राज्यस्वामी और लग्नस्वामीका इत्थशाल हो तोभी यही फल जानना ॥८०॥

इति दशमभावः।

वर्षस्वामीयामिनीशात्मजश्चेद्
द्रव्यस्थानेसद्वणिक्कर्मणस्स्वम् ॥
वित्तस्थानेलग्नगश्चेत्कबूलं
कुर्याद्वर्षस्वामिनार्थाधिपःस्यात् ॥८१॥

यदि वर्षस्वामी बुध हो और द्रव्यस्थानमें हो तो अच्छे वाणिज्यसे द्रव्यलाभ जानना और यदि मंगल वित्तस्थानमें अथवा लग्नमें होकर वर्षस्वामीसे कबूल करे तो भी यही फल है ॥८१॥

खलैर्विहीनाबलिनश्शुभाख्या
लाभालयेलाभकराभवन्ति ॥
हानिस्सपापास्तगलाभनाथे,
दण्डस्तथाचित्रशिखण्डिसूनौ ॥८२॥

यदि खलरहित शुभग्रह बली होकर लाभस्थानमें पड़ें तो वे लाभकारक होते हैं और यदि लाभनाथ

पापग्रहसे युक्त या अस्त हो तो हानि और बृहस्पती हो तो दुःख जानना ॥८२॥

गगनभवनसंस्थामुन्थहावर्षकाले
लिखनपठनलाभंसत्त्वयुक्ताकरोति ॥
निजपतिसहितासारन्ध्रशत्रुव्ययस्था
वितरति बहुविघ्नं प्राप्तिकालेनराणाम् ॥८३॥

यदि वर्षकालमें मुन्था दशमस्थानमें बली होकर वर्तमान रहे तो लिखन-पठन विषयक लाभ होवे और यदि वही अपने स्वामीके साथ रहकर रंध्र ८, शत्रु ६, व्यय १२ स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें हो तो कार्य प्राप्तिके समय विघ्न होवे ॥८३॥

इत्येकादशः ।

मनुष्यराशौव्ययभावसंस्थे,
वर्षाधिराजे भृगुजेक्षितेस्यात् ॥
भृत्याश्रितानांचचतुष्पदस्थे
चतुष्पदानांविबलेविशेषात् ॥८४॥

यदि मिथुनराशि व्यय १२ स्थानमें हो और शुक्रकी दृष्टिमें हो तो भृत्योंको दुःख होवे और यदि चतुष्पद राशि इसी स्थानमें हो तो चतुष्पादोंको दुःख हो ॥८४॥

व्ययालयेवानिधनालयेवाबली समेशोजलजेशसूनुः।
जलाशयंसन्निलयंद्रुमाणामारोपणंसौम्ययुतः करोति॥८५॥

यदि सौम्ययुक्त शनि व्यय १२ अथवा निधन ८ स्थानमें हो तो जलाशय, मकान, वाटिकादि बनाने और आरोपण करनेमें उत्साह बढै॥८५॥

तडागकूपोत्तमवापिकानामुत्पादनंसुन्दरमन्दिराणाम्॥
आरोपणंचारुमहीरुहाणांवाचस्पतौवर्षपतौव्ययस्थे॥८६॥

यदि बृहस्पति वर्षपति होकर व्ययस्थानमें पडे तो तडाग उत्तम कूप वाटिका और सुन्दर मन्दिर आदिके बनवानेका उत्साह होवे॥८६॥

गगनवेश्मनिभानुसुतान्वितेऽवनिसुतेब्दपतौपशुनाशनम्॥
द्विषिचतुष्पदराशिगतेरवावनुचरैस्सहितो बहुदुःखदः॥८७॥

यदि गगन १० स्थानमें सूर्यपुत्र हो और मंगल वर्षपति हो तो पशुओंका नाश हो और यदि किसी चतुष्पद राशिपर सूर्य शत्रु स्थानमें हो तो अनुचरसहित सबको अत्यन्त कष्टहो॥८७॥

प्राचांविचारानुमतंनितान्तंमयोदितंद्वादशभावजातम्॥
फलंबलंवीक्ष्यनभश्चराणांतद्याजेनीयंहिदशासुतेषाम्॥८८॥

मैंने प्राचीनोंका मत विचार कर यह द्वादशभावफल निरूपण किया और यह उनके बलाबलानुमानसे उन्ही ग्रहोंकी दशामें फल कहना चाहिये॥८८॥

इति श्रीताजिकभूषणे द्वादशभावफलाध्याय:॥

इतीरयित्वाखिलभावजातफलानिसत्कोमलवाग्विलासै:॥
वक्ष्येधुनाविष्णुपदास्पदानां पृथक्पृथग्भावफलानिनूनम्॥१॥

इस प्रकारसे द्वादश भावका फल कोमल शब्दोंसे निरूपण कर अब पृथक् पृथक् भाव गत ग्रहोंका फल निरूपण करनेका प्रारंभ करता हूँ॥१॥

स्याच्छिरोवदनलोचनपीडायातिकान्तितनुतामपिकान्ता॥
चिन्तयातितनुतातनुरुच्चैर्हायनेदिनपतौतनुसंस्थे॥२॥

यदि वर्षमें सूर्य तनु १ स्थानमें हो तो मस्तक, मुख और नेत्रमें पीडा और स्त्री भी दुःखित हो और चिन्तासे शरीर अति दुर्बल हो॥२॥

चौरवैरिनिकराच्चनरेशादग्निनाभवतिभीतिरतीवस्या
त्कुटुम्बकलह: किलनित्यंवत्सरेदिनकरेधनसंस्थे॥३॥

यदि वर्षमें धन २ स्थानमें सूर्य हो तो चौर, शत्रु, राजा और अग्निसे बहुत भय हो और नित्य कुंटुम्बमें कलह हो॥३॥

राजमानकनकागमनाद्यैर्हृष्टताचपरिपुष्टिरपीह॥
कार्यसाधनमथोविजयतेभानुमाननुयदानुजसंस्थः॥४॥

यदि सूर्य अनुज ३ स्थानमें हो तो राजासे मान, धनागम, शरीरसुख और कार्यसिद्धि भी हो॥४॥

भूमिपालकुलभीतिकृशत्वंवैरिभावमुपयाति सुहृद्भिः॥
वाहनाद्भयमपीहनितान्तं भूतलकमलकाननकान्ते॥५॥

यदि सूर्य भूतल ४ स्थानमें हो तो राजकुलसे भय, मित्रोंसे वैर और दौर्बल्यता, सवारीसे भय बहुत प्राप्त हो॥५॥

पुत्रमित्रपरिवारकलत्रोत्पन्नपीडनविहीनसुखस्स्यात्॥
मानवोमतिधनैः परिशून्यः पद्मकाननपतौ सुतसंस्थे॥६॥

यदि सुतस्थानमें सूर्य हो तो पुत्र मित्र कुटुम्ब स्त्राद्वारा दुःख हो और मनुष्य बुद्धि धनसे रहित हो॥६॥

वैभवं हि लभते क्षितिपालात् कामिनीविपुलकेलिविलासम्॥
शत्रुवर्गविजयोधनवृद्धिर्वैरिमन्दिरगतस्सविताब्दे॥७॥

यदि सूर्य वर्षमें शत्रु ६ स्थानमें हो तो राजासे लाभ स्त्रीसुख भोगादि शत्रुवोंसे जय धनवृद्धि हो॥७॥

बस्तिलोचनशिरःपरिपीडायानमागमनमत्र विचित्रम्॥
हायनेदिनपतौमदसंस्थेकामिनीजनमनःपरितापः॥८॥

यदि सूर्य मद ७ स्थानमें हो तो पेडू, नेत्र, शिरमें पीडा और उत्तम सवारी और स्त्रियोंको दुःख होय॥८॥

पित्तसम्भवविकारशरीरेनेत्र रुक्परिभवेन च दुःखम्॥
भूमिपालगरलज्वलनाद्यैर्व्यालतोपिभयमष्टमगेर्के॥९॥

यदि सूर्य अष्टमस्थानमें हो तो शरीरमें पित्तरोग, नेत्ररोग और परिभवसे दुःख हो और राजा अग्नि विष और सर्पसे भय हो॥९॥

धर्म्मकर्म्मविगताभिरुचित्वंचिन्तयाचविमतित्वमतीव॥
संस्थितेनवमधाम्निचमित्रेमित्रपुत्रककलत्ररतिस्स्यात्॥१०॥

यदि सूर्य नवमस्थानमें हो तो धर्मकर्म्मसे विरुद्ध बुद्धि और चिन्तासे कुबुद्धि और मित्र, पुत्र, कलत्रमें प्रीति हो॥१०॥

राजगौरवयशस्सुखवित्तन्नित्यमेवचयतामुपयाति ॥
कार्यसिद्धिरपिबुद्धिविधानादम्बरेऽम्बरमणौरमणीये ॥११॥

यदि सूर्य अम्बर १० स्थानमें हो तो राजासे मान, यश, सुख, धन, नित्य वृद्धिको प्राप्त हो और बुद्धिके द्वारा सर्व कार्यसिद्धि होय ॥११॥

दद्यात्सम्यग्भाग्यमारोग्यपूर्वं
हर्षोत्कर्षम्पौरुषंशत्रुनाशम् ॥
क्षोणीपालात्प्राप्तिमर्थागमञ्च
प्राप्तिप्राप्तस्सप्तसप्तिर्द्धनाप्तिम् ॥१२॥

यदि सूर्य ११ स्थानमें हो तो आरोग्यता, हर्ष, उत्साह, पौरुष, शत्रुनाश और राजासे धनप्राप्ति और धनागम हो ॥१२॥

वैरम्मित्रैर्नेत्रपीडातिगाढापित्तोत्पत्तिः स्याद्विपत्तिर्धनस्य ॥
नप्राशस्त्यस्यापिवाप्तिःकदाचिद्वर्षाविशेद्वादशे द्वादशात्मा ॥१३॥

यदि वर्षकालमें सूर्य १२ स्थानमें हो तो मित्रसे वैर, नेत्रमें रोग और गाढ पित्तकी उत्पत्ति और धनका दुःख प्रशंसासे रहित हो ॥१३॥

इति सूर्यभावफलानि ।

किरणपूरणता हि यथायथा भवतिशीतकरेशुभतातथा॥
अथतथैवमयूखविहीनता हिमकरेऽतितरां परिदुष्टता॥१४॥

जैसे जैसे चन्द्रमा अंशोंमें अधिक होता है उतना अधिक शुभ कहना और जैसे जैसे क्षीण वैसेही फल दुष्ट जानना॥१४॥

श्वासारिबाधाबहुधानराणांतथाविकारंनयनाननेषु॥
द्रव्यागमञ्चान्यतमंकृशत्वंहोरागतश्शीतकरः करोति॥१५॥

यदि चन्द्रमा लग्नमें हो तो श्वासरोग, शत्रु बाधा नेत्रविकार और मुख विकार हो द्रव्यप्राप्ति और शरीरको दुर्बलताभी होवे॥१५॥

स्वजनगौरवताविमलामतिः प्रतिदिनंसितवस्तुसमागमम्॥
धनगतःकुरुते धनसंचयं हिमकरोन करोतिरिपूदयम्॥१६॥

यदि चन्द्रमा धन २ भावगत हो तो आत्मीय जनोंका गौरव, प्रतिदिनसे वस्तुकी प्राप्ति, धनसंचय और शत्रुनाश हो॥१६॥

द्रव्यलाभविविधोत्सवपूर्वं गर्वितारिपरिहारविभुत्वम्॥
धर्मकर्मणिरतिंसहजस्थस्सम्प्रयच्छतिनृणांहरिणांकः॥१७॥

यदि चन्द्रमा सहज ३ स्थानमें हो तो द्रव्यलाभ अनेक प्रकारके उत्सव गर्वित शत्रुका नाश पदप्राप्ति और धर्मकर्ममें प्रीति बढे॥१७॥

तुरगयुवतिसौख्यंगोमहिष्यादितो वा
निजजनधनलाभंक्षेत्रपुत्रोन्नतिंच॥
जनयतिमनुजानांनूनमानन्दपूरं
हरिणकिरणमालीभूतलस्थानशाली॥१८॥

यदि चन्द्रमा भूतल ४ स्थानमें हो तो अश्व, स्त्रीसुख, गौ वा भैंससे सुख, बन्धुलाभ, क्षेत्र और पुत्रकी वृद्धि और अनेक प्रकारके आनन्द उत्पन्न हो॥१८॥

भूमिपालकुलतोविपुलाप्तिं कामिनीविलसितानिनितान्तम्॥
बुद्धिगौरवजयोत्सववृद्धिं सम्प्रयच्छतिसुतेऽमृतरश्मिः॥१९॥

यदि सुत ५ स्थानमें चन्द्रमा हो तो राजद्वारा अच्छी धनप्राप्ति हो, स्त्रीविलाससुख हो, बुद्धिवृद्धि हो, शत्रुपराजय, उत्सववृद्धि आदि सब होवें॥१९॥

श्लेष्मवातजनितामतिबाधां बांधवैश्चविदधातिविवादम्॥
तस्कराच्चनृपतेर्दृढपीडां वैरिवेश्मनिनिशापतिरेषः॥२०॥

यदि चन्द्रमा वैरि ६ स्थानमें हो तो श्लेष्माकी बाधा, वातबाधा, बांधववर्गमें परस्पर विवाद, चोर और राजासे भय होवे॥२०॥

राजमानजनगौरवयुक्तं विक्रयक्रयकलत्रजसौख्यम्॥
द्रव्यलाभसुलभामपिलक्ष्मीमिन्दुरिन्दुवदनासदनस्थः॥२१॥

यदि चन्द्रमा इन्दुवदना (स्त्री) ७ स्थानमें पडे तो प्रतिष्ठाकी वृद्धि हो, क्रमविक्रयमें सुख हो, स्त्रीसुख हो और लक्ष्मी प्राप्त होवे॥२१॥

नानानर्थोर्थव्ययोव्यर्थएवस्वल्पानन्दोमन्दबुद्धित्वमत्र॥
गात्रेकार्श्यंनेत्ररुक्श्लेष्मबाधारध्रेचन्द्रेप्रोक्तमेतन्मुनीन्द्रैः॥२२॥

यदि चन्द्रमा रन्ध्र ८ स्थानमें हो तो नाना प्रकारके अनर्थ और द्रव्यव्यय होवे, आनन्दकी हानि हो, बुद्धि मन्द हो, शरीरमें दुर्बलता, नेत्रोंमें रोग, श्लेष्माकी बाधा होवे ऐसा मुनिन्द्रोंका मत है॥२२॥

सुकृतबुद्धिसमृद्धिविवर्द्धनं ननुधनागमनादिकमादिशेत्।
कुमुदकाननजीवनदानदे नवमधामसमागममागते॥२३॥

यदि चन्द्रमा नवम ९ स्थानमें हो तो सुकर्ममें बुद्धि बढे, धनकी प्राप्ति आदि हो॥२३॥

लाभो भवेद्भूमिपतेस्सकाशात्कलत्रमित्रान्वितमत्रसौख्यम् ॥
विपक्षपक्षक्षयदक्षएववर्षेहिमांशुर्दशमाश्रितश्चेत् ॥२४॥

यदि वर्षमें चन्द्रमा १० दशम स्थानमें पडे तो राजद्वारा लाभ होवे, स्त्री और मित्रद्वारा सुख हो और शत्रुनाश अवश्य हो ॥२४॥

श्वेतवस्तुकृतलब्धिमनूनांसन्मतिं वितनुतेननुनित्यम् ॥
कुंजराम्बररतुरंगमलाभंलाभवेश्मनिनिशाकर एषः ॥२५॥

यदि चन्द्रमा लाभ ११ स्थानमें पडे तो श्वेतवस्तु मुक्ता आदिका लाभ हो, सुबुद्धि हो, हस्ती, वस्त्र और अश्व आदिकी प्राप्ति होवे ॥२५॥

नेत्ररुग्रिपुभयंधनव्ययंनित्यमेवकलहन्निजालये ॥
चंचलंकिलमनस्समादिशेद्द्वादशेशशिनिवेश्मनिस्थिते ॥२६॥

यदि द्वादश १२ स्थानमें चन्द्रमा हो तो नेत्ररोग, शत्रुभय, धनव्यय और घरमें नित्य कलह हो और मन चंचल रहे ॥२६॥

इति चन्द्रभावफलनि ॥

मौलौवक्रेनेत्रयोश्चापिबाधा हानिर्नूनंस्वालयेवाकलिःस्यात् ॥
रक्तपित्ताद्दोहिनोदेहकार्श्यंधात्रीपुत्रोमूर्तिवर्तीयदाहि ॥२७॥

यदि मंगल मूर्ति १ में हो तो शिर, मुख और नेत्रमें पीडा हो, हानि हो, घरमें कलह हो और रक्त, पित्त विकारसे शरीर दुर्बल रहै॥२७॥

भूपालचौरानलभीतिरुग्रा व्यग्रामनोवृत्तिरपीष्टकृष्टा।
दृशोश्च बाधाबहुधानराणामुक्तंपुराणैर्धरणीसुतेऽर्थे॥२८॥

यदि मंगल अर्थ २ स्थानमें हो तो राजा, चोर और अग्निकी बडी भीति होवे, चित्त चंचल रहे, मनोरथ न पुरे हों, नेत्रोंमें बहुत प्रकारकी बाधा होवै यह प्राचीन आचार्योंने कहा है॥२८॥

मानंधनंशत्रुविनाशनंचमहोत्सवारोग्यनृपप्रसादम्॥
वदेन्मनीषीविशदंविशेषात्पृथ्वीतनूजेसहजेनराणाम्॥२९॥

यदि मंगल सहज ३ स्थानमें हो तो मान और धनवृद्धि हो, शत्रुनाश हो, उत्सव बढे, आरोग्य होवे और राजा प्रसन्न हो, इत्यादी फल कहना चाहिये॥२९॥

सङ्कष्टदेशाटनकं कुटुम्बाद्वादः सुहृद्‌भ्यो हृदयेविषादः॥
चतुष्पदानान्निधनम्प्रणीतंक्षोणीसुतेभूतलभावयाते॥३०॥

यदि मंगल भूतल ४ स्थानमें हो तो कुटुम्ब

दुःख, परिभ्रमण, मित्रोंसे लडाई, चित्तमें खेद, चौपायोंका नाश हो॥३०॥

क्रोडेपीडादुर्म्मतिर्वैमनस्यस्थैरंवैरम्बन्धुवर्गैणसार्द्धम॥
अर्द्धाङ्गादेर्म्मानसे चापिदुष्टंपुत्रक्षेत्रेभूमिपुत्रेविचिन्त्यम्॥३१॥

यदि भौम पुत्र ५ स्थानमें हो तो छातीमें दर्द, कुबुद्धि, भाइयोंके साथ बहुत वैर, शरीरमें अर्धाङ्ग रोग और मन दुःखीहो॥३१॥

भूपात्प्राप्तिंशत्रुवर्गेविपत्तिम्बुद्धेर्वृद्धिम्मित्रसंवर्द्धनञ्च॥
हर्षोत्कर्षंवर्षकालेबलीयान्धात्रीपुत्रः शत्रुसंस्थः करोति॥३२॥

यदि वर्षमें धात्रीपुत्र (मङ्गल) शत्रु ६ स्थानमें हो तो राजासे लाभ, शत्रुओंको दुःख, बुद्धिकी वृद्धि, मित्रोंका उपचय और अधिक सुखी हो॥३२॥

देहेपीडागेहिनीनामसौख्यं
हानिर्देशभ्रंशतास्यान्नितान्तम्॥
शत्रोर्भीतिर्न्नीतितो वैपरीत्यं
द्यूनस्थानेनन्दनेभूतधात्र्याः॥३३॥

यदि मंगल द्यून ७ स्थानमें हो तो शरीरमें दुःख, स्त्रियोंको अशुभ हानि, देशका छूटना, शत्रुसे भय, अनीति उत्पन्न होती है॥३३॥

परिजनपरिपीडारक्तपित्तप्रकोपो
निजजनधनमानेस्वल्पतानल्पचिन्ता॥
विकलतरशरीरंदीनताऽधीरतास्या
न्निधनसदनसंस्थेलोहिताङ्गेनराणाम्॥३४॥

यदि भौम निधन ८ स्थानमें हो तो आत्मीय वर्गको दु:ख, रक्त-पित्तका जोर, अपने जन, धन और मनकी स्वल्पता, अतिचिन्ता, और शरीर अति दु:खित दीनता और धैर्यसे युक्त हो॥३४॥

पापेरतिस्यात्कलहः स्वकीयैरुद्विग्नतावैभववैपरीत्यम्॥
कान्तिक्षयश्चापिभवेन्नराणाम्भूनन्दनेधर्मनिकेतनस्थे॥३५॥

यदि भूनन्दन (मंगल) धर्म ९ स्थानमें हो तो पाप बुद्धि, स्वजनोंसे लडाई, चित्तमें उद्वेग, ऐश्वर्यहानि और दु:ख होवे॥३५॥

प्रसन्नताभूमिपतेश्चलाभोव्यापारसौभाग्यसुखानिनित्यम्॥
आरोग्यतातीवपशुप्रवृद्धिर्द्धरात्मजेराज्यपदोपपन्ने॥३६॥

यदि धरात्मज (मंगल) राज्य १० स्थानमें हो तो राजाकी कृपादृष्टि, व्यापारमें लाभ, सुन्दर, सुख आरोग्यता और पशुओंकी अधिक वृद्धि हो॥३६॥

प्रतापतेजोविजयाभिवृद्धिश्शत्रुक्षयो भूमिपतेःप्रसादः॥
नित्यंसुहृत्पुत्रकलत्रसौख्यं लाभालयेमङ्गलनामधेये॥३७॥

यदि मंगल लाभ ११ स्थानमें हो तो प्रताप, तेज, विजयकी वृद्धि, शत्रुनाश, राजाकी प्रसन्नता और हमेशा पुत्र मित्र कलत्रोंको सुख हो॥३७॥

धनक्षयस्स्यात्क्षितिपालभीतिर्दृग्दोषयोषाद्यसुखैर्विषादः॥
वादस्सदामन्दजनेननूनम्भूनन्दनेप्रान्त्यनिकेतनस्थे॥३८॥

यदि भूनन्दन (मङ्गल) प्रान्त्य १२ स्थानमें हो तो धनका नाश, राजासे भय, नेत्रदोष, स्त्रीसे विषाद और रोज मूर्खोंसे लडाई हो॥३८॥

इति भौमभावफलानि॥

शरीरसौख्यंनृपतेः प्रसादम्बुद्धेः प्रवृद्धिन्द्रविणागमञ्च॥
गाम्भीर्यवीर्योपचयम्प्रदत्तेमृगाङ्कसूनुस्तनुभावसंस्थः॥३९॥

यदि मृगाङ्कसूनु (बुध) तनु १ स्थानमें हो तो शरीरसुख, राजाकी कृपा, बुद्धिकी वृद्धि, धनागम, गाम्भीरता, वीर्यवृद्धि, पराक्रमयुक्त करता है॥३९॥

स्वमित्रपुत्रोन्नतिनीतिवृद्धिर्द्रव्यागमोभूमिपतेःप्रसादः॥
आरोग्यतातीवशरीरसौख्यं चेद्रौहिणेयोद्रविणाधिसंस्थः॥४०॥

यदि रौहिणेय (बुध) धन २ स्थानमें हो तो अपने मित्रों व पुत्रकी वृद्धि, नीतिकी वृद्धि, राजाकी प्रसन्नता, द्रव्यलाभ, आरोग्यता, बहुत शरीरसुख हो।।४०।।

लाभोप्यलाभश्चसुखञ्चदुःखंमित्रं त्वमित्रं समनुप्रयाति।।
यथास्थितंस्यात्सकलन्तृतीयोद्विजाधिराजात्मजभावसंस्थे।।४१।।

यदि बुध ३ स्थानमें हो तो हानि लाभ, दुःख, शत्रु, मित्र ये सब यथास्थित रहैं।।४१।।

पृथ्वीपतेर्गौरवसम्प्रवृत्तिन्धनागमम्मित्रसमागमञ्च।।
कलत्रसौख्यं बहुधा विधत्तेकलानिधेस्सूनुरिलातलस्थः।।४२।।

यदि बुध रसातल ४ स्थानमें हो तो राजासे मान, धनागम, मित्र, पुत्रप्राप्ति स्त्रियोंको सुख देता है।।४२।।

सुहृज्जनात्पुत्रकलत्रतश्च सुखानि भूपात्प्रभवेन्मनीषा।।
भाग्यंनरेशाच्चयशश्चपुत्रे पुत्रोत्रनक्षत्रपतेर्यदिस्यात्।।४३।।

यदि बुध पुत्र ५ स्थानमें हो तो पुत्र- मित्र कलत्रोंसे सुख, राजासे मनोभिलषित कार्यप्राप्ति, यश भाग्योदय हो।।४३।।

विपक्षपक्षप्रचयम्प्रमादं वादंनिजैः कान्तिपरिक्षयञ्च॥
शरीरपीडाञ्चजडांशुसूनुश्शत्रुस्थितस्संजनयत्यवश्यम्॥४४॥

यदि जडांशुसूनु (बुध) शत्रु ६ स्थानमें हो तो शत्रुओंकी वृद्धि उन्माद, हमेशा आत्मवर्गमें कलह, कान्तिनाश शरीरमें रोग अवश्य होवै॥४४॥

अतियुवतिविलासम्मार्गलाभंजनानां,
जनयतिधनसौख्यंसद्वणिक्कर्म्ममार्गात्॥
प्रतिदिनमनुवृत्तिन्धर्म्मकार्येषु नून-
मदनसदनसंस्थः शीतभानोस्तनूजः॥४५॥

यदि मदनसदन ७ में बुध हो तो स्त्रीसुख, मार्ग चलना वाणिज्यसे धनवृद्धि, प्रतिदिन धर्मकार्योंमें मनुष्योंका मन लगे॥४५॥

वैरिव्रातोन्मूलनम्भूमिपालात्सौख्यं हर्षोत्कर्षतासन्मतित्वम्॥
नित्यंशास्त्राभ्यासतोगौरवंस्यादायुस्थानेचन्द्रदेहोद्भवोयम्॥४६॥

यदि चन्द्रदेहोद्भव (बुध) आयु ८ स्थानमें हो तो राजाकी तरफसे शत्रुनाश, सुख, हर्ष, उत्कर्ष, सद्बुद्धि, नित्य शास्त्राध्ययनसे गौरव होवे॥४६॥

धर्मेबुद्धिः कार्यसिद्धौप्रलापश्चित्तोद्वेगः कामिनीवर्गपीडा॥
दैन्यङ्कान्तिक्षीणताप्राणिनांस्याद्भाग्यागारेचेत्तुषारांशुजन्मा॥४७॥

यदि तुषारांशुजन्मा (बुध) भाग्य ९ स्थानमें हो तो धर्ममें बुद्धि, कार्यसिद्धिमें विघ्न, चित्तमें उन्माद, स्त्रियोंको दुःख, दैन्य, दुर्बलता मनुष्यको होवे॥४७॥

द्रव्यप्राप्तिर्भूमिपालोद्यमाभ्यांसभ्यत्वंस्याद्देहसौख्यंस्वगेहात्॥
कान्तिस्सारोयातिविस्तारमुच्चैःकर्म्मस्थानेसोमसूनौप्रपन्ने॥४८॥

यदि कर्मस्थान १० में सोमसुत (बुध) हो तो राजा और उद्यमोंसे द्रव्यप्राप्ति, प्रतिष्ठा, शरीरसुख, शोभाकी वृद्धि हो॥४८॥

नित्यारोग्यंभाग्यवृद्धिस्सुबुद्धिः पृथ्वीपालाद्गौरवंसर्वथास्यात्॥
स्वल्पायासैरुद्यमाद्द्रव्यलाभोलाभस्थानेसिंधुसूनोस्तनूजे॥४९॥

यदि लाभ ११ स्थानमें बुध पडे तो शरीरके रोग नष्ट होवे, भाग्यवृद्धि हो, उत्तम बुद्धि हो, राजासे प्रतिष्ठा मिले और थोडे ही उद्यममें अपना कार्य सिध्द होवे॥४९॥

लाभस्त्वल्पोप्यल्पतास्याद्धनस्य क्षोणीपालात्साध्वसंदुर्व्ययश्च॥
बुद्धेरान्ध्यंविग्रहः स्वीयवर्गेप्रान्त्यस्थानेबोधनेवर्तमाने॥५०॥

यदि बुध प्रान्त्य १२ स्थानमें हो तो थोडा लाभ, धनकी न्यूनता, राजासे वैर, व्यर्थ व्यय, बुद्धिका

मन्दता और आत्मीय वर्गमें विरोध होवे॥५०॥

इति बुधभावफलानि॥

सौख्यम्पुत्रान्मित्रवर्गात्कलत्रादारोग्यंस्याच्छाघ्यभाग्योदयश्च॥
प्राप्तिर्भूपात्सन्मतिश्चाप्यवश्यंगीशश्चेन्मूर्तिवर्तीतिचिन्त्यम्॥५१॥

यदि वागीश मूर्ती १ स्थानमें हो तो पुत्र- मित्र-कलत्रसे सुख होवे, आरोग्य हो, भाग्यकी वृद्धि हो, राजासे लाभ होवे और उत्तम मति होवे॥५१॥

अर्थप्राप्तिंसंयतिंमित्रवर्गे नानावस्तुग्राहकत्वन्नितान्तम्॥
सद्भिस्संगम्पुष्टिमंगेप्रकुर्याद्वाचामीशःकोशसंस्थो यदिस्यात्॥५२॥

यदि वागीश कोंश स्थानमें हो तो अर्थप्राप्ति, मित्रवर्गसे संयोग, अनेक प्रकारकी वस्तुओंका क्रय, सत्सङ्ग और शरीरमें पुष्टि हो॥५२॥

कार्यस्यसिद्धिः परिसेवनेनसंकष्टमिष्टोन्नतिरर्थलब्धिः॥
सस्याम्बराणां महती च लब्धिर्नृपाद्भवेद्देवगुरौ सहोत्थे॥५३॥

यदि देवगुरु (बृहस्पति) तीसरे स्थानमें हों तो सेवासे कार्यकी सिद्धि, कष्टसे अभीष्ट वस्तुकी उन्नति और धनका लाभ, तथा राजासे धान्य, वस्त्रका अधिक लाभ होवे॥५३॥

कामिनीसुतसुखेन समेतो भूमिवाहनधनागमनाद्यैः ॥
राजमानविनयैस्सुखभावे देवदेवसांचेवेमनुजस्स्यात् ॥५४॥

यदि सुख ४ भावमें बृहस्पति हो तो स्त्री-पुत्र सुख प्राप्त होवे, भूमि, वाहन और धनका आगम होवे और राजासे प्रतिष्ठा प्राप्त हो ॥५४॥

सन्तानसौख्याप्तिमतिप्रकाशंसुखानि मित्रोन्नतिसंयुतानि ॥
सन्मंत्रविद्याभ्यसनानिकुर्यात्पुत्रस्थितश्चित्रशिखण्डिसूनुः ॥५५॥

यदि चित्रशिखण्डिसूनु (गुरु) पुत्र ५ भावमें वर्तमान हो तो सन्तानसुख, बुद्धिवृद्धि, मित्रवृद्धि और मंत्र और विद्याभ्यासकी वृद्धि करे ॥५५॥

बलक्षयश्चपिविपक्षवृद्धिस्सार्द्धंविरोधोबहुधास्वकीयैः ॥
व्ययोतिचिन्ताप्रभवेन्नराणां चेद्गीष्पतिर्वैरिनिकेतनस्थः ॥५६॥

यदि गीष्पति (गुरु) वैरि ६ भावमें पडें तो बलहानि, शत्रुवृद्धि, कुटुम्ब विरोध, द्रव्यनाश और चित्तमें नानाप्रकारकी चिन्ता बनी रहै ॥५६॥

वणिग्विधानेनधनागमः स्यान्मार्गप्रसंगेनचमानवानाम् ॥
स्त्रीवर्गसौख्यंनृपतेश्चचित्रशिखण्डिसूनौमदनालयस्थे ॥५७॥

यदि बृहस्पति मदन ७ स्थानमें हो तो वाणिज्यसे

धन प्राप्ति हो अथवा परदेश जानेसे और स्त्री तथा राजासे सुख हो॥५७॥

मित्रैस्साद्धंवैमनस्याभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशोद्रव्यनाशःप्रवासः॥
विश्लेषस्स्यात्स्वीयवर्गेणपुण्यंक्षीणंजीवेजीवितस्थानसंस्थे॥५८॥

यदि जीव जीवित ८ स्थानमें हो तो मित्रोंके साथ विरोध, बुद्धिनाश, द्रव्यनाश, परदेशयात्रा, बन्धुवर्गमें विश्लेष और पुण्यनाश होवे॥५८॥

बुद्धेर्विवृद्धिर्द्रविणोपलब्धिः कान्ताविलासोमनसःप्रसादः॥
प्रवीणताचैवभवेच्च पुण्यं पुण्येनिषण्णेधिषणेप्रणीतम्॥५९॥

यदि पुण्यस्थान ९ में बृहस्पति हों तो बुद्धिकी वृद्धि, द्रव्यप्राप्ति, स्त्री विलास, चित्तकी प्रसन्नता, चातुर्य और पुण्यकी वृद्धि हो॥५९॥

पृथ्वीपतेः प्राप्तिरतीवकीर्तिर्मानोन्नतिर्नीतिमतिप्रवृद्धिः॥
नित्योत्सवानन्दभरोनराणां राज्येसुरेज्येविजयोद्गमस्स्यात्॥६०॥

यदि सुरेज्य राज्य १० स्थानमें पडें तो राजाकी प्रसन्नता हो, कीर्ति बढे, मानकी उन्नती हो, नीति मतिकी वृद्धि हो और प्रतिदिन उत्साह अधिक हो और जय मिले॥६०॥

आरोग्यतावैभववाहनानि कलत्रपुत्रादिसुखैर्युतानि॥
नानाधनाप्तिंखलुलाभवर्त्तीबृहस्पतिर्यच्छतिमानवानाम्॥६१॥

यदि बृहस्पति लाभस्थान ११ में हो तो आरोग्यता, ऐश्वर्य और वाहनवृद्धि, पुत्र-कलत्रादिसुख और अनेक प्रकारसे धनप्राप्ति होवे॥६१॥

मित्रैर्वैरम्भूपतेर्भीतिरुग्रा दुःखंचिन्तानेकधार्थव्ययश्च॥
नूनंस्थानभ्रंशतास्यान्नराणां वाचामीशेद्वादशस्थानसंस्थे॥६२॥

यदि बृहस्पति द्वादशस्थानमें हो तो मित्रोंसे वैर, राजासे भय, दुःख, अनेक प्रकारकी चिन्ता, व्यर्थ धनव्यय, स्थानभ्रंश होते हैं॥६२॥

इति गुरुभावफलानि॥

अत्यर्थंस्यादर्थलाभः क्षितीशाद्वंशस्योच्चैस्सञ्चयस्सौख्यलब्धिः॥
हर्षोत्कर्षावेशपूर्वंसगर्वन्दैत्यामात्योमूर्तियदीह॥६३॥

यदि दैत्यामात्य (शुक्र) मूर्ति १ स्थानमें हो तो राजासे अधिक द्रव्यलाभ, वंशवृद्धि, सुखप्राप्ति, अधिक उत्सव और गर्ववृद्धि हो॥६३॥

सुहृद्विवृद्धिर्बहुधार्थलाभः शत्रुक्षयस्सत्वरमेवकार्यम्॥
कान्तासुचित्तस्य भवेत्प्रवृत्तिर्दैत्यार्च्चितेवित्तगते नराणाम्॥६४॥

यदि दैत्यार्चित (शुक्र) वित्त २ स्थानमें हो तो मित्रोंकी वृद्धि, बहुधा धनप्राप्ति, शत्रुनाश, शीघ्र कार्यसिद्धि और चित्तवृत्ति स्त्रियोंमे रहे ॥६४॥

द्रव्यव्ययोपद्रवमित्रवैरंसौख्याल्पतानल्पविकल्पचिन्ता ॥
पराक्रमोमध्यमतः प्रकामंभृगोस्तनूजेऽनुजभावसंस्थे ॥६५॥

यदि शुक्र अनुज ३ स्थानमें हो तो द्रव्यका खर्च, उपद्रव, मित्रोंमें लढाई, थोडा सुख, अधिक चिन्ता और मध्यम पराक्रम हो ॥६५॥

आरोग्यंस्याद्वैभवम्भूमिपालान्मित्रक्षेत्रोद्यानसौख्यानिनूनम् ॥
नानामानैश्चापियोगोपलब्धिर्दैत्याचार्ये तुर्यभावोपपन्ने ॥६६॥

यदि दैत्याचार्य (शुक्र) तुर्य ४ स्थानमें हो तो आरोग्यता, राजासे ऐश्वर्यप्राप्ति, मित्र, घर बगीचादिकोंका सुख और नानाप्रकारके मानसे योगकी वृद्धि ॥६६॥

कलत्रपुत्रोद्भवसौख्यविद्याविज्ञानकौशल्यमतिप्रवृद्धिः ॥
विचित्रमन्त्रागमसंगमः स्याद् भृगोस्तनूजेतनुजेधिसंस्थे ॥६७॥

यदि शुक्र तनुज ५ स्थानमें हो तो पुत्र स्त्रियोंसे सुख, विद्या, विज्ञान, कौशल्यता, बुद्धिकी वृद्धि, अनेक मंत्र और शास्त्रमें अभ्यास होवे ॥६७॥

अनिलभीतिरनीतिमतिर्ध्रुवं रिपुचयोऽपिचयोऽपिधनस्यच ।।
गृहसुखन्नकदापि शरीरिणामुशनसिद्विषिसम्प्रविशत्यलम् ।।६८।।

यदि शुक्र षष्ठस्थानमें हो तो अग्निसे भय, अनीतिमें बुद्धि, शत्रुवृद्धि, धनवृद्धि और मनुष्योंको घरसे सुख कदापि न होवे ।।६८।।

कामिनीतनयहर्षतोभवेद्वेश्मपुष्टिरतिलब्धिरुद्यमात् ।।
मानवाहनधनानि भार्गवेपञ्चमार्गणगृहाङ्गणस्थिते ।।६९।।

यदि शुक्र पंचमार्गण गृहाङ्गण ७ स्थानमें हो तो स्त्री-पुत्रके हर्षसे गृहपुष्टि, व्यापारसे लाभ, मान, सवारी, धनप्राप्ति हो ।।६९।।

अल्पारोग्यङ्कामिनीसूनुचिन्ता चित्तभ्रंशोरोषदोषप्रवासः ।।
शश्वत्कार्यंस्याच्छरीरेनराणामायुर्भावे पूर्वदेवाधिदेवे ।।७०।।

यदि पूर्वदेवाधिदेव (शुक्र) आयु ८ स्थानमें हो तो शरीरमें कुछ रोग हो, स्त्रीपुत्रकी चिन्ता, चित्तविकृति रहै, क्रोधयुक्त हो और कार्यकी वारंवार चिन्ता हो ।।७०।।

आरोग्याप्तिर्धर्मकर्म्माभिवृद्धिर्बुद्धिः शस्ताविस्तृताचोन्नतिस्स्यात् ।।
पुत्रान्मित्राच्चापिसन्तोषलब्धिः पुण्यस्थानेदानवैर्वन्द्यमाने ।।७१।।

यदि शुक्र धर्म ९ स्थानमें हो तो आरोग्यता,

धर्मकर्मोंकी वृद्धि, विमल बुद्धिकी वृद्धि और पुत्र-मित्रोंसे सुखकी प्राप्ति हो ॥७१॥

भूमिभर्त्तुरपिगौरवलब्धिःशत्रुपक्षकपरिक्षययुक्ता ॥
कार्यसिद्धिरपिचिन्तितकालेराज्यभाजिदनुजव्रजपूज्ये ॥७२॥

यदि दनुजव्रजपूज्य (शुक्र) राज्य १० स्थानमें हो तो राजासे मान, शत्रुओंका नाश, समयपर कार्यसिद्धि होवे ॥७२॥

नीरसञ्चरणसद्द्रविणाप्तिर्विक्रयक्रयविधेरपि लाभः॥
वैभवोन्नतिरतीवविलासो लाभवेश्मनि भृगुर्यदिसंस्थः ॥७३॥

यदि भृगु (शुक्र) लाभ ११ स्थानमें हो तो समुद्रयानसे उत्तम धनप्राप्ति क्रय- विक्रयसे लाभ और ऐश्वर्यवृद्धि और अधिक सुख होय ॥७३॥

साधुमार्गविभवक्षयमुच्चैस्स्वीयवर्गकलहंकिलयाति ॥
स्वालयाच्चचलनेफलहानिर्देववैरिसचिवेऽन्तिमभावे ॥७४॥

यदि देववैरिसचिव (शुक्र) अन्तिम १२ स्थानमें हो तो अच्छे मार्गमें द्रव्यव्यय, स्वजनोंमें कलह और घरसे चलनेमें फलहानि होवे ॥७४॥

इति शुक्रभावफलानि ॥

प्रजायतेवातकफप्रकोपैश्शिरस्स्थलोरः स्थलपीडनञ्च॥
स्वकीयमित्रैः कलहोनराणाम्पुत्रास्त्रिमूर्त्तेर्यदिमूर्तिवर्ती॥७५॥

यदि त्रिमूर्ति (सूर्य) का पुत्र (शनि) मूर्ति १ स्थानमें हो तो वात, पित्त, कफके कोपसे मस्तक और छातीमें दर्द, स्वमित्रोंसे कलह॥७५॥

वक्त्रक्षिपीडाप्रभवेन्नराणांधनव्ययो भूमिपतेर्भयञ्च॥
चिन्ताप्रभूतारमणीसुतादेश्चेद्भानुसूनुर्धनधामसंस्थः॥७६॥

यदि भानुसूनु (शनि) धन २ स्थानमें हो तो मुख और नेत्रमें पीडा, धनका खर्च, राजासे भय, स्त्रीपुत्रादिकोंकी अधिक चिन्ता हो॥७६॥

समग्रचिन्ताविकलः खलुस्याद्वसुन्धरापालकमानसौख्यम्॥
धनस्यलाभोतितरान्नराणां भानोस्तनूजेसहजाधिसंस्थे॥७७॥

यदि भानुतनूज (शनि) सहज ३ स्थानमें हो तो संपूर्ण चिंताओंसे व्याकुलता राजासे मान, सुख, धनकी प्राप्ति अधिक होवे॥७७॥

प्रवासचिन्ताद्रविणव्ययस्स्यात्कान्तातिचिन्ताकुलचित्तवृत्तिः॥
पक्षेजनन्याः परिपीडनञ्चरसातलस्थेनलिनीशसूनौ॥७८॥

यदि नलिनीश सूनु (शनि) रसातल ४ स्थानमें हो तो परदेशकी चिन्ता, धनका खर्च, स्त्रीकी अधिक चिन्तासे चित्तको दुःख और माताको क्लेश हो ॥७८॥

कान्तासुहृत्सूनुजनेषुपीडा क्रोडप्रपीडापवनप्रकोपात् ॥
बुद्धिर्विरुद्धाधनसंक्षयस्स्याद्भानोस्तनूजेतनुजेधिसंस्थे ॥७९॥

यदि भानुतनूज (शनि) तनुज ५ स्थानमें हो तो स्त्री, मित्र, पुत्रोंको पीडा, वातके कोपसे छातीमें दर्द, बुद्धि खराब और धनका नाश हो ॥७९॥

सामर्थ्यंस्याद्भूमिभर्त्तुःप्रसादस्सद्भिस्सङ्गोवीर्यवृद्धिस्समृद्धिः ॥
जायापुत्रप्रीतिसम्प्राप्तिरत्रशत्रुक्षेत्रेमित्रपुत्रोयदिस्यात् ॥८०॥

यदि मित्रपुत्र (शनि) शत्रु ६ स्थानमें हो तो सामर्थ्य हो, राजाकी कृपा, प्रतिष्ठित मनुष्योंका सङ्ग पराक्रमकी अधिक वृद्धि और स्त्री-पुत्रमें प्रीति हो ॥८०॥

मित्रकष्टमपिपुष्टिहीनता स्थानहानिधननाशनन्दिशेत् ॥
शत्रुभीतिमपिनीतिविच्युतिम्मीनकेतननिकेतनेशनौ ॥८१॥

यदि मीनकेतननिकेतन ७ स्थानमें शनि हो तो व्याधिका उदय, पुत्र, कलत्र, धनका नाश, बुद्धिमन्दता और दुःखकी प्राप्ति अधिक होवे ॥८२॥

धनविनाशनदेशभयान्वितं सुतहितप्रमदापरिपीडनम्॥
मतिविपर्ययतांकुरुतेयमोनवमधामसमागममागतः॥८३॥

यदि शनि नवम ९ स्थानमें हो तो धनका नाश, देशसे वियोग, पुत्र, मित्र, स्त्रीको दुःख और बुद्धिमें वैपरीत्य हो॥८३॥

पृथ्वीभर्तुर्भीतिरर्थच्युतिस्स्यात्स्वव्यापारेव्यग्रतास्थानहानिः॥
दुःख दैन्यंजायते मानवानांमानेभानोर्नंदने वर्तमाने॥८४॥

यदि भानुनन्दन (शनि) मान १० स्थानमें हो तो राजासे भय, धननाश, व्यापारमें चिन्ता, स्थाननाश और दारिद्र्य होवे॥८४॥

योषातोषम्मानवेसद्विशेषादाशापूर्तिस्फूर्तिकीर्तिप्रसादम्॥
शौर्यंवीर्यञ्चापिधैर्यम्प्रकुर्यात्प्राप्तौप्राप्तः सप्तसप्तिप्रसूतः॥८५॥

यदि सप्तसप्तिप्रसूत (शनि) प्राप्ति ११ स्थानमें हो तो स्त्रियोंको विशेष सुख, कीर्ति दिगन्तव्यापिनी और सुख, शौर्य, विर्य और धैर्यको बढाता है॥८५॥

विलोचनक्रोडपदेषुपीडा दृढा भवेन्मित्रजनैर्विवादम्॥
भीतिर्नृपादद्रव्यहतिर्नितान्तंव्ययालयेचेन्नलिनीशजन्मा॥८६॥

यदि नलिनीशजन्मा (शनि) व्यय १२ स्थानमें हो तो नेत्र, छाती, पैरमें पीडा, मित्रोंसे अधिक वैरं, राजासे भय और द्रव्यनाश होवे॥८६॥

इति शनिभावफलानि॥

देहेपीडाजायतेवातजन्याचिन्तापत्तिर्वैभवंवैपरीत्यम्॥
वादंकैश्चित्कामिनीसूनुचिन्तासिंहीसूनुश्चेत्तनुस्थानसंस्थ: ॥८७॥

यदि सिंहीसूनु (राहु) तनु १ स्थानमें हो तो शरीरमें वातकृत पीडा उपजे, चिन्ता हो, अनादर होवे, तुच्छ लोगोंसे विवाद हो, स्त्री और पुत्रविषयिणी चिन्ता होवे॥८७॥

वदनलोचनपीडनकंतथा कथमपिप्रकरोतिचनीचत:॥
द्रविणलाभमनुत्सवमद्भुतंद्रविणधामसमागमकृत्तम: ॥८८॥

यदि द्रविणस्थानमें राहु हो तो मुख और नेत्रमें पीडा, किसी न किसी प्रकारसे नीचद्वारा धनप्राप्ति, चित्तमें खेद वारंवार होवे॥८८॥

सम्यक्सुखं भूमिपतेर्नितान्तं समुन्नति: कायसुखानि नित्यम्॥
सुहृत्समाजोपचयोजयस्स्यात्सिंहीतनूजेऽनुजधामसंस्थे॥८९॥

यदि सिंहीसुत (राहु) अनुज ३ स्थानमें हो, तो सम्पत्तिका सुख राजद्वारा हो, ऐश्वर्यवृद्धि हो शरीरको सुख हो बन्धुवर्गोंकी वृद्धि हो और जयप्राप्ति हो॥८९॥

चिन्तादुःखंवाग्विवादःस्वकीयैर्नूनंपानंवाहनादिक्षयश्च॥
कार्श्यंशश्वज्जायतेमानवानान्तुर्यस्थानेनन्दनेसिंहिकायाः॥९०॥

यदि राहु चतुर्थ स्थानमें हो तो चिन्ता, दुःख, वाग्विवाद, वाहननाश और शरीरमें दुःखसे दुर्बलता प्राप्त होवे॥९०॥

बुद्धेर्मान्द्यन्निन्द्यताद्वेषिवादं गाढाम्पीडांक्रोडदेशेविशेषात्॥
पुत्रात्सौख्यंयच्छतिप्राप्तिवर्जंसिंहीसूनुर्नन्दनस्थानसंस्थः॥९१॥

यदि राहु नन्दन ५ स्थानमें हो तो बुद्धिकी मन्दता, निन्दा, द्वेष, विवाद, वक्षस्थलमें अत्यन्त पीडा, पुत्रसे सुख और प्राप्तिकी न्यूनता हो॥९१॥

आरोग्यंस्याद्भाग्यवृद्धिर्नरेशाद्वैरिध्वंसोमानसोत्पन्नसौख्यम्॥
जायापुत्रैः प्रीतिमत्यन्तमब्देशत्रुक्षेत्रे पुत्रकस्सिंहिकायाः॥९२॥

यदि राहु शत्रुक्षेत्र ६ में पडे तो आरोग्य, राजद्वारा भाग्यवृद्धि, शत्रुनाश, चित्तकी प्रसन्नता और स्त्री और पुत्रसे अत्यन्त प्राप्ति होवे॥९२॥

स्थानात्स्थानंयानमंगेतिकार्श्यं कान्ताचिन्ताचंचलाचित्तवृत्तिः ॥
कट्यांबस्तौवातसंजातबाधास्वर्भानुश्चेत्कामिनीस्थानसंस्थः ॥९३॥

यदि स्वर्भानु (राहु) कामिनी ७ स्थानमें हो तो देशविदेशाटन, शरीरमें दौर्बल्य, स्त्रीकी चिन्ता, चित्तमें चञ्चलता, कटि और वस्तिमें (पेडूमें) पीडा ये सब वातके कोपसे होवें ॥९३॥

जायाक्लेशो बांधवाविद्विषस्स्युर्द्रव्यावाप्तिःस्यात्क्षितेश्चप्रवासः ॥
कान्तिर्हीनामानवानांहिवर्षेसिंहीसूनुर्नैधनस्थानवर्त्ती ॥९४॥

यदि राहु निधन ८ स्थानमें हो तो स्त्रीको क्लेश हो, भाई लोग शत्रुता करें, द्रव्यप्राप्ति और नाश हो, परदेश जाना पडे और प्रतापका नाश होवे ॥९४॥

पीडनंहिवपुषोपिचरोषो योषयासहकृशत्वविशेषः ॥
पुण्यकर्मणिनृणामणुबुद्धिर्धर्मधामसमवर्त्तितमश्चेत् ॥९५॥

यदि धर्मस्थान ९ में राहु हो तोशरीरमें पीडा, स्त्रीसे विरोध, दुर्बलता और पुण्यकर्ममें बुद्धि न्यून हो ॥९५॥

अवनिनायकतोभयमद्भुतन्निजजनैस्सहदेहनिपीडनम् ॥
धनविनाशनमादिशतेभृशंबततमोदशमोदयसंस्थितः ॥९६॥

यदि राहु दशम १० भावमें स्थित हो तो राजभय, आत्मीय जनोंसे शरीरपीडा और वारंवार धननाश हो ॥९६॥

आरोग्यतावैभवबुद्धिवृद्धिर्नीचाज्जनाच्चापिभवेदवाप्तिः ॥
सुखानिनित्यंखलुकामिनीनांसिंहीसुतेलाभगते नितान्तम् ॥९७॥

यदि राहु लाभ ११ स्थानमें हो तो आरोग्यता, वैभव, और बुद्धिकी वृष्टि हो, नीचजनसे लाभ हो और स्त्रीसुख होवे ॥९७॥

धनव्ययस्स्वीयजनेषुपीडारिपूदयोभूपभयोपलब्धिः ॥
कान्तातिचिन्ताकुलचित्तवृत्तिर्व्ययेधिवासस्तमसोयदिस्यात् ॥९८॥

यदि राहु व्यय १२ स्थानमें हो तो धनका नाश, बन्धुवर्गमें पीडा, शत्रुओंकी वृद्धि, राजासे भयप्राप्ति और स्त्रीविषयिणी चिन्ता बहुत रहै ॥९८॥

खेचारिणांभावफलानियानितानीहकल्प्यानिदशासुतेषाम् ॥
राहोश्चयद्भावफलन्निरुक्तंशनेर्दशायांखलुतत्प्रकल्प्यम् ॥९९॥

यह जो ग्रहोंका भावफल कहा गया सो उन उन ग्रहोंकी दशामें कहना और राहुका जो भावफल है सो शनिकी दशामें जानना ॥९९॥

लाभेलाभेशश्शुभैर्दृष्टंयुक्तस्स्वोच्चस्थश्चेद्दूरसंस्थश्चसूर्यात्॥
मातङ्गाश्वावाप्तिमुर्वीविभूषायोषाहर्षोत्कर्षयुक्तंकरोति॥१००॥

यदि लाभेश लाभ ११ स्थानमें हो और शुभग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट हो और उच्चका हो और सूर्यसे दूरहो अर्थात् अस्त न हो तो घोडा, हाथी, पृथ्वी, भूषण, स्त्री और सुखादिकी प्राप्ति हो॥१००॥

इति ग्रहभावफलाध्याय: पंचम:॥५॥

दैत्येज्यामरपूजितौ हतरुचौनीचेथचेच्चन्द्रमा
नानारोगभयंवियोगबहुलंस्याद्वर्षकालेनृणाम्॥
आयु:स्थानपतिस्तनौतनुपति:संस्थोयदानैधने
नन्वेतौखलखेचरेक्षितयुतौ शस्त्रेणमृत्युप्रदौ॥१॥

यदि वर्षमें शुक्र व गुरु निर्बल हों, चन्द्रमा नीचका हो तो नाना प्रकारके रोगोंका भय हो और यदि आयुस्थान ८ का स्वामी तनुमें हो और लग्नस्वामी निधन ८ स्थानमें हो और पापग्रहकी दृष्टिमें हों अथवा युक्त हों तो शस्त्रसे मृत्यु जाना॥१॥

दिनकरकरलुप्तौजन्मलग्नेन्थिहेशौ
दिनपतियुतदृष्टौरिष्टदौतौभवेताम्॥
जननसमयलग्नादष्टमंवर्षलग्न
युतमथमुथहेशेनेक्षितंरिष्टहेतु:॥२॥

यदि लग्नेश और मुंथेश सूर्यके कारणसे अस्त हों या सूर्यकी दृष्टिमें हों तो अरिष्टकारक होते हैं और यदि जन्मलग्न वर्षमें अष्टम पडे और मुंथेशसे युक्त अथवा उसकी दृष्टिमें हो तोभी अरिष्ट अधिक जानना॥२॥

निधनतनुमदारिप्रान्त्यमश्शीतरश्मिः
नहिगुरुयुतदृष्टोरिष्टकृत्सम्प्रदिष्टः।
यदिकुजयुतदृष्टः कष्टदोवह्निशस्त्रै-
र्दिनकरतनयेनात्यन्तवातप्रकोपः॥३॥

यदि चन्द्रमा निधन ८ तनु १ मद ७ अरि ६ प्रान्त्य १२ स्थानोंमें वर्तमान हो और बृहस्पतिसे युक्त अथवा दृष्ट न हो तो अरिष्ट समझना और यदि मंगलसे युक्त हो अथवा उनकी दृष्टिमें हो तो वह्नि या शस्त्रसे दुःख मिले और शनिसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो वातपीडा होवे॥३॥

क्ष्मासुतेक्षितयुतस्तनुभर्त्ता स्यान्मृतिस्थितिकरोमृतिकर्ता॥
सूर्यलुप्तकिरणौधिषणज्ञोशस्त्रपीडनकरौहिनराणाम्॥४॥

यदि मंगलसे युक्त अथवा उसकी दृष्टिमें रहकर लग्नस्वामी अष्टम स्थानमें हो तो मृत्युयोग जानना

और यदि सूर्यके कारण अस्त होकर बृहस्पति या बुध अष्टम होवे तो शस्त्रसे पीडा होवे ।।४।।

होराक्रूराभ्यन्तरेसान्तरायंकुर्याद्दारागारमप्येवमत्र ।।
रिष्फारिस्थैरर्थरन्ध्रोपगैर्वापापैरिष्टंश्रेष्ठधीभिः प्रदिष्टम् ।।५।।

यदि क्रूरग्रहोंके मध्यमें होरा होय तो गृह और स्त्रीविषयक विघ्न हो और यदि पापग्रह रिष्फ १२ अरि ६ अर्थ २ रन्ध्र स्थानमें हो तोभी अरिष्ट समझना ।।५।।

चेदिन्थिहापापयुताषडष्टव्ययोपगाहेतिहुताशभीतिम् ।।
करोतिवर्षेरविनन्दनेनयुतेक्षितावापवनप्रकोपम् ।।६।।

यदि मुन्था पापग्रहसे युक्त होकर षष्ठ ६ अष्टम ८ और व्यय १२ स्थानमें हो तो शस्त्र और वह्निसे भय हो और यैंदि शनिके साथमें हो तो उस वर्षमें वायुकृत रोग अवश्य होय ।।६।।

मदननिधनबन्धुप्रान्त्यशत्रुस्थितावा
जननसमयलग्नादिन्थिहाब्देष्टमस्था ।।
खलगगनतलस्थैर्युक्तदृष्टातिरिष्टं
जनयति शुभदृष्टोत्पन्नरिष्टाल्पतास्यात् ।।७।।

यदि मुन्था मदन ७ निधन ८ बन्धु ४ प्रान्त्य १२ शत्रु ६ वा जन्मलग्नसे अष्टम हो और क्रूरग्रहोंकी दृष्टिमें युक्त होय तौ बहुत अरिष्ट करे और यदि शुभग्रहोंसे युक्त हो तो न्यून अरिष्ट समझना ॥७॥

कामिनीभवनगस्तुहिनांशुर्ल्लग्नपोमृतिर्यदिसंस्थः ॥
द्वादशेषितथायुधिरिष्टंस्यान्मृतौचतनुपोमुथहेशः ॥८॥

यदि कामिनी ७ स्थानमें चन्द्रमा हो और यदि लग्नस्वामी और अष्टम स्वामी मृत्यु ८ द्वादश १२ या षष्ठस्थानमें हो या लग्नपति और मुथहोश अष्टम हो तो युद्धमें अरिष्ट जानना ॥८॥

लग्नेश्वरोवामुथहेश्वरोवारन्ध्रेश्वरोगौरकरात्तनोर्वा ॥
षष्ठाष्टमान्त्योपगतः करोति रिष्टम्पुराणैर्गणकैःप्रदिष्टम् ॥९॥

लग्नेश्वरं वा मुथहेश्वर वा अष्टमेश्वर लग्नसे अथवा चन्द्रमासे षष्ठ ६ अष्टम ८ वा द्वादश १२ हो तो महारिष्ट करै ऐसा प्राचीन गणकोंने कहा है ॥९॥

इति श्रीताजिकभूषणेऽरिष्टाध्यायष्षष्ठः ॥६॥

केन्द्रत्रिकोणोपगताश्शुभाख्यास्सलग्ननाथानिधनंनिहन्युः ॥
केन्द्रेसुरेंद्रस्यगुरुर्बलीयानमङ्गलम्मङ्गलमातनोति ॥१॥

यदि लग्नस्वामी और शुभग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० में हों अथवा त्रिकोण ९-५ स्थानमें हों तो अशुभका नाश करते हैं और बली बृहस्पति केन्द्र हो तो अमंगलको भी मंगल करता है॥१॥

होरायाश्चनिशाकराद्विविचरः क्रूरस्त्रिलाभारिगो
नूनं पापमपाकरोति बहुलंवालग्नपालीबली॥
सौम्यैस्सम्मिलितः करोतिदलनं रिष्टस्य दृष्टस्तथा
सौम्यैर्जन्मनि देवदेवसचिवो वा भार्गवःकेन्द्रगः॥२॥

यदि लग्नसे अथवा चन्द्रसे क्रूरग्रह त्रि ३ लाभ ११ अरि ६ स्थानमें वर्तमान हो तो अरिष्टका नाश अथवा लग्नस्वामी बली हो तो भी अथवा सौम्यग्रहोंकी दृष्टिमें हो वा उनसे युक्त हो अथवा जन्ममें यदि गुरु या शुक्र केन्द्र १-४-७-१० वर्त्ती हो तो भी यही फल जानना॥२॥

विलग्नपेसौम्ययुतेक्षितेतद्विलीयतेयत्खलुदिष्टमुक्तम्॥
बलोपपन्नेनतनुस्थितेन निहनूयतेवाक्पतिनापिरिष्टम्॥३॥

यदि लग्नस्वामी सौम्येक्षित वा सौम्ययुत हो तो अरिष्टनाश जानना और लग्नस्थित बली गुरुका भी यही फल है॥३॥ इति सप्तमः॥३॥

वर्षप्रवेशेवचसामधीशे लग्नेविलग्नेजनिलग्ननाथः॥
पराक्रमायाम्बुगतः करोतिक्षतिंरिपूणांद्रविणोपलब्धिम्॥१॥

यदि वर्षप्रवेश कालमें गुरु वा जन्म लग्नस्वामी लग्नमें वा पराक्रम ३ आय ११ अम्बु ४ स्थानमें हो तो शत्रुनाश और द्रव्य प्राप्ति होवे॥१॥

सुखेसुखेशश्शुभदृष्टयुक्तः प्रकृष्टसौख्यंवनितासुतेभ्यः॥
पुण्येश्वरोवाद्रविणेश्वरोवा विलग्नभाजोवसुवाजिलब्धिः॥२॥

यदि सुखेश सुख ४ स्थानमें हो और शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो वनिता पुत्र द्वारा सुखप्राप्ति हो, और यदि पुण्येश्वर वा द्रविणेश्वर लग्नमें हो तो द्रव्य और यानप्राप्ति हो॥२॥

मदनसदनभर्त्तामूर्त्तिवर्त्तीप्रसूतिं
जनयति गुरुदृष्ट्यादिष्टवैशिष्टहृष्टैः॥
कुजरविरविजाश्चेन्मूथशीलं
विदध्युर्बुधभृगुसुरपूज्यैराज्यलब्ध्यै भवन्ति॥३॥

यदि सप्तमस्थानस्वामी लग्नमें हो तो पुत्रयोग जानना और यदि गुरुकी दृष्टिभी हो तो भी वही फल कहना और भाग्यकी वृद्धि जानना और यदि मंगल, सूर्य, शनि ये क्रमसे बुध, शुक्र, और गुरुके साथ

इत्थशाल करैं तो राज्यलाभयोग जानना ॥३॥

चतुष्टयेवातनयेचधर्मे सौम्यास्त्रिषष्ठायगताश्चपादाः॥
कुर्वन्ति लक्ष्मीमणिवारणाश्वैः पूर्णसुवर्णाम्बरभूषणैश्च ॥४॥

यदि चतुष्टय अर्थात् केन्द्र १, ४, ७, १० में अथवा तनय ५, धर्म ९ स्थानमें सौम्यग्रह होवें और ३, ६, और ११ पापग्रह होवें तो द्रव्य, मणि, हाथी, घोडे, सुवर्णादि प्राप्ति होवे ॥४॥

दिनकरकरदूरेसंस्थितौमन्दशुक्रौ
निजभवनगतौवा स्वीयतुंगाधिरूढौ।
दृढतरबहुसम्यक्कारिणौतौभवेतां
यवनजनसकाशात्कल्पनीयं विशेषात्॥५॥

पराक्रमारातिभवालयस्थाः खलाश्चसर्वेसकलाश्चसौम्याः॥
केन्द्रेषुकुर्वंतिसदालयन्तेपद्मालयामालिसुदीर्घकालम्॥६॥

यदि पराक्रम ३, अराति ६, भव ११ स्थानमें सब खलग्रह होवें और केन्द्र १, ४, ७, १० में सब शुभग्रह होवें तो लक्ष्मीप्राप्ति अधिक जानना ॥६॥

इति राजयोगः॥

नीचस्थिताश्चास्तमिताश्चपापा नृपालयोगन्दलयन्त्यलन्ते॥
खलाः कुवर्गेविबलाश्चसौम्याःकृतार्गलास्युर्नरपालयोगाः॥१॥

यदि क्रूरग्रह नीचस्थित और अस्त हो तो राजयोगको नष्ट करैं और यदि खलग्रह नीच हों और सौम्यग्रह निर्बल हों तो भी राजयोगभंग जानना॥१॥

अथ सहमानि

दिवार्कहीनश्शशभृत्सलग्नंपुण्यम्भवेन्नक्तमिदंविलोभात्॥
दिवार्कहीनो रविजस्सलग्नोराज्यंरजन्यांविपरीतमुक्तम्॥१॥

यदि वर्षप्रवेश दिनमें हो तो स्पष्ट चन्द्रमें स्पष्ट सूर्य निकाले और लग्नमें जोडे जो अंक आवें वही पुण्यसहम होगा. यदि रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो इसके विपरीत जानना अर्थात् स्पष्ट सूर्यमें स्पष्ट चन्द्र निकलना; आगे २ विलोम शब्दका यही अर्थ समझना. यदि दिनमें वर्षप्रवेश हो तो स्पष्टशनिमें स्पष्ट सूर्य निकाले और लग्नजोडे तो राज्यसहम होता है और रात्रिको इसके विपरीत क्रिया करना॥१॥

गुरुर्दिवासूर्यसुताद्विलोमंनिश्यंगयुग्जीवितमामनन्ति॥
सदाविधूनंनिधनं समन्दं स्यान्मृत्युसंज्ञंसहमन्तदेव॥२॥

दिवा वर्षप्रवेशमें बृहस्पतिको शनिमें घटावे और रात्रिमें इसके विपरीत करै और जन्मलग्न जोडे तो जीवित सहम होगा और रात्रिदिनमें भी स्पष्ट चन्द्र

अष्टमभावमें घटावे और स्पष्ट शनि जोडे तो मृत्युसहम होगा।।२।।

इन्दुर्दिवोनःकविनासलग्नोव्यस्तंरजन्यांसहमंजनन्याः।।
शनैश्चरोदेवगुरोर्विशोध्यस्सदासलग्नस्सहजाभिधानम्।।३।।

दिनमें चन्द्रमामें शुक्रको घटावे और लग्न जोडै तो मातृसहम होगा पर रात्रिको इसकी उलटी क्रिया करना। रात्रि दिन दोनों समयोंमें भी बृहस्पतिमें शनिके घटानेसे और लग्न जोडनेसे भ्रातृसहम होता है।।३।।

शनिर्दिनेशाच्च सदा विशोध्योलग्नान्वितस्तज्जनकाभिधानम्।।
सदागुरोश्शीतकरोविशोध्यस्सलग्नकस्तत्सहमंसुताख्यम्।।४।।

दिनरात्रि दोनों समयोंमें भी सूर्यमें शनिको घटायके लग्न जोडनेसे पितृसहम होता है। और बृहस्पतिमें चन्द्रके घटा देने और लग्न जोडनेसे पुत्र सहम होता है।।४।।

पुण्यंदिवेज्योनितमत्ररात्रौव्यस्तंसलग्नंच यशोभिधानम्।।
पुण्योनितः क्षोणिसुतस्सलग्नोदिवाविलोमान्निशिविक्रमाख्यम्।।५।।

दिवा वर्षप्रवेशमें पुण्य ९ को बृहस्पतिसे ऊनित करै और लग्नजोडे और रात्रिको इसके विपरीत करे

तो यशसहम होता है और मंगलमें पुण्यको ऊनित करे लग्न जोडे तो बलसहम होता है; रात्रिमें इसका उलटा समझना॥५॥

चन्द्रोनितोर्कोदिवसे सलग्नो विद्याभिधानं निशिवैपरीत्यात्॥
चन्द्रोनजीवोदिवसेर्कयुक्तो रात्रौविलोमं खलु गौरवाख्यम्॥६॥

दिवा वर्षप्रवेशमें सूर्यमें चन्द्रको घटा देवे और लग्न जोडे तो विद्यासहम होता है और रात्रिमें इसके विपरीत प्रक्रिया करना, और चन्द्रको बृहस्पतिमें ऊन करिकै सूर्यमें जोडे रात्रिको इसके विपरीत क्रिया करे तो गौरवसहम हो॥६॥

बुधेनभौमोदिवसेसलग्नोव्यस्तंचरात्रोखलुकर्मसंज्ञम्॥
पुण्यात्सदापुण्यपतिर्विशोध्यस्साङ्गश्चदेशान्तरसंज्ञमुक्तम्॥७॥

दिवा वर्षप्रवेशमें मंगलमें बुधको ऊनित करै और लग्न जोडे, रात्रिको विपरीत क्रिया करनेसे कर्मसहम होता है और सर्वकालमें पुण्यसहमाधीशको पुण्यसे ऊनित करे तो परदेश सहम होता है॥७॥

सदाधनेशोधनतोविशोध्योलग्नान्वितः स्यात्सहमं धनाख्यम्॥
दिवानिशंलग्नपतिर्विशोध्योलाभात्सलग्नः खलुलाभसंज्ञम्॥८॥

किसी समय वर्षप्रवेश चाहे हो तो यदि धनेशको धनसे ऊनित करे और लग्न जोडे तो धनसहम होता है और लग्नपतिको लग्नमें ऊनित करै और लग्न जोडे तो लाभसहम होवे॥८॥

दिनेदिनेशश्शनिनातथैवनक्तंनिशेंद्रोनविशोधनीयः॥
मार्तण्डराशीश्वरसंयुतस्तत्कार्यस्यसिद्धेस्सहमंवदन्ति॥९॥

दिवा वर्षप्रवेशमें सूर्यमें शनि निकाल देवे और रात्रिमें चन्द्र निकालकर सूर्यराशिपति जोडे तो कार्यसिद्धि सहम होगा॥९॥

सदामदेशोनकविः कलत्रभावान्वितः स्त्रीसहमन्निरुक्तम्।
सदामहीजश्शशिजोविशोध्योवव्यापारसंज्ञंसहमंसलग्नम्॥१०॥

दिन वा रात्रिको वर्षप्रवेशमें स्त्रीभावेशको शुक्रमें ऊनित करके कलत्रभाव जोडे तो कलत्रसहम होगा और मंगलको बुधमें ऊनित करै और लग्न जोडे तो व्यापारसहम होगा॥१०॥

सौम्यैर्वाबलिभिर्निजाधिपतिनायुक्तेक्षितंहायने
वृद्धिस्तत्सहमस्यतत्पतिरथोलग्नाधिराजेन वा॥
वर्षेशेनसमंयदामुथशिलं कुर्यात्तदाप्तिस्तदा
शुभेसत्त्वविवर्जिते खलयुते स्यात्तस्यहानिर्ध्रुवम्॥११॥

यदि वर्षमें कोई सहम बली सौम्य ग्रहोंसे अथवा अपने स्वामीसे युक्त या दृष्टि हो तो उस सहमकी वृद्धि हो और यदि किसी सहमका स्वामी वर्षेशसे इत्थशाल करै तो उसकी अवश्य प्राप्ति समझना और यदि सहम लुप्त, निर्बल और खलग्रहोंसे युक्त हो तो उसकी हानि होवे।।११।।

इति सहमाध्यायः।

अथ मिश्रकाध्यायः

अस्तंगतः पापयुतेक्षितश्च नीचस्थितो नाधिकृतो जितश्च।
नष्टस्सखेटः खलुसम्प्रदिष्टोनिष्टप्रदोसौ निजपाककाले।।१।।

यदि कोई ग्रह अस्त हो, पापयुत, पापेक्षित नीचस्थित, अनधिकारी या जित हो तो उस ग्रहको नष्ट समझना और वह अपनी दशामें दुःखदायक होता है।।१।।

भावोबलिष्ठश्शुभखेटदृष्टोनिजेश्वरेणापिचदुष्टदृष्टः।।
सदुष्टवीर्यश्शुभपापदृष्टोमिश्रोऽस्यवृद्धिर्हिबलानुमानात्।।२।।

यदि भाव शुभग्रहसे अवलोकित हो तो बल होता है और चाहे अपने स्वामीसे क्यों न दृ

हो पर यदि स्वामी दुर्दृष्टि है तो भावभी दुष्ट हुआ और यदि शुभ और पाप दोनोंकी दृष्टि हो तो मिश्र कहना इसकी वृद्धि बलानुमानसे जानना ॥२॥

बृहस्पतिर्मूर्तितृतीयवर्ती प्रसूतिलग्नाधिपतिश्चतुर्थः ॥
भवेत्समर्थोरिपुनाशनार्थमत्यर्थमर्थोपचयंकरोति ॥३॥

यदि बृहस्पति लग्न वा तीसरे स्थानपर हो और प्रसूतिलग्नस्वामी चतुर्थ होवे तो शत्रुनाश और पूर्णरीतिपर धन वृद्धि हो ॥३॥

लग्नाधिराजोस्तिविलग्नराजो बृहस्पतिर्मूर्तिगतोयदिस्यात् ॥
पापेक्षितो नैवयुतः करोतिक्षितीश्वरेभ्योबहुधाधनाप्तिम् ॥४॥

यदि लग्नाधिराज बृहस्पति लग्नमें होवे परन्तु पापेक्षित न हो तो राजद्वारा अधिक धनप्राप्ति कहना ॥४॥

धनपतिर्वितनोति धनस्थितो धनमनूनमिहेज्यसमन्वितः ॥
तनुजभावगतस्तनुजेश्वरस्तनुजतोऽनुजतोपिसुखप्रदः ॥५॥

यदि धनस्थानकास्वामी अपने स्थानमें हो और बृहस्पतिके साथ हो तो धनवृद्धि हो और यदि तनुज ५ भावका स्वामी अपने स्थानमें हो तो भ्रातृपुत्रादिकसे सुख हो ॥५॥

दिनकृतापहृतौगुरुभार्गवौहिमरुचिर्यदिनीचपदेतदा॥
तनुभृतांहिसदाविपदं करोत्यतिशयेनतनौनिधनप्रदः॥६॥

यदि सूर्यदृष्टिके कारण गुरु वा शुक्र अस्त हो और चन्द्रमा नीच हो तो उस वर्ष मनुष्यको विपत्ति हो, विशेष करके यदि नीच चन्द्रमा लग्नमें हो तो मरणतुल्य कष्ट हो॥६॥

तनुपतिर्निधनेयदि संस्थितोवनिसुतेनयुतोथनिरीक्षितः॥
बहुतरैः कफपित्तमरुद्भवैरमिभवंकुरुतेऽथ धनक्षयम्॥७॥

यदि लग्नस्वामी निधन ८ स्थानमें हो और मंगलसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो शरीरमें कफ, पित्त और वातकृत पीडा हो और धन नष्ट होवे॥७॥

मदपतिर्बलवान्मदनालयेखलखगैर्नचवीक्षितसंयुतः॥
वितनुतेनुदिनन्ननु कामिनीजनसुखानुभवं विभवन्तथा॥८॥

यदि मदस्थान ७ पति बली, और खलग्रहोंकी दृष्टि और योगसे रहित होकर पडे तो प्रतिदिन स्त्री सुख और द्रव्य सुखकी वृद्धि हो॥८॥

करखेचरयुतेक्षितातनुस्साधुखेचरयुतानचेक्षिता॥
निंद्यभक्षणयुतंनरं करोत्याकुलं खलजनानुवादनात्॥९॥

यदि लग्न क्रूरग्रहसे दृष्ट अथवा युक्त हो और न तो साधु ग्रहकी दृष्टिमें हो न युक्त हो तो मनुष्य निंद्य भक्षण करनेवाला हो और मनुष्योंके अपवादसे दुःखी हो॥९॥

योषाधीशश्चेद्विनष्टो मनुष्यंवेश्याहर्षोत्कर्षयुक्तंकरोति॥
अस्तंयातस्संयुतः पापखेटैर्जातिभ्रंशंधर्मनाथोविदध्यात्॥१०॥

यदि योषाधीश अर्थात् सप्तमस्थानपति नष्टबल हो तो मनुष्य वेश्याप्रसंगी होवे और यदि धर्म ९ स्थानपति अस्त वा पापयुक्त हो तो जातिभ्रंश जानना॥१०॥

रंध्रारातिप्रान्त्ययातेब्दनाथे वर्षेसर्वेहीनवीर्येसकष्टम्॥
वर्षाधीशेसद्ग्रहेकेन्द्रकोणप्राप्तिस्थेस्यात्सर्ववर्षेसहर्षम्॥११॥

यदि वर्षपति रंध्र ८ अराति ६ प्रान्त्य १२ स्थानोंमें हीनवीर्य होकर पडे तो संपूर्ण वर्षमें कष्ट जानना और यदि वर्षाधीश शुभ ग्रह होवे और केन्द्र १, ४, ७, १० वा कोण ९, ५ व लाभ ११ स्थानमें पडे तो संपूर्ण वर्षमें हर्ष जानना॥११॥

लाभत्रिषष्ठेषुचपापखेटो वर्षाधिराट्चेच्छुभमेववर्षे॥
बलेनहीनेव्ययनैधनस्थे समास्समस्तागतमाःकरोति॥१२॥

यदि कोई पापग्रह वर्षेश होकर लाभ ११ त्रि
३ षष्ठ ६ स्थानमें पडे तो वर्षमें शुभही जानना,
और यदि बलहीन होकर व्यय १२ और नैधन
८ स्थानमें हो तो लक्ष्मीनाश करै॥

इति मिश्रकाध्यायः॥

अथ दशासाधनाध्यायः

नभस्तलेसंचरतांफलानिकिलप्रणीतानिशुभाशुभानि॥
वक्तुंनशक्यानिदशाक्रमेणविनाऽथतत्साधनमत्र वच्मि॥१॥

ग्रहोंके शुभाशुभ फलका तो वर्णन करचुके परन्तु वे
फल विना दशाक्रम जाने समयानुसार नहीं कहेयासक्ते इस
कारण अब दशासाधन प्रकार निरूपण किया जाता है॥१॥

आदौहीनलवस्ततोधिकलवस्तस्मादनल्पांशक-
श्चैवंलग्नसमन्विता दिविचरास्स्थाप्यालवाद्याःक्रमात्॥
ते हीनांशकसंज्ञका निगदिताः प्रान्त्यादुपान्त्यंत्यजे-
त्तस्मात्तत्प्रथमन्ततोपिचतथाशेषास्तुपात्यांशकाः॥२॥

दशासाधनमें सलग्न स्पष्टग्रहोंमें से राशिको छोडक
अंशकालादिकोंमें जो सबसे न्यूनांश ग्रह होवे उसक
सबसे प्रथम स्थापित करे, पुनः जिसके जैसे अधि
अंश होवें उसको वैसे बढ़ाकर स्थापित करता जा

इसमें स्पष्ट वर्षलग्नभी जिससे अंशमें अधिक होगी उसके आगे स्थापित करे इस प्रकारसे स्थापित किये गये ग्रह हीनांश कहलाते हैं; पुनः न्यूनांश ग्रहको अपने बगलवाले अधिकांशमें ऊनित करे ऐसेही सब ग्रहोंसे करके नीचे स्थापित करता जावे अब शेष अंश पात्यांश कहलावेंगे इसे साफ समझनेको नीचे लिखाहुया चक्र देखो और उदाहरणपर ध्यान दो॥२॥

बु.	ल.	सूं.	शु.	बृ.	मं.	श.	चं.	ग्रहाः
२ १८ ३४	८ ५३ २	९ ४४ ५९	१६ २६ २६	१९ २३ ३२	१९ ५७ ८	२१ ५७ ३	२८ १६ ३१	हीनांशाः
२ १८ ३४	६ ३४ २८	० ५१ ५७	६ ४१ २७	२ ५७ ६	० ३३ ३६	१ ५९ ५५	६ ११ २६	पात्यांश
२९ २२ ६	८३ ४४ २८	९ १९ ३४	८५ ४२ १७	३३ ४६ ४३	७ ६ ४४	२५ २६ ४६	८० ३१ २२	दशामानम् दिनादिकम्

ागादिसाम्यं यदिखेटयोश्चेत्तदाबली यान्प्रथमंप्रकल्प्यः॥
लेनतुल्यौयदितौभवेतामाद्योल्पभुक्तिःखचरोविचिन्त्यः॥३॥

यदि दोग्रहोंमें परस्पर अंशादिकी समता हो तो अधिकबल ग्रहका स्थापना करना और यदि दोनों बलमें भी तुल्य हों तो न्यूनभोगवाला ग्रह प्रथम स्थापित किया जावे॥३॥

पात्यांशयुक्त्याखलुसौरवर्षाद्भागादिलब्धेनपृथक्पृथक्तान्॥
पात्यांशकान्संगुणयेत्क्रमेण वर्षेदशाहानिनभश्चराणाम्॥४॥

ध्यानरहे कि शेषांश अर्थात् पात्यांश सलग्न जोडने उस ग्रहके तुल्य होंगे जो सबसे अधिकांश अन्त स्थापित है। पात्यांशोंको एकत्र जोडकर दोवार ६ से गुणै यही भाजक होगा; पुनः सौर वर्षमान ३६ दिनको दोवार ६० से गुणकर भाज्य माने पु उक्त भाजकसे इस भाज्यको भाजित करे जो लब् मिले उसे पृथक् पृथक् गोमूत्रिका गणितरीतिसे पात्यांशों गुणन करे और अंशादिके गुणनफलको ६० से भाजितक दिनादि करलेवे यही वर्षमें दशादिन निर्माण करने प्रकार है॥४॥

उदाहरणम्

उक्त चक्रमें सबसे न्यूनांश बुध है इससे व प्रथम स्थापित हुया पुनः उससे कुछ अधिक अं

लग्न है फिर सूर्य और इत्यादि॥ अब यहाँ सबसे ऊनांश बुध २।१८।३४ है इसलिये लग्न। ८।५३।२ में बुधको ऊनित किया शेष ।६।३४।२८ सो लग्नके अधः स्थापित किया ऐसेही औरभी, अब इस चक्रमें सब पात्यांशोंका योग २८।१६।३१ होता है जो कि, सर्वाधिकांश चन्द्रके अंशादिकोंके तुल्य है। इसको विपल करनेके निमित्त दोबार ६० से गुणा तो हुवा १०१७९१ यह भाजक हुया अब सौरवर्षमान ३६० को दोवार ६० से गुणा तो हुवा १२९६००० इसमें उस भाजकसे भागलेकर ६० से चढाया तो दिनघटीपलात्मक ध्रुवांक हुया १२।४३।५५ इसीसे यथा बुधके पात्यांश ।२।१८।३४ को गोमूत्रिका गणितसे गुणित किया तो हुया २९।२२।६ यही बुधके दशा दिन जानना और ऐसेही औरभी इति।

दशाप्रमाणंखलुसौर वर्षम्प्रकल्प्यपात्यांशयुताविभाज्यम्॥
भागादिलब्धेदन दशोक्तरीत्यासंसाधनीयान्तरजादशात्र॥५॥

ग्रहोंके दशामानको सौरवर्ष मान लेवे और वैसेही पात्यांशको जोडकर दोनोंको दो दो वार ६० गुणितकरके दशामानमें भाग लेवे जो लब्ध मिले उसीको ध्रुवांकमान उक्त क्रिया करनेसे अन्तर्दशा सिद्ध होती है॥५॥

अथ प्रश्नोपरिवर्षानयनम्

जननसमयलग्नाज्ञानभावेसुधीभि-
र्विधिवदमलपृच्छाकाललग्नं प्रसाध्यम्।
शुभफलमशुभंवाकीर्तयेत्सर्वम-
स्मिन्निगदितवदुदाराच्छास्त्रबुद्धेरुदारात्॥६॥

जब जन्मकालकी लग्न, अज्ञात हो तो पश्न समयकी लग्नको विधिपूर्वक स्पष्ट करे उसीके द्वारा शास्त्रानुकूल शुभफल अथवा अशुभ अपनी बुद्धिके अनुसार कहे॥६॥

पृच्छाविलग्नस्यविहायराशीन्विभाजयेदंशकलाकलापम्॥
खबाणचन्द्रैरिहराशिपूर्वंफलंविलग्नान्मुथहास्थितिःस्यात्॥७॥

प्रश्नलग्नकी राशिको छोडकर अंश और कला विकलाओंको १५० ते भाजित करे जो लब्ध होगा वही मेषादिक्रमसे मुंथा जानो॥७॥

चतुर्थभावाधिपतिर्विचिन्त्यः सजन्मलग्नाधिपतिर्बलार्थम्॥
प्रश्नार्कतुल्योग्रिमवर्षभानुर्यदातदाब्दस्यभवेत्प्रवेशः॥८॥

बल जाननेके अर्थ चतुर्थभावस्वामी और लग्नपति विचार लेना चाहिये, जब अग्रिम वर्ष भानु प्रश्नसमय सूर्यके तुल्य हों उसी समय वर्षप्रवेश जानना॥८॥

तत्कालहोराखचरानुसारं वर्षेविचारंविदधीतधीमान्॥
समीक्ष्यकेषांचिदिदम्मतंवामयाहिसंसूचितमत्रसम्यक्॥९॥

तात्कालिक लग्न और ग्रहोंको देखकर वर्षमें फलाफल निर्देश करना यह मैंने कुछ आचार्योंका मत देख यहाँ सूचित किया है॥९॥

अथ प्रत्येकदशाफलानि

भूताम्रहेमाम्बरवारणानान्तुरङ्गमाणाम्मणिभूषणानाम्॥
कान्तेर्बलस्योपचयन्दशायान्दिवामणिः पूर्णबलः करोति॥१॥

यदि सूर्यकी दशा पूर्ण बलयुक्त हो तो भूमि ताम्बा, सोना, वस्त्र, हाथी, घोडे, मण्यादिकोंकी शोभा और बलकी वृद्धि हाती है॥१॥

कान्तासुताप्रीतिमतीवधत्तेप्रसन्नतान्देशपुराधिकारम्॥
ग्रामादिसौख्यम्बहुधाविधत्तेतेजोनिधिर्म्मध्यबलान्वितोब्दे॥२॥

यदि वर्षमें सूर्यकी दशा मध्यबल हो तो स्त्री-पुत्रादिकोंसे परम स्नेह खुशी ग्रामपुरादिकोंमें अधिकार और ग्रामादिक सम्पत्तियोंको बढाते हैं॥२॥

कलिः कलत्रेणचपुत्रमित्रैश्शत्रूदयस्सत्त्वमतिक्षतिः स्यात्॥
निरर्थकोर्थःक्षयताम्प्रयातिगलद्बलादित्यदशाप्रवेशे॥३॥

यदि वर्षमें सूर्यकी दशा बलरहित हो तो स्त्री पुत्र मित्रोंसे लढाई, शत्रुओंका उदय, पराक्रम और मतिका नाश और निष्प्रयोजन धननाश होता है॥३॥

स्याद्भीररातेर्नृपतेश्चपीडान्यूनन्धनन्नैधनतुल्यरुक्स्यात्॥
अलंबलस्यापचयन्दशायाम्भाव्यम्फलन्नष्टबलस्यभानोः॥४॥

यदि सूर्यकी दशा नष्टबल हो तो शत्रुसे भय, राजासे क्लेश, धनकी न्यूनता, मरणतुल्य रोग और बलका क्षय यह फल जानना॥४॥

त्रिषष्ठलाभोपगतोदिनेशोनष्टोल्पसत्त्वोक्तफलंददाति॥
विहीनसत्त्वःखलुमध्यमोक्तं बलाधिशालीविपुलाप्तिकृत्स्यात्॥५॥

यदि सूर्य ३, ६, ११ स्थानमें नष्टबल होकर स्थित रहे तो जो फल अल्पसत्त्वका कहा गया है वह करैं, यदि हीनबल हो तो मध्यमोक्त और बली होवें तो प्राप्तिकारक होते हैं॥५॥

इति रविः॥

द्रव्यगौरवपदानिनरेशाद्द्वेषिनाशनयशांसिनितान्तम्॥
श्वेतचैलरजतामलमुक्तास्सम्प्रयच्छतिबली धवलांशुः॥६॥

यदि चन्द्रमा बली होवे तो द्रव्य, मान स्थानप्राप्ति

राजासे होवे, शत्रुनाश और यह वृद्धि होवे और श्वेतवस्त्र, चांदी और मोतीकी प्राप्ति होवे॥६॥

स्वगेहतो देहसुखन्नराणांवाणिज्यतोर्थागमन्नानिनूनम्॥
प्रभूतमन्त्राम्बरमंत्रबुद्धिवृद्धिं विधुर्मध्यबलौविधत्ते॥७॥

यदि मध्यबल चन्द्रमाकी दशा हो तो गृहसुख, वाणिज्यद्वारा द्रव्यप्राप्ति, मंत्र, वस्त्र प्राप्ति बुद्धि वृद्धि इत्यादि शुभफल हो॥७॥

वैरम्पुत्रकलत्रमित्रजनितं श्लेष्मानिलोपद्रवं
सौख्यार्थापचयंभयंरिपुचयं कान्तिक्षयंवैरिणाम्॥
धत्तेहीनबलः कलानिधिरलंकालेदशोक्तं फलं
मौलैस्ताजिकशास्त्रकारचतुरैर्यद्भाषितन्नान्यथा॥८॥

हीनबल चन्द्रमाकी दशामें पुत्र, मित्र, कलत्रसे दुःख श्लेष्मा, वायुसे शरीरमें पीडा, सौख्य, अर्थकी हानि, भय, रिपुवृद्धि इत्यादि यथार्थ फल होवे॥८॥

वृथाटनंक्लेशभयंविषादंधनक्षयं पुत्रकलत्रवैरम्॥
कफप्रकोपंचदशाप्रवेशेकरोत्यलं नष्टबलःकलावान्॥९॥

नष्टबल चन्द्रमाकी दशामें व्यर्थ भ्रमण, क्लेश, भय, विषाद, धननाश, पुत्र, स्त्रीसे वैर और कफका प्रकोप हो॥९॥

वित्तत्रिलाभस्थितशीतरश्मिर्विनष्टसत्त्वोपिफलंयदुक्तम् ॥
तत्पाककालेसकलन्नकुर्यान्मध्यश्शुभंपूर्णबलोविशेषात् ॥१०॥

यदि चन्द्रमा २, ३, ११ स्थानोमेंभी हो और नष्टबल हो तो उत्तम फलदायक नहीं होता, मध्यबल हो तो शुभ और पूर्णबल हो तो विशेष फल करै ॥१०॥

इतिचन्द्रः ॥

आरस्सारसमन्वितः क्षितिपतिप्रीतिन्नितांतम्महा
संग्रामेविजयं करोति पृतनास्वामित्वसौख्यन्नृणाम् ॥
ताम्रारक्तपटप्रवालविलसच्चामीकराप्तिर्ध्रुवं
नानावस्तुसमुच्चयं निजदशाकालेविभुत्वोदयम् ॥११॥

यदि बली मंगलकी दशा हो तो राजासे प्रीति, युद्धमें जय, सेनास्वामित्व, सुख, तांबडा, लालवस्त्र, मूंगा, सुवर्ण इत्यादि नाना पदार्थोंकी प्राप्ति हो ॥११॥

असृग्विकारस्सुतदारबाधाक्रोधातिवृद्धिर्बलहीनता स्यात् ॥
इलात्मजेमध्यबलेकलिश्चखलैर्नृपालैरतिचित्तशुद्धिः ॥१२॥

यदि मध्यबल मंगलकी दशा हो तो रुधिरविकार, पुत्र, स्त्रीबाधा, क्रोधवृद्धि, बलहानि, राजयुद्ध और चित्तशुद्धि हो ॥१२॥

भूनन्दनेहीनबलोपपन्नेस्यात्कामिनीसूनुधनादिचिन्ता॥
विरोधिवर्गैर्विविधोपसर्गैर्दुःखान्यनेकानिभवन्तिनूनम्॥१३॥

यदि अधमबल मंगलकी दशा हो तो स्त्री, पुत्र, धनकी चिन्ता और अनेक दुःख हों॥१३॥

पृथ्वीसुतो नष्टबलाधिरूढः प्रौढत्वमुच्चैर्द्विषतांकरोति॥
रणांगणेक्षीणमहत्त्वमेवविद्यार्थनाशंस्वजनैर्विरोधम्॥१४॥

यदि नष्ट बल मंगलकी दशा हो तो शत्रुवृद्धि, युद्धमें पराजय, विद्या और अर्थका नाश और आपसमें विरोध बढै॥१४॥

लाभेरिगेहेसहजेमहीजश्चेन्नष्टवीर्योतितरां शुभःस्यात्॥
दुष्टंफलंस्वल्पतरंकरोतिप्रकृष्टवीर्योतितरांशुभस्स्यात्॥१५॥

यदि मंगल ११, ६, ३ स्थानोंमेंसे किसीमें नष्टबल होकर भी पडै तो शुभ फल देता है और यदि उत्तम वीर्य हो तो अत्यन्तही शुभ हो॥१५॥

इति भौमः॥

सौम्यार्थबुद्धिस्स्वजनाधिकत्वंराज्यं प्रतापश्चकुलानुमानात्॥
प्रालेयरश्मेस्तनुजोबलीयान्स्वपाककालेफलमातनोति॥१६॥

यदि बली बुधकी दशा हो तो स्वजनवृद्धि, राज्यप्रताप (कुलानुरूप) और सत्कर्ममें बुद्धिकी वृद्धि हो॥१६॥

मित्रपुत्रसुखसाहसवृद्धिम्बुद्धिवृद्धिमपिलाभविलासान्॥
शीतभानुतनुजोनुजलक्ष्मीम्मध्यवीर्यसहितोहिविधत्ते॥१७॥

यदि मध्यम वीर्य बुधकी दशा हो तो मित्र, पुत्र, सुख, पराक्रम, बुद्धि, लाभ, विलास और लक्ष्मीकी वृद्धि हो॥१७॥

निजानुजाद्यैर्हिनयातिसौख्यंविख्यातिनीतिक्षयतां प्रयाति॥
द्रोहान्द्विजानांद्विजराजसूनोर्विहीनसत्त्वस्यनरोदशायाम्॥१८॥

यदि हीनबल बुधकी दशा हो तो अपने वर्गसे दुःख, यशनाश और ब्राह्मणोंसे द्रोहवृद्धि हो॥१८॥

अनर्थमर्थोपहतिन्नितान्तंस्वजातिवैरेणचकार्यघातम्॥
संवत्सरे शीतकरस्यसूनुर्विनष्टसारःकुरुतेनराणाम्॥१९॥

यदि नष्टबल बुधकी दशा हो तो अनर्थ, अर्थहानी, जातिवैर, कार्यनाश इत्यादि फल हों॥१९॥

विहायरन्ध्रान्त्यरिपुस्थलानिप्रालेयमूर्तेर्विबलस्तनूजः।
अनिर्मलस्यापिफलस्यकुर्यादलंकिलोक्तेनिजपाककाले॥२०॥

यदि नष्टबलभी बुध ८, १२, ६ स्थानोंमें न पडे तो अपनी दशामें उत्तमही फल करेगा॥२०॥

इति बुधः॥

दन्तावलाश्वाप्तिरलंनृपालात्कुलानुमानेनचराज्यलब्धिः ॥
विदग्धबुद्धिःप्रभवेन्नराणांगीर्वाणवन्द्येनिरवद्यसत्त्वे ॥२१॥

यदि पूर्णबल बृहस्पतिकी दशा हो तो हाथी, घोडाकी प्राप्ति कुलानुमानसे राज्यप्राप्ति और बुद्धिकी वृद्धि हो ॥२१॥

मानोनृपालात्किलपुत्रमित्रसुवस्त्रलाभोद्रविणागमश्च ॥
सुखोपलब्धिर्विपुलासलीलंदम्भोलिभृन्मंत्रिणि मध्यवीर्ये ॥२२॥

यदि बृहस्पति मध्यबल हो तो राजासे मान, पुत्र मित्रसे सुख, वस्त्र, द्रव्य प्राप्ति और सुख हो ॥२२॥

पुण्यंपरिक्षीणमतीवचित्तंभ्रान्तम्भवेद्वित्तविनाशनंच ॥
कलिः खलैः पाकफलंकिलोक्तन्दंभोलिशालीज्यबले विहीने ॥२३॥

यदि हीनबल बृहस्पतिकी दशा हो तो पुण्यनाश, चित्तमें भ्रम, द्रव्यनाश और दुष्टजनोंसे युद्ध हो ॥२३॥

महाभयार्तः कृशताहिमूर्तौ भवेन्निवृत्तिर्विषयादिसौख्यात् ॥
मित्रैर्विरोधंबहुधारिवृद्धिः कष्टंगुरौ नष्टबलोपपन्ने ॥२४॥

यदि नष्टबल बृहस्पतिकी दशा हो तो महाभय, शरीरमें दुर्बलता, सुखहानि, मित्रोंसे विरोध, शत्रुवृद्धि और नानाप्रकारके कष्ट हों ॥२४॥

व्ययारिरन्ध्राणिविहायभावे यंत्रस्थितश्चित्रशिखण्डिडसूनुः ॥
बलोज्झितोयद्यपिपाककालेदुष्टंफलंपूर्णतया न दत्ते ॥२५॥

यद्यपि बृहस्पति निर्बल हों पर यदि व्यय १२ अरि ६ और रन्ध्र ८ स्थानमें न हों तो अपनी दशामें दुष्टफलकारक नहीं होते ॥२५॥

इति गुरुः ॥

विलसितानिविलासवतीजनैर्बहुधनानिचसूनुसुखान्यपि ॥
उशनसोहिदशात्र बलीयसीवितनुतेनृपतेः खलु गौरवम् ॥२६॥

यदि सबल शुक्रकी दशा हो तो स्त्रीसुख, धनसुख, पुत्रसुख और राजद्वारा सन्मानभी होवे ॥२६॥

अत्यर्थमर्थागमनान्नपानसौख्यानिशुभ्रांबरगोतुरङ्गान् ॥
कुरङ्गनेत्राकुलकेलिलाभन्दशाभृगोर्मध्यबलस्यकुर्यात् ॥२७॥

यदि मध्यबल शुक्रकी दशा हो तो राजासे द्रव्यप्राप्ति, अन्नपानादिप्राप्ति, श्वेतवस्त्र, गौ, तुरङ्गप्राप्ति और स्त्री सुख होवे ॥२७॥

शत्रूदयोमित्रकलत्रपीडायशोर्थनाशश्चविदेशयानम् ॥
कलेवरेनिर्बलतानिलेनबलोज्झितस्यास्फुजितोदशायाम् ॥२८॥

यदि बलहीन शुक्रकी दशा हो तो शत्रुवृद्धि, मित्रपीडा, स्त्रीपीडा, यश, अर्थहानि, विदेशयात्रा और शरीरमें वायुद्वारा निर्बलता हो॥२८॥

दाराधिकारात्मजसौख्यहानिंधनक्षयंवैरिभयंचशोकम्॥
लोकापवादंलभतेमनुष्योविनष्टसारस्यभृगोर्दशायाम्॥२९॥

यदि नष्टबल शुक्रकी दशा हो तो स्त्रीसे दुःख, धननाश, शत्रुभय, शोक और लोकापवाद हो॥२९॥

द्वादशंरसमथाष्टमं विनास्थानकृद्भवतिचान्यवेश्मनि॥
निंदितोपियदिहायनेतदापूर्वदेवसचिवोहिकष्टदः॥३०॥

यदि शुक्र निंदित हो और द्वादश १२ षष्ठ ६ और अष्टम स्थानको छोडकर अन्य स्थानोंमें पडे तो उतना कष्ट नहीं करता॥३०॥

इति शुक्रः॥

भिल्लाधिपत्यं लिखनाधिकारंदेशाधिपत्यं कुरुतेनरेशात्॥
हिरण्यमारण्यपतेर्दशायांसारेणपूर्णस्तरणेस्तनूजः॥३१॥

यदि पूर्णबल शनिकी दशा हो तो भिल्लोंका स्वामित्व, लेखाधिकार (मुहर्रिरी) राजासे देशाधिपत्य (जिलेदारीत्यादि) और भिल्लद्वारा धनप्राप्ति हो॥३१॥

कोशोट्टदुर्गाश्वतरादिरक्षांकष्टंचदुष्टैः कलहप्रसंगम् ॥
करोतिपाकेखलुमध्यसारश्शनैरोनर्थमथार्थनाशम् ॥३२॥

मध्यबल शनिकी दशा हो तो कोश, मार्ग, किला, घोडा आदिकी रक्षाका अधिकार मिले, दुष्ट जनोंसे वैर और अनर्थ तथा धननाश हो ॥३२॥

चौरादरातेर्नृपतेस्स्वनाशंकार्श्यंशरीरेप्रकृतेर्विकारम् ॥
मित्रैर्विरोधंकुरुतेदशायांविहीनवीर्योननु भानुसूनुः ॥३३॥

यदि हीनबल शनिकी दशा हो तो चोरसे भय, राजद्वरा द्रव्यनाश, शरीरमें रोग और दुर्बलता और मित्रोंसे विरोध हो ॥३३॥

कलत्रपुत्रादिवियोगदुःखैस्सन्तप्तदेहोबहुभिर्विरोधम् ॥
भवेद्दशायांहियशोविनाशोविनष्टसारोष्णकरात्मजस्य ॥३४॥

यदि नष्टबल शनिकी दशा हो तो पुत्र, कलत्रवियोग, दुःख और बहुतोंसे विरोध और यशहानि हो ॥३४॥

विलग्नतोलाभनिकेतनेवापराक्रमेशत्रुनिवेशनेवा ॥
दिनेशसूनुर्यदिनिन्दितोपिदुष्टंफलंनो सकलंददाति ॥३५॥

यदि निंद्यभी शनि होवे परन्तु लग्नसे लाभ ११ पराक्रम ३ और शत्रु ६ स्थानमेंसे किसी एकमें

हो तो सम्पूर्ण दुष्ट फल नहीं करता ॥३५॥

इति शनिः।

लग्नेचरेश्रेष्ठफलाहिमध्याकष्टाद्दकाणैः क्रमशोदशोक्ता॥
स्थिरेचकष्टाशुभदाच मध्यामिश्राधमामध्यतमाच सम्यक्॥३६॥

यदि लग्न चर हो तो उसकी दशा दृकाणानुरुप करना, अर्थात् पहिला, दृकाण श्रेष्ठ, दूसरा मध्य, तीसरा कष्ट, स्थिर लग्नमें प्रथम अशुभ, द्वितीय शुभ, तृतीय मध्य और द्विस्वभावमें प्रथम मध्य, द्वितीय अशुभ, तृतीय शुभ जानना॥३६॥

खेचारिणांभावफलानियानिश्रेष्ठानिदुष्टानिविमिश्रितानि॥
तान्येवकल्प्यानिविलग्ननाथवशादशेषाणि दशाप्रवेशे॥३७॥

जिस प्रकारसे ग्रहोंका उत्तम, मध्यम, निन्द्य फल कहा गया है वैसेही लग्नदशाके विचारमें लग्नेशके अनुकूल फल कहना॥३७॥

इति दशाफलाध्यायः॥

महादशाकालमहत्त्वसत्त्वे फलस्यसूक्ष्मत्वनिदर्शनाय॥
अन्तर्दशायांसरलामलानिफलानिमौलैरुदितानि वच्मि॥१॥

महादशाका काल अधिक है इससे फलकी सूक्ष्मता

जाननेके हेतु श्रेष्ठोंके कहे हुये फलोंको अन्तर्दशाके प्रकारसे कहता हूँ॥१॥

नृपप्रसादोधनधान्यवृद्धिस्त्रीमित्रपुत्रादिसुखानिनूनम्॥
अन्तर्विपाकंकुरुतेमृगांकः पाकेयदापंकजनायकस्य॥२॥

यदि सूर्यकी दशामें चन्द्रकी अन्तर्दशा हो तो राजाकी प्रसन्नता, धनधान्यवृद्धि, स्त्री, मित्र और पुत्रसुख होवे॥२॥

सेनापतित्वंनृपतेस्सकाशादारक्तवस्त्राभरणादिवृद्धिः॥
भूचारुचामीकरताम्रलाभो भूनन्ददेभानुदशाप्रपन्ने॥३॥

यदि मंगल सूर्यके अन्तरमें हो तो राजद्वारा सेनापतित्व, रक्त वस्त्र, आभरणादिप्राप्ति, पृथ्वी, सुवर्ण और ताम्रलाभ हो॥३॥

निरुद्यमत्वंव्यसनानिपुंसामरातिरुग्भीतिमथार्थनाशम्॥
असज्जनेदानरतिम्प्रकुर्यात्सूर्यस्यपाकेहिमृगांकसूनुः॥४॥

यदि बुध सूर्यके अन्तरमें हो तो उद्यमहानि, दुःख, शत्रु और रोगभय, अर्थनाश और असद्दानमें रुचि हो॥४॥

मित्रान्तरे चित्रशिखण्डिसूनोरन्तर्दशाश्चेभनृपालतोषम्॥
करोतिलाभं विपुलन्नृपालात्पद्मालयालंकरणं नृपालात्॥५॥

यदि बृहस्पति सूर्यके अन्तरमें हो तो, अश्व, इभ (हाथी) राजतोष, इत्यादि अनेक प्रकारके लाभ हों ॥५॥

देहे कृशत्वंचमतिभ्रमत्वंमहत्त्वसत्त्वस्यहतिन्नितान्तम् ॥
सद्भिर्विरोधं बहुधाप्रकुर्याद्भानोर्दशायामुशनाविषादम् ॥६॥

यदि सूर्यके अन्तरमें शुक्र हो तो शरीरमें दुर्बलता, मतिभ्रम, मान और बडाईका नाश और अधिकतर सज्जनोंसे विरोध हो ॥६॥

क्षुच्छास्त्रबाधाबहुधातिरोगं वियोगमात्मीयजनैःकृशत्वम् ॥
भूमीपतेर्भीतिमतीवनित्यंकुर्याच्छनिर्भानुदशाप्रपन्नः ॥७॥

यदि भानुके अन्तरमें शनि हो तो क्षुधा, और शस्त्रकी बाधा, रोग, वियोग, दुर्बलता और राजासे भय हो ॥७॥

इति सूर्यमध्येऽन्तर्दशा ।

रुधिरपित्तविकारकलेवरः कृशतरोहिनरो नृपभीतितः ॥
भवतियाति वृथार्थविनाशनं तुहिनरश्मिदशास्थदिनेश्वरे ॥८॥

यदि चन्द्रके अन्तरमें सूर्य हों तो रुधिरका विकार, पित्तका विकार, दुर्बलता, राजभय और अर्थका व्यर्थ

नाश हो ॥८॥

द्रव्यभ्रंशं सौख्यनाशं विरोधं कुस्त्रीसंगंवाग्विवादं खलैश्च ॥
भूपाद्भीतिंदेहकार्श्यम्प्रकुर्यादारस्ताराधीशपाकप्रचारः ॥९॥

यदि मंगल चन्द्रके अन्तरमें हो तो द्रव्यनाश, सुखनाश, विरोध, दुष्टस्त्रीलाभ, दुष्टोंके साथ युद्ध, राजभीति और दुर्बलता हो ॥९॥

सुवर्णशस्त्राम्बरवाहनानां प्राप्तिं निजान्योन्नतिमिष्टताप्तिम् ॥
ददाति लोके पदवींबुधानांसुधांशुसूनुर्हि विधोर्दशायाम् ॥१०॥

यदि चन्द्रके अन्तरमें बुध हो तो सुवर्ण, शस्त्र, वस्त्र, वाहन, पशुकी वृद्धि और पण्डिताईकी पदवी प्राप्ति इत्यादी फल होवें ॥१०॥

गीर्वाणसद्ब्राह्मणपुण्यकार्येभवेन्नराणां धिषणामनोज्ञा ॥
क्षोणीपतेराप्तिरतींव नित्यं बृहस्पतौशीतकरान्तरस्थे ॥११॥

यदि बृहस्पति चन्द्रके अन्तरमें हो तो देव, ब्राह्मण और पुण्यकार्यमें बुद्धि हो और राजद्वारा अधिक प्राप्ति होवे ॥११॥

पृथ्वीपतेर्गौरवसम्पदाप्तिस्सुहृद्विधिश्चाप्यधिकारिवर्गात् ॥
कलत्रपुत्रादिसुखानिपाकेचन्द्रस्यदैत्येन्द्रगुरौ प्रयाते ॥१२॥

यदि शुक्र चन्द्रके अन्तरमें हो तो राजद्वारा प्रतिष्ठा, धनकी प्राप्ति तथा अधिकारीवर्गसे मित्रता और स्त्रीपुत्रादिकोंका सुख हो॥१२॥

स्वमित्रपुत्रैस्सहशत्रुभावं शत्रुप्रवृद्धिंबलकान्तिशान्तिम्॥
करोतिचन्द्रस्यदशान्तराले फलंकिलेदंनलिनीशसूनुः॥१३॥

यदि शनि चन्द्रके अन्तरमें हो तो मित्र, पुत्रसे शत्रुता, शत्रुवृद्धि और बल और कान्तिका नाशहो॥१३॥

इति चन्द्रमध्येन्तरम्॥

रिपुभयंचसुहृत्सुतशत्रुता व्ययबहुव्यसनार्त्यसुखानिच॥
खलुभवन्तिनृणांक्षितिनंदने तुहिनभानुतनूजकृतांतरे॥१४॥

यदि मंगलके अन्तरमें बुध होवें तो शत्रुभय, मित्र पुत्रसे विरोध और व्यय, दुःखादि होवें॥१४॥

कदशनंधनधान्यविनाशनं निजजनापचयं च रिपूदयम्॥
अवनिसूनुदशांत्रिदशार्चितेविशतिभीतिमतीवसमादिशेत्॥१५॥

यदि मंगलके अन्तरमें गुरु होवें तो कुत्सित अन्न मिले, धन धान्य आदि नष्ट हों, स्वजनमें विरोध और शत्रुवृद्धि होवे॥१५॥

खलजनैः कलहं प्रकारोत्यलं निजजनैरपि शत्रुसमुद्भवम्॥

विकलतांबलहीनतयानृणामुशनसःक्षितिजेन्तरजादशा॥१६॥

यदि मंगलके अन्तरमें शुक्र होवे तो खलोंसे और आत्मवर्गमें विरोध बढे और बलहानिके कारण विकलता प्राप्त होवे॥१६॥

गाढाहि पीडानयनाननेषुविचार्च्चिकारक्तगदादिभीतिः॥
भवेद्विलोलाकमलाप्यलोभाभौमान्तराले नलिनीशसूनौ॥१७॥

यदि मंगलके अन्तरमें शनिकी दशा होवे तो बडी पीडा नेत्र और मुखमें हो, खाज और रक्तविकारसे रोग हो और लक्ष्मी भी स्थिर न रहे॥१७॥

विभूषणक्षोणिहिरण्यजन्यावाणिज्यदैवाभ्युदयंसदैव॥
परोपकारंक्षितिनन्दनस्यदशां प्रयातःकुरुतेदिनेशः॥१८॥

यदि मंगलके अन्तरमें सूर्यकी दशा हो तो भूषण, पृथ्वी और द्रव्यकी वृद्धि हो, व्यापार और भाग्यका उदय हो और परोपकारमें चित्त हो॥१८॥

योषाहर्षोत्कर्षभूषविशेषंनाशंकुर्याद्विद्विषांसाभृशंहि॥
मुक्तायुक्तंरौप्यमप्यम्बराणिक्षोणीपुत्रान्तर्गतोरात्रिनाथः॥१९॥

यदि मंगलके अन्तरमें चन्द्रमाकी दशा हो तो स्त्रीको सुख, भूषणप्राप्ति, शत्रुनाश और मुक्तायुत रौप्य

और वस्त्रकी प्राप्ति हो ॥१९॥

इति भौममध्येन्तरम् ॥

विलासिनीकेलिविलासमुच्चैरुच्चासनाध्यासनकाञ्चनानाम् ॥
करोतिलाभंसुरराजपूज्योद्विजाधिराजात्मजपाकसंस्थः ॥२०॥

यदि बुधके अन्तरमें बृहस्पति हो तो स्त्रीकेलिविलाससुख, ऊंचापद और सुवर्णादि द्रव्योंका लाभ हो ॥२०॥

योषादितोषंबहुशोंशुकानांचतुष्पदानामथमौक्तिकानाम् ॥
रौप्यस्यलाभंजनयेज्जनानांचेद्दानवानांहिगुरुर्ज्ञपाके ॥२१॥

यदि बुधके अन्तरमें शुक्र होवें तो स्त्रीसुख और वस्त्र, चतुष्पद जीव, मोती और चांदी आदि द्रव्यलाभ होवे ॥२१॥

बलस्यहानिः कुपितानिलेनभूपालतोभीर्बहुधाखलाच्च ॥
भवेद्दशायांशशिनन्दनस्यदिनेशजस्यान्तरजा दशाचेत् ॥२२॥

यदि बुधके अन्तरमें शनिकी दशा हो तो वायुकोपसे बलहानि, राजा और दुष्टजनोंसे अनेक प्रकारका भय हो ॥२२॥

उर्वीपतेर्गौरवमर्थलाभंसम्यक्त्वमभ्येतिविभूतितोषम् ॥
नरोयदाशीतकरात्मजस्यपाकेदिनेशःकुरुते प्रवेशम् ॥२३॥

यदि बुधके अन्तरमें सूर्य होवे तो राजा मान करै, द्रव्यलाभ हो, और ऐश्वर्य बढे ।।२३।।

सहोदरैर्वैरमथार्थनाशम्मरुद्विकारात्कृशतां शरीरे।।
कोपंनृपालात्कुरुते बुधस्य दशान्तरालेप्रचलन्कलावान् ।।२४।।

यदि बुधके अन्तरमें चन्द्रमा हो तो सगेभाइयोंसे वैर, अर्थनाश, वायुके विकारसे शरीरमें दुर्बलता और राजाका कोप हो ।।२४।।

विचर्चिकादद्रुमहाव्रणाद्यैः स्यात्प्राणिनांदेहकृशत्वमंगे।।
कण्डूद्रमोद्वेगवियोगबाधाबुधस्यमध्येवसुधातनूजे ।।२५।।

यदि बुधके अन्तरमें मंगल होवे तो किलकिली, दाद और विस्फोटकादिकोंके कारण शरीरमें दुर्बलता और खाज, उदासी और वियोगदुःख हो ।।२५।।

इति बुधेन्तरम् ।।

कफानिलाभ्यांविकलत्वमंगेनंगेविहीनत्वमरातिवृद्धिम् ।।
क्षीणंचपुण्यंद्रविणंप्रकुर्याद्गीर्वाणवंद्यान्तरचारिशुक्रः ।।२६।।

यदि बृहस्पतिकी दशामें शुक्रका अन्तर हो तो कफ और वातसे शरीरमें पीडा, धातुक्षीणता, शत्रुवृद्धि, पुण्यनाश और द्रव्यनाश हो ।।२६।।

अरातिभूमीपतिभीतिमुग्रांसंग्रामतश्चापचयंव्ययंच ॥
कफंप्रकुर्यात्सुरराजपूज्यदशां प्रपन्नोरविनन्दनश्चेत् ॥२७॥

यदि बृहस्पतिकी दशामें शनिका अन्तर हो तो शत्रुभय, राजभय, संग्राममें पराजय, धननाश और कफवृद्धि हो ॥२७॥

लीलाविलासं ललनातनूजैर्देवद्विजानां ननुपूजनंच ॥
विनाशनंशत्रुजनस्यकुर्यात्सूर्यस्सुराचार्यदशांप्रपन्नः ॥२८॥

यदि बृहस्पतिकी दशामें सूर्यका अन्तर हो तो स्त्री और पुत्र विलाससुख देवता, और ब्राह्मणकी पूजा और शत्रुनाश हो ॥२८॥

भवेन्नृपालात्सकलार्थसिद्धिस्सुवर्णवस्त्रामलचैलवृद्धिः ॥
सुखान्यनेकानिभवन्तिचन्द्रेसुरेन्द्रवन्द्यस्यदशांप्रयाते ॥२९॥

यदि गुरुके अन्तरमें चन्द्रमा हो तो राजद्वारा अर्थसिद्धि, सुवर्ण, वस्त्र आदिकी वृद्धि और अनेकानेक सुख हों ॥२९॥

वृद्धिर्धनानामथवाहनानां द्विषज्जनानांनिधनंचनूनम् ॥
मानोनरेन्द्रात्त्रिदशार्चितस्यदशाम्प्रपन्नेऽवनिनन्दने स्यात् ॥३०॥

यदि गुरुके अन्तरमें मंगल हो तो धनवृद्धि, वाहनवृद्धि,

शत्रुनाश और राजद्वारा सन्मान होवे॥३०॥

यशोविनाशंचशरीरकार्श्यमीर्षास्वमित्रैश्चकलत्रवादम्॥
सुखार्थहानिंत्रिदशज्यपाकेशशांकसूनुः कुरुतेस्ववेशे॥३१॥

यदि गुरुके अन्तरमें बुध हो तो यशहानि, शरीरमें दुर्बलता, ईर्षा अपने मित्र और स्त्रियोंसे विवाद, सुख और द्रव्यनाश होवे॥३१॥

इति गुरावन्तरम्॥

सूनीलचैलामलनीलकानां नीलोर्णिकानांमहिषीजनानाम्॥
भवेदवाप्तिर्भृगुनन्दनस्यदशांप्रपन्नेदिनकृत्तनूजे॥३२॥

यदि शुक्रके अन्तरमें शनि होवे तो नीलवर्णवस्त्र, नीलमणि, नील कम्बल और महिषी आदिकी प्राप्ति हो॥३२॥

खलान्नृपालाच्चकिलोरुभीतिबलक्षयंशत्रुविवृद्धिमुच्चैः॥
नीचैर्विवादंभृगुजस्यपाकेसूर्यस्सदासम्प्रविशन्करोति॥३३॥

यदि शुक्रके अन्तरमें सूर्य होवे तो खलसे और राजासे भय होवे, बलहानि होवे, शत्रुवृद्धि हो और नीचोंसे कलह हो॥३३॥

स्वल्पोलाभः श्लेष्मशीतादिबाधाक्रोधावेशःपुत्रमित्रादिकेषु॥
किंचित्पीडास्याज्जडांशोर्दशायामध्यारूढे प्रौढदैत्यार्चितस्य॥३४॥

यदि शुक्रके अन्तरमें चन्द्रमा होवे तो लाभ थोडा, श्लेष्मा और शीतकी बाधा, पुत्र मित्रादिकोंके प्रति क्रोध, और शरीरमें पीडा होवे॥३४॥

विपक्षपक्षक्षयदक्षतास्याद्धनक्षयोत्यर्थमरुत्प्रकोपः॥
वेश्यारतिर्नैवसुखंकदाचिदन्तर्दशाचेद्भृगुजेकुजस्य॥३५॥

यदि शुक्रके अन्तरमें मंगल हो तो शत्रुनाश, धननाश, और वायुकृत शरीरमें विकार, वेश्यासे प्रीति और सुखनाश होवे॥३५॥

भूदेवदेवार्चनमुन्नतत्वं सद्बुद्धिविद्याप्रमदासुखानि॥
प्राप्तिश्च कीर्तिश्चभृगोर्दशायांशशां कजस्यान्तरजादशाचेत्॥३६॥

यदि शुक्रके अन्तरमें मंगल होवे तो ब्राह्मणपूजा, देवपूजामें बुद्धि बढै, ऐश्वर्य बढै, स्त्री सुख हो, लाभ हो और कीर्ति हो॥३६॥

भोजनाम्बरहिरण्यमणिभ्यः क्षोणिपादपिसुखानिनितान्तम्॥
पूर्वदेवसचिवस्यदशायां देवदेवसचिवायदिसंस्थः॥३७॥

यदि शुक्रकी दशामें गुरु हो तो भोजन, वस्त्र, सुवर्ण, मणि आदि प्राप्त हों, राजद्वारा सुख हो, और उत्तम फल होवे॥३७॥

इति शुक्रमध्येन्तरम्।

स्थानसंचलनकष्टमनन्तंदुष्टतोथपरिपीडनमंगे।।
पुत्रमित्रवनिताकृतवैरंसंप्रयच्छतिरवीरविजस्थः ।।३८।।

यदि रवि शनिके अन्तरमें हो तो स्थानभ्रंश कष्ट, शरीरमें पीडा और पुत्र, मित्र, स्त्रीसे विरोध हो।।३८।।

आलस्यनिद्राबलहीनतास्यादलंप्रयासैः कुरुतेऽग्निमांद्यम्।।
हृद्रोगबाधांविविधांसुधांशुस्तिग्मांशुपुत्रस्यदशांप्रविष्टः ।।३९।।

यदि शनिके अन्तरमें चन्द्र हो तो आलस्य, निद्रावृद्धि करै, बलहीनता हो, उद्योग व्यर्थ हो, अग्निमांद्य हो, हृदयमें बाधा आदि अनेक दुःख हो।।३९।।

रक्तवातजनितैश्चविकारैर्वैरितस्करभयैरपिनित्यम्।।
जायतेहिमनुजोहततेजाभानुजेन्तरदशावनिजस्य।।४०।।

यदि शनिके अंतरमें मंगल हो तो रक्तवातविकार और चोरभय हो और प्रतापनाश हो।।४०।।

आत्मजानुजधनांगनासुखं वाहनाप्तिमवनीशगौरवम्।।
वैरिनाशनमनूवैभवं यच्छतीन्दुतनयःस्थितश्शनौ।।४१।।

यदि शनिमें बुधका अन्तर हो तो पुत्र, भ्रातृ, धन, स्त्रीसुख हो, वाहन मिले, राजसन्मान हो, शत्रुनाश हो और द्रव्यप्राप्ति हो।।४१।।

धर्मसाधनविधानमुन्नतिस्स्यादरातिनिहतिश्च भूपतेः ॥
ईप्सितातिरपिसूर्यजान्तरे नाकनायकपुरोहिते स्थिते ॥४२॥

यदि शनिके अन्तरमें गुरु हो तो धर्मवृद्धि, उन्नति, शत्रुनाश और मनोवांच्छित फलकी प्राप्ति होवे ॥४२॥

पुत्रमित्रजनितोत्सवमुच्चैस्सम्प्रयाति नृपतेरपिलाभम् ॥
भूमिदेवनिवहार्चनबुद्धिर्भार्गवेशनिदशान्तरसंस्थे ॥४३॥

यदि शुक्र शनिके अन्तरमें हो तो पुत्र और मित्रसे हर्ष मिले, राजद्वारा लाभ हो और ब्राह्मणपूजनमें भक्ति बढै ॥४३॥

इति शनेरन्तरम् ॥

इति ताजिकभूषणे दशान्तर्दशाफलाध्यायः ॥

मासप्रवेशेतिशयेनसूक्ष्मंफलंप्रवक्तुन्नहिशक्यतेत्र ॥
तेनाधुनासद्गणकोपयुक्तं तत्साधनेहं कथयाम्युपायम् ॥१॥

मासप्रवेशका फल अत्यन्त सूक्ष्म होनेके कारण निरूपण नहीं किया जा सकता है, इस हेतु मासप्रवेशसाधनोपाय गणकोंके उपकारार्थ निरूपण करता हूँ ॥१॥

प्रसूतिकालोद्भवमध्यमोर्कस्स्पष्टोपिचैकादशधानिधाय ॥
प्रत्येकमेकादिभिरन्वितोयं द्वितीयमासाद्रवयोभवन्ति ॥२॥

जन्मकालके स्पष्ट मध्यमार्कको ११ स्थानोंमें स्थापि करै और क्रमशः एक, दो, तीन आदि जोंडत जावे तो मासप्रवेशका स्पष्ट सूर्य होगा यथा किसीक जन्म सूर्य ७।२४।५९।१९ हो तो प्रथमास प्रवेशक भी वर्षप्रवेशवत् यही सूर्य होगा, अब द्वितीय मासके निमित्त एक जोडा तो भंया ८, २४, ५९, १ औरं तृतीय मासके निमित्त जोडा हो तो भय ९, २४, ५९ ऐसेही और भी मासोंका जानना ॥२॥

मासप्रवेशोद्भवमध्यभानुर्लवीकृतोधोगुणभूहतोस्मात् ॥
खनन्दनागाप्तलवादियुक्तोभवेदसौसावयवोदिनौघः ॥३॥

मासप्रवेशमें जो सूर्य हो उसे उक्तरीतिसे विकलात्मक करै और पृथक् स्थापन करके "गुणभू" १३ से गुणित करै और "खनन्दनाग" ८९० से भाग लेवे फिर उसे पृथक् स्थापित विकलात्मक सूर्येमें जोडदेवे तो यह अवयव सहित अहर्गण होगा ॥३॥

मासप्रवेशकालीननलिनीपतितस्स्फुटात् ।
लग्नंकुर्याच्च चन्द्राद्या नभोमण्डलचंचलाः ॥४॥

मासप्रवेशमें स्वेष्टसूर्यके अनुसार जो लग्न हो उसीको मासप्रवेश लग्न मानकर चन्द्रादि ग्रह, अपने २ स्थानपर

स्थापित करै।।४।।

लग्नेश्वरांशाधिपतिर्विलग्ननवांशनाथश्चतयोर्बलीयान्।।
सएवमासेश्वरतांप्रयातिफलंतदीयं किलकीर्त्तयामि।।५।।

लग्नपतिके नवांशका स्वामी और लग्नके नवांशका स्वामी इनमें विचारसे जो बली हो वही मासपति जानना उसका फल अब कहता हूँ।।५।।

द्रविणलाभमतीवमहोदयं नरपतेर्गुरुगौरवमादिशेत्।।
अधिकतांयदिमासपतिर्भवेद्दिनकरोनकरोति रिपूदयम्।।६।।

यदि सूर्य मासेश हो तो द्रव्यलाभ, भाग्योदय, राजसत्कार अधिक होवे और शत्रुनाश होवे।।६।।

रजतमौक्तिकशुभ्रसदम्बरप्रियजनागमनं सुखमद्भुतम्।
नृपकृतंसततंयदिमास्पतिर्द्विजपतिर्जयतीर्थरुचिन्दिशेत्।।७।।

यदि चन्द्रमा मासपति होवे तो चांदी, मोती, श्वेतवस्त्रलाभ और प्रियजनसमागम और अद्भुत सुख हो, राजा मान करै और तीर्थयात्रामें रुचि हो।।७।।

क्षितिपतेर्द्रविणानिचवैरिणामपचयं विजयं चरणांगणे।।
अनुदिनन्ननुमासपतिः करोत्यवनिजोवनिजोत्थसुखान्यपि।।८।।

यदि मंगल मासेश हो तो राजासे द्रव्यप्राप्ति,

शत्रुनाश, युद्धमें जय और पृथ्वीका सुख इत्यादि फल प्रतिदिन होवे॥८॥

बहुविलाससुखैस्सहितं करोत्यतितरांवरवस्त्रसमागमैः॥
अपि नरं यदि मासपतिस्सुतस्सितरुचेस्तरुचेष्टितमानसम्॥९॥

यदि बुध मासेश हो तो नाना प्रकारके विलास वस्त्र आभूषणकी प्राप्ति और अच्छे २ कामोंमें रुचिकी वृद्धि होवे॥९॥

बुधजनोपकृतौ विहितादरंननुनरंकुरुतेसुरपूजने॥
अविरतंयदिमासपतिः पतिस्सुवचसांवचसांरचने मतिम्॥१०॥

यदि बृहस्पति मासेश हो तो पंडित लोगोंके उपकारमें चित्त लगे, देवपूजनमें बुद्धि हो और निरन्तर पठन पाठन और ग्रन्थरचनेमें बुद्धि हो॥१०॥

निजजनापचयश्चजयस्सदा सविनयेहिनयेरुचिरद्भुता॥
रतिमतिर्यदिमासपतिर्भवेत्काविरहोविरहोरिजनैर्ध्रुवम्॥११॥

यदि शुक्र मासेश हो तो अपने जनोंमें अपचय हो, विजय हो, उत्तम नीतिमें प्रीति हो और विलासमें मति हो॥११॥

द्रुमलतापरिरोपणसादरोवरतरोहिनरो नृपगौरवात्॥
विलसितैस्सहितोयदिमाः पतीरविभवोविभवोत्थसुखान्वितः॥१२

यदि मासेश शनि हो तो वृक्ष, लता आदिके आरोपणकी बुद्धि हो, राजद्वारा प्रतिष्ठा हो और नानाप्रकारके विलास प्राप्त होवें॥१२॥

मासेश्वराणांबलिनांफलानिकिलप्रणीतानि शुभाशुभानि॥
बलस्यमध्याधमतायदास्यात्तदानुमानेन फलं प्रकल्प्यम्॥१३॥

यह मैंने मासेश्वरोंके फल शुभ अथवा अशुभ जैसे थे विचारके कहे, परन्तु जब बलहीन, मध्यबल वा अधमबल होवे तो अनुमानसे फल विचारके कहना चाहिये॥१३॥

सामान्यतोयद्यपिमासजातंफलंप्रणीतं हि तथापिसूक्ष्मम्॥
दशाविभागेनबुधोवदेत्तद्वैयथावर्षगतन्तथात्र॥१४॥

यद्यपि सामान्यसे मासजात फल कहागया तथापि सूक्ष्म फल विना दशाविभागके नहीं कहा जासकता अतः पंडित लोग विचारके जैसे वर्षमें मासफल निरूपण किया वैसे मासमें दिनफल कहें॥१४॥

इति मासफलानि।

मासप्रवेशोद्भवमध्यमोर्कस्स्पष्टोपिचैकांद्रिबलैस्समेतः॥
दिनाद्द्वितीयाद्रवयोभवंतिततोघटीसाधनमुक्तवत्स्यात्॥१५॥

मासप्रवेशका जो स्पष्ट सूर्य हो उसके अंशोंमें

एक एक जोडनेसे दूसरे दिनका सूर्य स्पष्ट होत है सूर्यद्वारा जैसा घटीसाधन कहा है वैसाही यहांभ जानना॥१५॥

दिनप्रवेशकालीनान्नलिनीनायकात्स्फुटात्॥
भावास्सर्वेंचचन्द्राद्यास्साधनीयानभश्चरा:॥१६॥

दिनप्रवेश समयके स्पष्ट सूर्यहीसे समयके अनुकू सब लग्न और ग्रह स्पष्ट करने चाहिये॥१६॥

मदनसदनवर्त्तीमूर्तिपस्सौख्यपूर्ति
जनयतिमनुजानामिन्दुसंस्थानतोवा॥
भवसहजरिपुस्थास्सौम्यशुक्रामरेज्या:
परमविजयवृद्धिप्रौढिसिद्धचैभवंति॥१७॥

यदि दिनचर्यामें मूर्तिप (लग्नस्वामी) लग्नसे अथ चन्द्रलग्नसे मदन (सप्तम) स्थानमें स्थित हो तो अत्य सुखदायक हो और यदि भव ११ सहज ३ रि ६ इन तीनों स्थानोंमेसे किसी एकमें बुध, शु और गुरु इनमेंसे कोई ग्रह हो तो विजय हो अ बडेसे बडा कार्य्य सिद्ध हो॥१७॥

षष्ठाष्टमस्थोयदिलग्नपाल: खलग्रहैश्चेन्मिलितोमरेज्य:॥
गलद्बलोवाकिलमानवानान्तनोतिनानाविधमामयं स:॥१८॥

यदि लग्नस्वामी षष्ठ ६ अष्टम ८ हो और यदि बृहस्पति खलग्रहोंसे युक्त हो अथवा नष्टबल हो तो अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न हों॥१८॥

दुष्टस्तिष्ठेदष्टमेचेष्टखेटैर्हीनोरिष्टस्याप्तयेसंप्रदिष्टः॥
तस्मिन्वारेवैरिभीस्स्याज्जनानांचिन्तोद्वेगैर्वाग्विवादैर्युतानाम्॥१९॥

यदि कोई दुष्टग्रह अष्टम हो वा अपने शत्रुके स्थानमें पडे तो अरिष्टकारक होता है उस दिनमें शत्रुभय, चिन्ता और उदासी और वाक्कलह होवे॥१९॥

केन्द्रत्रिकोणद्रविणेषुसौम्याः पापास्त्रिलाभारिगता यदि स्युः॥
तस्मिन्दिनेतेविजयं विलासंधनागमंसंजनयंति नूनम्॥२०॥

यदि केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ और द्रविण २ स्थानमें सौम्य ग्रह हों और त्रि ३ लाभ ११ और अरि ६ स्थानोंमें पापग्रह हो तो उस दिन विजय विलास और धनागम हो॥२०॥

इति दिनचर्या।

स्यादन्नदोलग्नपतिस्सुखेशो भोज्यंचकन्दर्पपतिर्बुभुक्षा॥
भोक्ताम्बरेशश्शुभदृष्टयुक्तौविलग्नलाभौददतुस्सुभोज्यम्॥२१॥

लग्नपति अन्नदाता है, चतुर्थस्थानपति भोज्य है, सप्तमभावका स्वामी क्षुधाहै. और दशमेश भोक्ता है।

इनोंद्वारा भोजनादि विचार करना चाहिये यदि लग्नस्वामी और लाभ ११ स्वामी शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवें तो उत्तमभोजन मिले॥२१॥

भोज्याप्तिदौ जीवसितौतनुस्थौ राह्वर्कमन्दैस्तनुगैरनर्थः॥
पापग्रहास्सौम्ययुतेक्षितास्स्युः कष्टेनचान्नंलभते मनुष्यः॥२२॥

यदि शुक्र व जीव लग्नवर्ती होवें तो उत्तम भोजन मिले, यदि राहु, सूर्य, शनि, होवें तो अनर्थ और यदि पापग्रह सौम्यसे युक्त वा दृष्ट हों तो मनुष्य कष्टसे अन्न पावे॥२२॥

सूर्येवीर्यसमन्वितेतिलयुतं चन्द्रे च शाल्योदनं
भूपुत्रे चणकान्नमिन्दुतनये सद्दल्लमुद्गाशनम्॥
गोधूमप्रचुरं प्रियङ्गुसहितं गीर्वाणवंद्ये तथा
शुक्रेबर्जरिकायवान्नमुदितम्मन्देच माषोद्भवम्॥२३॥

यदि सूर्य बली हो तो तिलयुक्त अन्न भोजन करे, यदि चन्द्रमा हो तो चावल, यदि मंगल हो तो चना, यदि बुध हो तो मूंगकी दाल, यदि बृहस्पति हो तो गेहूं व कांगुन, यदि शुक्र हो तो बाजरा व चना और यदि शनि हो तो उड़दभोजन मिले॥२३॥

सूर्येचवीर्यसहितेकटुकंचचंद्रेक्षारंचतिक्तमवनीतनयेच सौम्ये॥
मिश्रंगुरौचमधुरं भृगुजे तथाम्लंमन्देकषायमशनेरसमामनन्ति॥२४॥

यदि सूर्य बली हो तो कटु, चन्द्रमा हो तो खारी, मंगल हो तो तीखा, बुध हो तो मिलाहुया, बृहस्पति हो तो मीठा, शुक्र हो तो खट्टा और शनि हो तो भोजनमें कषैला रस जानना॥२४॥

इति भोजनविचारः।

एतत्ताजिकभूषणं परगुणोत्कर्षे सहर्षा भृशं
तेषामेवविभूषणायविगुणानन्दायमन्दायते॥
यस्मात्सज्जलदेन्द्रनीलतरलामुक्तावलीनिर्मला
नैवालंकृतयेवलीमुखगलेसंक्षिप्तयेकेवलम्॥२५॥

यह त्राजिकभूषण नामक ग्रंथ केवल उन्हीं सज्जनोंका भूषण है जो दूसरोंका गुण देखकर प्रसन्न होते हैं पर मन्दोंको तो यह अत्यन्तही मन्द है, क्योंकि जलवत् स्वच्छ मोतीका हार यदि रिच्छ या वानरके गलेमें छोडा जावे तो केवल भारके सिवाय उसको क्या भूषण होगा॥२५॥

श्रीमद्देवगिरीशदेशविलसद्गोदावरीसत्सरि
त्तीरेपार्थपुरंवरंविजयते विश्वंभराविश्रुतम्॥

ज्योतिश्शास्त्रविचारसारचतुरैर्मत्पूर्वजैः संश्रितं
तेषां पुण्यफलं किलेदशमलम्मे वाग्विलासेमतिः ॥२६॥

श्रीमती देवगिरीश देशमें शोभायमान गोदावरी नदीके तटपर एक पार्थपुर नामक नगर है जो कि संसारमें विख्यात है और ज्योतिःशास्त्रके विद्वान् मेरे पूर्वज जहां रहते थे उन्हींलोगोंके प्रतापसे ऐसी बाणीकी रचनामें मेरी बुद्धि हुई है ॥२६॥

श्रीमन्मंगलमूर्तिपादकमलद्वन्द्वतिसेवोद्भव
स्फूर्त्याकोमलवाग्विलासविलसत्पद्यानवद्यम्भृशम् ॥
एतत्ताजिकभूषणंसुगणकप्रीत्यैचकारादरा
दालोक्याद्यकृतीर्गणेशगणकः श्रीढुंढिराजात्मजः ॥२७॥

श्री ढुंढिराजके पुत्र गणेशदैवज्ञने प्राचीन ग्रंथोंको विचारपूर्वक देखकर गणेशजीकी चरणकमलकी सेवासे बुद्धिवैभव पाकर अनेक प्रकारके पद्योंमें इस ग्रंथको रचा ॥२७॥

इति श्रीमत्ताजिकभूषणे दैवज्ञ-ढुंढिराजात्मजगणेशदैवज्ञविरचितेऽन्तिमोऽध्यायः

सवाद्वक्रमतो द्विबाणनिधिकौपक्षेऽसितेफाल्गुने
सौम्येभूतदिनेऽन्ववीवददिदं श्रीखेमराजाज्ञया ॥

सीतारामसुधीर्विचार्यबहुशोदत्त्वातथोदाहृतीर्य-
त्स्यान्मेस्खलितंतदस्तुविबुधैःक्षान्तंमुहुःप्रार्थये॥१॥

संवत् १९५२ फाल्गुन कृष्ण १४ बुधवारको श्रीखेमराजकी आज्ञानुसार सीतारामने विचारकर इसका अनुवाद किया और यथावसर उदाहरण भी दिये, जो कुछ इसमें मेरी भूल चूक हो सो पंडित लोग क्षमा करें उनसे यह मेरी बार २ प्रार्थना है॥१॥

पंडित सीताराम शास्त्री,
संस्कृताध्यापकः, कालविन् ताालुकदार्सस्कूल, लखनऊ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमरःज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS